वसंती झरना
ईवान तुर्गेनेव

ईवान तुर्गनेव

वसंती झरना

दो शब्द

इवान तुर्गनेव की गणना सर्वोत्तम लेखकों में होती है। गद्य में कोमलतम कविता और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की कुशलता के कारण उन्हें देख-विदेश में पर्याप्त ख्याति मिली है। वह मानवीय भावनाओं में गहरे पैठने की क्षमता रखते हैं, उनकी शैली में अद्‌भुत ओज है, वह एक उत्कृष्ट शब्द चित्रकार हैं। उनकी कृतियां—छह उपन्यास, अनेक लघु उपन्यास तथा कथाएं, नाटक तथा कविताएं— रूसी साहित्य-भण्डार की अमूल्य निधि हैं।

उनकी कृतियों में अक्सर आत्मिक गीतिकीय तत्त्व और सामाजिक-ऐतिहासिक समस्याएं परस्पर एक ताने-बाने में बुने होते हैं। फिर भी उनकी अनेक रचनाओं में साहित्यकार का ध्यान शुद्ध मनोवैज्ञानिक एवं व्यक्तिगत नैतिक समस्याओं के हल को समर्पित है।

'वसंती झरना', जिसका लेखन 1870 के मध्य से 1871 के अंत तक चला था, दुखांत है। इसमें द्‌मीत्री सानिन और जेम्मा के प्रथम युवा पवित्र प्रेम की हत्या अंधी, अपमानकारी वासना द्वारा होती है, जिसे सानिन में संयोग से मिली एक स्त्री उत्पन्न करती है। उसका साथ मानो प्रारब्ध की तरह पूर्वनिर्धारित हो जाता है, जिसके सामने आदमी विवश होता है। स्त्री असाधारण तौर पर आकर्षक थी, लेकिन साथ ही क्रूर और अपने निर्णयों पर अटल थी। यह उपन्यास भी आपबीतियों पर आधारित है। सानिन की ही तरह तुर्गनेव को भी इटली से लौटते

[illegible] की एक कन्फेक्शनरी में सुंदर युवती मिली थी, जिसने बेहोश पड़े [illegible] भाई की सहायता का अनुरोध किया था। तुर्गनेव तब उस लड़की के प्रति अपनी आसक्ति दूर करके शीघ्र ही स्वेदश लौट आए थे। उपन्यास का दूसरा चरण भी उनकी जीवनी से संबंधित है, लेकिन एक अन्य घटना से। तुर्गनेव ने इसके बारे में खुद बताया था—"यह पूरा उपन्यास सच है। इसे मैंने खुद महसूस किया! हैं यह मेरी आप बीती है। मैडम पोलोज़ोवा प्रिंसेस त्रुबेत्स्काया की प्रतिरूप है, जिसे मैं अच्छी तरह जानता था। एक ज़माने में उसने पेरिस में अच्छा-खासा तहलका मचाया था; वहां लोग अब भी उसकी याद करते हैं। पंतालिओने उसी के यहां रहता था। घर में उसकी स्थिति एक मित्र और नौकर के बीच जैसी थी। इतालवी परिवार भी जीवन से ही लिया गया है। मैंने सिर्फ कुछ विवरणों और उनके कालक्रम को बदला है क्योंकि मैं आंख बन्द किए फोटोग्राफी नहीं कर सकता। जैसे, प्रिंसेस जन्म से बंजारिन थी; मैंने उसे जनसाधारण मूल की एक धनी महिला में परिणत कर दिया। पंतालिओने को मैंने इतालवी परिवार में बैठा दिया...."

रूस में 'वसंती झरना' के प्रकाशित होते ही उसके अनुवाद फ्रांस, अमेरिका, ब्रिटेन, इटली, डेनमार्क, पोलैण्ड आदि देशों में छपने लगे। समकालीनों में तुर्गनेव के एक मित्र प्रभावशाली फ्रांसीसी लेखक गुस्ताव फ्लोबेर के उद्‌गार विशेष उल्लेखनीय हैं; उन्होंने तुर्गनेव को पत्र में लिखा था—"मैं बताना चाहता था कि....मैंने आपका 'वसंती झरना' पढ़ लिया....मैं भाव-विह्वल हो उठा, मेरी आंखों में आंसू उमड़ आए, जैसे मैं एक तनाव में था। उसमें ऐसी बातें हैं, जो हम सब के साथ गुज़री हैं, और अफसोस ! कि हमें खुद पर शर्म दिलाती हैं। कैसे आदमी हैं आप, मित्र तुर्गनेव, कैसे आदमी हैं ! कंफेक्शनरी की अंतर्सज्जा अद्‌भुत मोहक है। और सुबह बाग में दोनों की सैर, जब वे बेंच पर बातें करते हैं ! पंतालिओने, पूडेल, एमीलियो....और पटाक्षेप—शान्त और अश्रुसिक्त ! प्रेम-कथा यदि है, तो यही है। आप जीवन के बारे में बहुत जानते हैं, मेरे मित्र, और आपको कहना आता है, जो आप जानते हैं—और यह एक विरल प्रतिभा है। मैं साहित्य का अध्यापक बनना चाहूंगा, ताकि लोगों को आपकी कृतियां समझा सकूं। लेकिन ध्यान दें—मैं समझाऊंगा नहीं ! इसकी आवश्यकता नहीं है ! मुझे लगता है कि मैं बौड़म से बौड़म आदमी को भी यह कौशल समझा लेता, जिससे आपके 'वसंती झरना' में दो नारी छवियों और उनके परिवेशों का विपर्यास-चित्रण हुआ है ! आपकी अभिनव कृति की प्रशंसा के लिए एक ही घिसा-पिटा शब्द है, मनमोहक लेकिन आप इसे सही माने में गंभीर अर्थ दे दीजिए ! यह कृति पाठक के हृदय में प्रेम जगाती है—होंठों पर मुस्कान भी आती है और रोने को भी दिल चाहता है।"

तुर्गनेव का यह लघु उपन्यास रूसी साहित्य में बहुत पहले ही श्रेष्ठता का दर्जा पा चुका है। यह तुर्गनेव की विशिष्ट शैली में है। इसमें तुर्गनेव की प्रतिभा का उत्तम पक्ष प्रतिबिंबित हुआ है, जिससे कि यह आज भी पाठकों को मंत्र-मुग्ध करता है। युवा पाठक इस कृति से तुर्गनेव का प्रथम परिचय पाता है और इन्हीं के माध्यम से वह मानवीय भावनाओं की अनुपम दुनिया का दिग्दर्शन करता हैं तुर्गनेव द्वारा वर्णित घटनाएं आज सौ वर्ष से अधिक पुरानी हैं, फिर भी वे हमें अपरिचित नहीं लगतीं, क्योंकि उनमें सच्ची मानवीय संवेदनाएं प्रतिबिंबित हुई हैं, जो अजर-अमर हैं।

—प्रकाशक

खुशी के वर्ष थे,
आह्लाद के दिन थे,
बह गए सब के सब—
झरने वसंती की तरह।
(पुराने प्रेम गीत से)

...करीब दो बजे रात वह अपने कमरे में लौटा। नौकर ने जब मोमबत्ती जला दी, उसने उसे वापस भेज दिया और अलाव के समीप वह सोफ़े पर निढाल होकर बैठ गया। उसने चेहरा दोनों हाथों से ढक लिया।

ऐसी शारीरिक एवं मानसिक थकान उसने कभी महसूस नहीं की थी। सारी शाम उसने मोहक महिलाओं और शिक्षित पुरुषों के बीच बिताई थी; कुछ स्त्रियां सुन्दर थीं, लगभग सभी पुरुष बुद्धिमान और प्रतिभावान थे—खुद वह भी बहुत प्रभावशाली ढंग से बातें करता रहा... लेकिन इन सबके बावजूद उस "taedium vitae" ने, जिसका रोना प्राचीन रोमवासी रोते थे, उस "जीवन से नफ़रत" ने ऐसी प्रबल शक्ति से उसे कभी अपनी गिरफ़्त में नहीं लिया था, उसका दम नहीं घोंटा था। यदि उसकी उम्र कुछ कम होती, तो वह टीस से, ऊबन और चिड़चिड़ेपन से रो दिया होता: एक चुनचुना देनेवाली, झुलसानेवाली कड़वाहट, नीम की सी कड़वाहट उसके मन में भरती जा रही थी। कोई चिपचिपी सी घृणित बोझिलता उसे सब ओर से घेरे आ रही थी, ठीक शरद-रात्रि की उमड़ती अंधियारी की तरह; और वह नहीं जानता था कि इस अंधकार से, इस कड़वाहट से पीछा कैसे छुड़ाया जाय। नींद से तो उसे कोई आशा ही नहीं थी: वह जानता था कि सो नहीं सकेगा।

वह सोचने लगा... धीरे-धीरे, आलस और गुस्से के साथ।

वह पूरे मानव जीवन की भाग-दौड़, उसकी निरर्थकता और अधम माया के बारे में सोच रहा था। उसकी आंख के सामने एक-एक कर उम्र की सारी अवस्थाएं गुज़रती जा रही थीं (हाल में ही उसकी उम्र का बावनवां वर्ष पूरा हुआ था)—और एक

[illegible] नहीं दे रहा था। हर जगह बस वही [illegible] उस [illegible] का धान उस कोठी में डालना, वही धूल [illegible] रहना, वही अधकचरी ईमानदारी और अधकचरी [illegible] आत्मवंचना, यानी बच्चा चाहे जो करे बस रोए नहीं, और इसी बीच बुढ़ापे का वज्रपात हो जाता है और उसके साथ साथ अन्दर से सब खोखला कर देनेवाला मृत्यु भय पनपने लगता है... और अन्त में अथाह गर्त! यदि इस तरह जीवन-लीला समाप्त हो जाए, तो भी अच्छा ही है! नहीं तो अन्त समय में भी लोहे पर लगी ज़ंग की तरह निस्सहायता, पीड़ा... उफनती लहरों से भरा हुआ जीवन सागर, जैसा कवि लोग लिखते हैं, उसकी कल्पना में साकार नहीं हो रहा था, नहीं; वह उस सागर को निर्विकार समतुल्य स्थिर और बिल्कुल अंधेरी तली तक पारदर्शक रूप में देख रहा था; वह खुद एक नन्ही सी हिचकोले खाती नौका में बैठा हुआ था—और वहां, उस अंधेरी कीचड़ भरी तली पर विशाल मछलियों की तरह भयंकर दैत्य दिख रहे हैं: दैनंदिन जीवन की मुसीबतें, रोग, पीड़ा, पागलपन, गरीबी, दृष्टिहीनता... वह देखता है: एक दैत्य अंधेरे में से निकलता है और ऊपर की ओर उठता आ रहा है, उसकी आकृति स्पष्ट होती जा रही है, घृणित रूप से स्पष्ट... पलक झपकी नहीं कि वह नौका को उलट देगा! लेकिन वह फिर धुंधला होता जा रहा है, दूर हो रहा है, तली पर उतर रहा है—और वहीं पसर जाता है, छपाके मारता हुआ... लेकिन वह निर्धारित दिन भी आएगा, जब वह नैया को उलट देगा।

उसने सिर को झटक दिया, सोफ़े से उठकर कमरे का दो एक चक्कर लगाया, फिर मेज़ के पास बैठ गया, एक-एक कर दराज़ें खोलते हुए कागज़ों को, पुराने, अधिकांशतः महिलाओं के पत्रों को उलट-पलट करने लगा। उसे खुद पता नहीं था कि वह ऐसा क्यों कर रहा है, वह कुछ ढूंढ़ नहीं रहा था—सिर्फ़ इतना ही चाहता था कि किसी काम के सहारे अपनी उधेड़बुन से मुक्ति पा जाय, जो उसे व्याकुल कर रही थी। उसने यूं ही संयोग से हाथ आए कुछ पत्र खोले (एक में बदरंग हो चले फ़ीते से लपेटा हुआ मुर्झाया फूल पड़ा हुआ था), कन्धे उचका दिए,

अलाव की तरफ़ देखकर उन्हें एक ओर फेंक दिया, शायद इस अनावश्यक कूड़े को जला देने के लिए। हड़बड़ी में एक दराज़ से दूसरी दराज़ में हाथ डाल-डाल कर टटोलते हुए अचानक विस्मय से आंखें विस्फारित करते हुए उसने धीरे से एक छोटी सी पुराने ढंग की अष्टकोणीय डिबिया निकाली। उसने धीमे से ढक्कन खोला। डिबिया में पिलछौंह कागज़ की दो तहों के बीच ग्रैनेट पत्थर की बनी एक नन्ही सी सलीब रखी थी।

कुछ क्षणों तक तो वह अकबकाया हुआ इस सलीब को देखता रहा, फिर अचानक धीरे से चीख पड़ा... उसके चेहरे पर पता नहीं कौन सा भाव–अफ़सोस या खुशी का–झलक रहा था। इस तरह के भाव मनुष्य के चेहरे पर तब उत्पन्न होते हैं, जब उसकी मुलाकात अचानक किसी दूसरे आदमी से होती है, जिसे उसने लम्बे समय से नहीं देखा हो, जिसे उसने अपार स्नेह के साथ प्यार किया हो, और जो अब अचानक उसके सामने उभर आया हो, ठीक वही, लेकिन कालांतर से बदलकर।

वह खड़ा हो गया और अलाव की ओर लौटकर पुनः सोफ़े पर बैठ गया–और चेहरे को उसने पुनः अपने हाथों से ढक लिया... "आज ही क्यों? क्यों आज ही?"–उसके मन में आया–और उसे ढेर सारी बातें स्मरण हो आईं, जो कब की बीत चुकी थीं...

उसे याद हो आया...

लेकिन पहले उसका नाम बताना उचित होगा। उसका नाम था सानिन, द्मीत्री पाव्लोविच।

उसे याद हो आया:

1

घटना सन् 1840 की गर्मियों में घटी थी। सानिन ने अभी बाईसवां वर्ष पार किया था और वह इटली से रूस लौटते समय फ़्रैंकफ़र्ट के एक होटल में ठहरा हुआ था। उसके साधन सीमित थे, पर वह व्यक्ति आत्मनिर्भर था और लगभग परिवारहीन

जीवन व्यतीत कर रहा था। दूर के एक रिश्तेदार की मृत्यु के बाद उसे विरासत में कुछेक हज़ार रूबल मिले थे। उसने इस रकम का इस्तेमाल विदेश यात्रा पर करने का निश्चय किया। इससे पहले कि वह नौकरी और नौकरशाही का बोझ उठाता, जिसके बगैर उसके लिए खुशहाल जीवन बिता पाना असम्भव था। सानिन ने अपने इरादे को बड़ी कुशलता से पूरा किया और फ़्रैंकफ़र्ट पहुंचने के बाद उसके पास कुल उतने ही रूबल बचे थे, जितने में पीटर्सबर्ग तक की यात्रा की जा सकती थी। सन् 1840 में ट्रेनों का चलन नगण्य था, यात्री बग्गियों और घोड़ागाड़ियों की नियमित सेवाओं द्वारा यात्रा करते थे। सानिन ने एक सीट Beiwagen में आरक्षित करा ली। लेकिन यात्री-बग्गी ग्यारह बजे रात ही रवाना होती थी। समय अभी काफ़ी था। सौभाग्य से मौसम भी बहुत अच्छा था। सानिन उस समय के मशहूर 'श्वेत हंस' होटल में खाना खाने के बाद नगर की सैर करने निकल पड़ा। वह दान्नेकेर* की 'आरिआदना' देखने गया, जो उसे कम पसन्द आयी, उसने गेटे निवास देखा जिसकी कृतियों में 'वेर्थर की त्रासदी' के अलावा उसने कुछ नहीं पढ़ा था और वह भी कृति का फ़्रांसीसी अनुवाद था। वह मेन नदी के तट पर टहलता रहा, ऊबता रहा, जैसा कि एक असली पर्यटक के लिए उचित भी होता है। अन्त में वह शाम छह बजे के करीब फ़्रैंकफ़र्ट की एक मामूली सी सड़क पर धूल-धूसरित थका-मांदा आ पहुंचा। यही सड़क अनेक वर्षों तक उसकी स्मृतियों में छाई रही। सड़क के चन्द घरों में से एक पर उसने 'जवान्नी रोज़ेली की इटैलियन कंफ़ेक्शनरी' का एक साइनबोर्ड देखा, जो राहगीरों को इस दुकान की सूचना दे रहा था। सानिन अन्दर पहुंचा ताकि एक गिलास लेमोनेड पिया जा सके। लेकिन अगले कमरे में एक साधारण काउण्टर के पीछे पेण्ट से पुती एक अलमारी रखी थी, जिसके तख्तों पर दवा की दुकान का अहसास दिलाती हुई सुनहरे लेबलोंवाली कुछेक बोतलें लगी हुई

* विख्यात जर्मन शिल्पकार दान्नेकेर (1758–1841) की मशहूर कलाकृति 'चीते पर सवार आरिआदना की मूर्ति'।

थीं और शीशे के कुछेक जारों में रस्क, चाकलेट और टाफ़ियां दिख रही थीं, दुकान में कोई न था। सिर्फ़ एक भूरा बिल्ला एक ऊंचे मोढ़े पर खिड़की के पास पलकें झपकाता, पंजे हिलाता, घुर्र-घुर्र कर रहा था। संध्याकालीन सूर्य की तिरछी, तीव्र किरणों से चमकती हुई लाल ऊन की एक बड़ी सी गेंद लकड़ी की नक्काशीदार औंधी टोकरी के करीब पड़ी थी। बगल के कमरे से धीमा शोरगुल सुनाई दे रहा था। सानिन ने दरवाज़े पर लगी घण्टी का बटन दबाया, थोड़ी देर प्रतीक्षा में खड़ा रहा, फिर तेज़ आवाज़ में बोला: "अरे, कोई है यहां?" उसी क्षण बगल के कमरे का दरवाज़ा खुला और सानिन अनचाहे ही भौचक रह गया।

2

करीब उन्नीस वर्ष की एक लड़की अनावृत कन्धे पर काली घुंघराली लटें बिखराए, हाथ आगे की ओर फैलाए झपटकर बाहरवाले कमरे में आई, सानिन को देखते ही उसकी ओर लपकी और उसका हाथ पकड़, अपने पीछे खींचते हुए हांफते स्वर में बोली: "जल्दी कीजिए, जल्दी। बचा लीजिए उसे!" सानिन किसी अवज्ञा भाव से नहीं, सिर्फ़ विस्मयवश तुरन्त उस लड़की के साथ न चल सका, मानो अपनी जगह पर जड़ गया हो। उसने अपने जीवन में कभी इतनी सुन्दर युवती नहीं देखी थी। लड़की ने मुड़कर उसकी ओर देखा और बोली: "आइए, आइए।" उसकी आवाज़, दृष्टि और उसके विवर्ण गालों की ओर बढ़ी कंपकंपाती मुट्ठी की गति में एक ऐसी बेचारगी थी कि वह बेझिझक उसके पीछे-पीछे खुले दरवाज़े की ओर दौड़ पड़ा।

उस कमरे में जहां वह लड़की के साथ अन्दर पहुंचा, घोड़े के बाल भरकर बनाए गए पुराने फ़ैशन के सोफ़े पर लगभग चौदह वर्ष का एक लड़का लेटा हुआ था, हूबहू लड़की की शक्ल से मिलता-जुलता, स्पष्टतः उसका भाई था। उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया था जिसमें मोम या प्राचीन संगमरमर की तरह पिलछौंह

पड़ा था। आंखें उसकी बन्द थीं, काले घने बालों का साया पथराये से माथे और निर्जीव भौंहों पर पड़ रहा था, नीलछौंह होंठों के बीच से भिंचे हुए दांत दिख रहे थे। ऐसा लग रहा था कि उसकी सांस बन्द है; उसका एक हाथ नीचे फ़र्श पर लटक रहा था, दूसरा सिर के ऊपर था। लड़का कपड़े पहने था, कोट के बटन बन्द थे। बंधी टाई के कारण गर्दन कसी हुई थी।

लड़की दहाड़े मारती हुई उसकी ओर दौड़ी।

"वह मर गया, हाय, मर गया!" वह चीख पड़ी, "बस थोड़ी देर पहले यहीं पर बैठा मुझसे बातें कर रहा था, अचानक गिरा और बेजान हो गया... हे भगवान! कोई रास्ता बताओ न! मां भी घर में नहीं है। पंतालिओने, पंतालिओने, डाक्टर कहां है?" अचानक इतालवी में वह बोली, "डाक्टर को बुलाने गए थे?"

"मैं नहीं गया था, सिनियोरा लुईज़ा को मैंने भेज दिया था," दरवाज़े के पीछे से एक कर्कश आवाज़ सुनाई दी और इसी समय नाटे कद का एक बूढ़ा आदमी काले बटनवाला बैंगनी फ़्रॉककोट, अधकट्टी सूती बिरजिस और नीली गर्म जुराबे पहने, ऊंची सफ़ेद नेकटाई बांधे हुए तिरछे पैरों से लंगड़ाता हुआ अन्दर आया। उसका नन्हा सा चेहरा लौहवर्णी भूरे बालों के समूचे झब्बों तले बिल्कुल दिख ही नहीं रहा था। चौतरफ़ा ऊपर उठते, फिर उलझकर गिरते बालों के इन झब्बों के कारण बूढ़े की आकृति कलगीदार मुर्गे जैसी लग रही थी, और यह सादृश्यता इसलिए और भी प्रभावशाली थी कि काले-भूरे बालों के झंखाड़ के नीचे से सिर्फ़ उसकी नुकीली नाक और गोल-गोल पीली आंखें ही दिख रही थीं।

"लुईज़ा जल्दी से वहां पहुंच जाएगी, पर मैं दौड़ नहीं सकता," फ़ीतेदार ऊंचे बूट पहने हुए बूढ़े ने अपने वातुल पैर बदलते हुए इतालवी में कहा, "लेकिन मैं पानी ले आया हूं।"

वह अपनी सूखी घट्टेदार उंगलियों से बोतल की लम्बी गर्दन को कसकर पकड़े हुए था।

"लेकिन उसके आने तक एमील तो मर जाएगा!" लड़की ने चिल्लाकर कहा और सानिन की ओर हाथ फैला दिया: "ओ

मेरे मोहतरम, ओ mein Herr! क्या उसके लिए आप कुछ नहीं कर सकते ?"

"यह आघात है, थोड़ा ख़ून निकाल देना चाहिए,"* पंतालिओने नामक वृद्ध ने कहा।

सानिन को यद्यपि चिकित्सा संबंधी मामूली ज्ञान भी नहीं था, लेकिन वह एक बात निश्चित तौर से जानता था कि चौदह वर्ष के लड़के को रक्ताघात नहीं होता।

"यह बेहोशी है, रक्ताघात नहीं," पंतालिओने को संबोधित करते हुए उसने कहा, "आपके यहां ब्रश हैं ?"

वृद्ध आदमी ने सिर उठाया:

"क्या ?"

"ब्रश लाइए, ब्रश," सानिन ने पहले जर्मन में, फिर फ़्रांसीसी में दोहराया। "ब्रश," उसने पुनः कहा और हाथ के संकेत से अपने कोट को झाड़ने का अभिनय किया।

अंत में बूढ़ा समझ गया कि वह क्या चाहता है।

"ओह, ब्रश! Spazzette! बेशक है!"

"उन्हें यहीं ले आइए! फ़िलहाल हम उसका कोट उतारेंगे और उसके जिस्म पर ब्रश रगड़ेंगे।"

"अच्छा... Benone! क्या उसके सिर को पानी से तर करना चाहिए ?"

"अभी नहीं, बाद में; पहले जल्दी से ब्रश ले आइए।"

पंतालिओने ने बोतल फ़र्श पर रख दी, तुरन्त दौड़ा और दो ब्रश उठा लाया, एक था बाल संवारने का, दूसरा कपड़े झाड़ने का। घुंघराले बालोंवाला पूडेल उसके पीछे-पीछे उत्साह से दुम हिलाते हुए अन्दर आया और उत्सुकता से कभी बूढ़े को, कभी लड़की को और कभी सानिन को देख रहा था, जैसे कि जानना चाहता हो कि आख़िर इस बेचैनी का माजरा क्या है ?

सानिन ने सोफ़े पर लेटे हुए लड़के का कोट झट से उतार

---

* पिछली सदी के अन्त तक रक्त-निकास द्वारा मरीज़ों का इलाज किया जाता था। मस्तिष्क के आघात का कारण शरीर में ख़ून का बढ़ना माना जाता था। बेहोशी, लकवा जैसी अनेक छोटी-बड़ी बीमारियों का इलाज जोंक या नश्तर लगाकर मरीज़ का ख़ून निकालकर किया जाता था।

लिया, उसकी कालर ढीली की, कमीज़ की बांहें मोड़ीं, ब्रश लेकर उसके सीने और बांहों को पूरी ताकत से रगड़ने लगा। उधर पंतालिओने ने बाल संवारनेवाला दूसरा ब्रश उठाया और उसी फुर्ती से उसके पतलून और बूटों को रगड़ना शुरू कर दिया। लड़की जल्दी से सोफ़े के पास घुटने टेककर बैठ गई और दोनों हाथों से भाई का सिर पकड़कर उसके चेहरे को एकटक देखने लगी।

ब्रश मारते समय सानिन उसे बीच-बीच में तिरछी नज़र से देख लेता था। हे भगवान! कितनी सुन्दर है यह लड़की!

3

उसकी नाक किंचित लम्बी, लेकिन ख़ूबसूरत थी। होंठों से ऊपर का हिस्सा हलका रोमिल था, लेकिन चेहरे का रंग दूधिया, तृणमणि या हाथी-दांत के रंग का था, स्निग्ध और सौम्य! लम्बे लहरदार बाल पलात्सो पित्ती* में अलोरी की यूदीफ़** की तरह थे; और विशेषकर आंखें, गहरी भूरी, पुतलियों के गिर्द श्यामल वृत्तोंवाली आंखें अनुपम और भव्य थीं–उस क्षण भी जब उनकी चमक भय और शोक से मन्द हो चली थी... सानिन अनचाहे ही उस अनोखे देश के बारे में सोचने लगा, जहां से वह लौटा था... लेकिन इटली में भी उस जैसी रूपसी उसे नहीं मिली थी। लड़की रुक-रुककर सांस ले रही थी, मानो वह हर बार इन्तज़ार कर रही हो कि उसका भाई अब सांस लेने ही वाला है।

सानिन लड़के के जिस्म पर ब्रश रगड़ता रहा; लेकिन उसकी नज़रें सिर्फ़ लड़की पर ही नहीं थीं। पंतालिओने की विचित्र आकृति बरबस उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रही थी। बूढ़ा बुरी तरह थका हुआ हांफ रहा था; ब्रश के हरेक प्रहार

* फ़्लोरेंस का एक कला संग्रहालय।

** मशहूर इतालवी चित्रकार ख़्रिस्तोफ़ानो अलोरी (1577–1621) की कलाकृति 'यूदीफ़'।

पर उछलता और ऊंची आवाज़ से कराह उठता था। और उसके लम्बे झबरीले बालों के बोझिल झब्बे पसीने से सराबोर कभी एक ओर, तो कभी दूसरी ओर उठते-गिरते थे, जैसे किसी पौधे की झंखाड़ जड़ें पानी से धोई जा रही हों!

"अजी, कम से कम उसके जूते तो उतार दीजिए," सानिन कहना चाहता था...

घटनाओं की असाधारणता से उत्तेजित पूडेल अचानक अपने पंजों पर आगे की ओर झुका और भूंकने लगा।

"Tartaglia—canaglia*!" बूढ़े ने कुत्ते को डांटा!

लेकिन इसी क्षण लड़की का चेहरा बदल गया। उसकी भौंहें उठीं, आंखें और भी बड़ी लगने लगीं और खुशी से चमक उठीं।

सानिन ने मुड़कर देखा... लड़के के गाल सुर्ख हो गए थे, पलकें कंपकंपाईं... नथुने फड़क उठे। और भिंचे दांतों के बीच से उसने एक सांस अन्दर खींची, और उसांस ली...

"एमील!.." लड़की चिल्लाई, "एमीलियो मियो!"

बड़ी-बड़ी काली आंखें धीरे से खुल गईं। वे अभी भी शून्य दृष्टि से देख रही थीं, लेकिन अब क्षीणता से मुस्करा रही थीं; वही क्षीण मुस्कान अब उसके पीले होंठों पर उतर आई थी। उसके बाद उसने अपने लटकते हुए हाथ को खिसकाया और उसे फुर्ती से अपने सीने पर रख लिया।

"एमीलियो," लड़की ने फिर कहा और उठ खड़ी हुई। उसके चेहरे का भाव इतना प्रबल, इतना गहन था कि लगा उसकी आंखों से या तो आंसुओं की धार फूट निकलेगी, या वह अभी ठहाके मारकर हंस देगी।

"एमील! क्या बात है? एमील!" दरवाज़े के पीछे से सुनाई दे रहा था और इसी क्षण साफ़-सुथरे परिधान से सज्जित सांवले चेहरेवाली रजत-केशी महिला जल्दी-जल्दी कदम चलाती कमरे में आई। एक अधेड़ उम्र का आदमी उसके पीछे-पीछे अन्दर आया, आदमी के कन्धों के पीछे से नौकरानी का सिर दिख रहा था।

---

* बदमाश!

लड़की उनकी ओर दौड़ पड़ी।

"वह बच गया, मां। वह ज़िन्दा है!" वह चिल्लाई और महिला से कसकर लिपट गई।

"लेकिन हुआ क्या था?" उसने दोबारा कहा। "मैं घर लौटते ही हेर डाक्टर और लुईज़ा को देख रही हूं..."

युवती बताने लगी कि उसे क्या हो गया था। और इस बीच डाक्टर मरीज़ के पास पहुंचा, जो अब धीरे-धीरे होश में आता हुआ मुस्करा रहा था और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि सभी को बेचैन कर देने के लिए उसे शर्म आ रही थी।

"मेरा खयाल है कि आप उसे ब्रश रगड़ रहे थे," डाक्टर ने पंतालिओने और सानिन को संबोधित करते हुए कहा। "यह आपने बहुत अच्छा किया... यह एक बेहतरीन सूझ है... खैर, देखते हैं कि अब और क्या उपचार किया जा सकता है..." उसने लड़के की नाड़ी देखी। "हूं! ज़रा ज़बान दिखाओ।"

महिला लड़के की ओर ध्यान से देखते हुए झुक गई। वह अब और ज़्यादा खुलकर मुस्कराया, उसने मां को देखा और शर्म से लाल हो गया।

सानिन ने सोचा कि अब उसकी यहां कोई ज़रूरत नहीं है। वह दुकान में लौट आया। लेकिन उसने सड़क की ओर के बाहरी दरवाज़े के हैंडिल को अभी पकड़ा भी नहीं था कि वह युवती फिर उसके सामने आ गई और उसने उसे जाने से रोका।

"तो आप जा रहे हैं," उसने स्नेहिल दृष्टि से उसके चेहरे को देखते हुए कहा। "मैं आपको रोक नहीं रही हूं, लेकिन आप आज शाम को हमारे यहां आने का वादा करें। हम यह जानना चाहते हैं कि आप कौन हैं, कहां से आए हैं। हम आपके बड़े कृतज्ञ हैं, आपने ही मेरे भाई की जान बचाई है। हम आपके प्रति आभार प्रगट करना चाहते हैं, यही मां की भी इच्छा है। आप हमारी खुशियों में ज़रूर शरीक हों..."

"लेकिन मैं आज रात बर्लिन जा रहा हूं," सानिन ने अटकते हुए कहा।

"आपके पास काफ़ी वक्त रहेगा," लड़की ने ज़ोर देकर कहा। "घण्टे भर में आइए, एक-एक कप चाकलेट साथ बैठकर

पिएंगे। वादा करते हैं न! मुझे फिर उसके पास जाना है! तो आप आएंगे?"

सानिन के सामने कोई चारा नहीं था।

"मैं आऊंगा," उसने उत्तर दिया।

सुन्दरी ने उससे हाथ मिलाया और दौड़कर ओझल हो गई। और वह अब तक सड़क पर पहुंच चुका था।

4

सानिन जब डेढ़ घण्टे बाद रोज़ेली-कंफ़ेक्शनरी लौटा, तो परिवार के सदस्य की तरह उसका स्वागत किया गया। एमीलियो उसी सोफ़े पर बैठा हुआ था, जिस पर ब्रश फेरकर उसकी मालिश की गई थी; डाक्टर ने उसके लिए कुछ दवाएं लिख दीं और हिदायत भी: "भावावेश से विशेष बचाएं," क्योंकि लड़का संवेदनशील है और हृदय रोग की संभावना है। पहले उसे बेहोशी के दौरे पड़ते थे, लेकिन ऐसा तीव्र और दीर्घकालिक दौरा पहली बार पड़ा था। फ़िलहाल डाक्टर ने बताया कि ख़तरा टल चुका है। एमील मरीज़ की तरह एक ढीला-ढाला गाउन पहने बैठा था; उसके गले पर मां ने नीले रंग का एक गर्म स्कार्फ़ लपेट दिया था; लेकिन वह खुश था, लगभग किसी जश्न के अनुकूल। घर में हर तरफ़ एक त्योहारी गमक थी। सोफ़े के सामने साफ़-सुथरे मेज़पोश से ढकी गोल मेज़ पर प्यालों के बीच खुशबूदार चाकलेट से भरी एक बड़ी सी केतली, सीरप के जग, बिस्कुट-पावरोटियां और यहां तक कि फूलों का गुलदस्ता भी रखा हुआ था। छह पतली मोमबत्तियां चांदी के दो पुराने शमादानों में जल रही थीं। सोफ़े के एक तरफ़ ऊंची पीठवाली मुलायम आरामकुर्सी अपनी नर्म बांहें फैलाए हुए थी। सानिन को उसी पर बैठाया गया। कंफ़ेक्शनरीवाले घर के सभी निवासी, जिनसे उस दिन वह परिचित हुआ था, मौजूद थे, यहां तक कि पूडेल तर्तालिया और बिल्ला भी: सभी बेहद खुश लगते थे; कुत्ता खुशी से छींक भी पड़ता था; सिर्फ़ बिल्ला ही पहले की तरह पलकें

[illegible] हुआ उसके से लेटा था। सानिन से उसका परिचय पूछा गया। वह कौन है, कहां का रहनेवाला है और उसका नाम क्या है? जब उसने बताया कि वह रूसी है, तो दोनों महिलाओं को थोड़ी हैरानी हुई और यहां तक कि बरबस "ओहो!" की आवाज़ निकल पड़ी और वे एक स्वर में बोल उठीं कि वह बहुत अच्छी जर्मन बोल लेता है, लेकिन यदि उसे फ़्रांसीसी भाषा में बातचीत करना सुविधाजनक लगे, तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं, क्योंकि वे उसे अच्छी तरह बोल और समझ सकती हैं। सानिन ने इस प्रस्ताव पर अमल किया। "सानिन! सानिन!" उन औरतों ने कभी सोचा भी न था कि रूसी नाम का इतनी आसानी से उच्चारण किया जा सकता है। उसका नाम "द्मीत्री" उन्हें बहुत पसन्द आया। बुज़ुर्ग महिला ने बताया एक बेहतरीन ओपेरा 'Demetrio e Palibio' उसने अपनी युवावस्था में सुना था, लेकिन उसे "Demetrio" से ज़्यादा "Dimitri" नाम पसन्द आया। सानिन इस तरह करीब एक घण्टे तक बातचीत करता रहा। महिलाओं ने भी अपने निजी जीवन के बारे में उसे विस्तार से सब कुछ कह सुनाया। मां, श्वेतकेशिनी महिला, बात करने में ज़्यादा सक्रिय थी। उसने ही सानिन को बताया कि उसका नाम–लेनोरा रोज़ेली है; अपने पति जवान्नी बत्तीस्ता रोज़ेली की मृत्यु के बाद वह वैधव्य जीवन बिता रही है, जो पच्चीस वर्ष पूर्व फ़्रैंकफ़र्ट में बस गया था और यहीं उसने एक कंफ़ेक्शनरी खोल ली थी। जवान्नी बत्तीस्ता इटली के विचेन्ज़ा नगर से आया था और वह एक बहुत अच्छा इनसान था, हालांकि थोड़ा तुनकमिजाज और घमण्डी, तिस पर भी रिपब्लिकन विचारों का था। इन शब्दों में मैडम रोज़ेली ने उसके चित्र की ओर संकेत किया, जो एक तैल चित्र था और सोफ़े के ऊपर टंगा हुआ था। संभव है कि चित्रकार–"खुद भी एक रिपब्लिकन हो", जैसा कि मैडम रोज़ेली ने एक गहरी सांस लेकर कहा, अच्छा साम्य प्रस्तुत न कर सका, बल्कि चित्र में जवान्नी बत्तीस्ता एक क्रूर आकृतिवाले डाकू की तरह लग रहा था–रीनोल्डो रीनाल्डीनी जैसा! खुद मैडम रोज़ेली का जन्म "प्राचीन और भव्य नगर पारमा में हुआ था, जहां एक चर्च

के गुंबद के भित्तिचित्रों को अमर चित्रकार कोर्रेजियो ने बनाया था! " लेकिन लम्बे समय तक जर्मनी में रहने के कारण वह पूरी तरह जर्मन हो गई है। क्षणिक खामोशी के बाद अफ़सोस से सिर हिलाते हुए उसने कहा कि इस बेटी और इस बेटे के सिवाय उसके जीवन में और कुछ नहीं बचा है (उसने क्रमशः उनकी ओर उंगली से संकेत करते हुए कहा); बेटी का नाम है जेम्मा और बेटे का एमीलियो; दोनों सौम्य और आज्ञाकारी बच्चे हैं, खासकर एमीलियो ("तो क्या मैं आज्ञाकारी नहीं हूं," बेटी ने तुरन्त टोकते हुए कहा; "ओह, तू तो ठहरी रिपब्लिकन, और है भी!" मां ने कहा); अब व्यवसाय उतना अच्छा नहीं है, जितना उसके पति के समय में था, जो बेकरी के काम का एक बेहतरीन जानकार था... ("Un grand' uomo!" पंतालिओने ने ज़ोर देते हुए कहा, वह कठोर दृष्टि से देख रहा था।) लेकिन उसने कोई शिकायत न की, भगवान का शुक्र है!

5

जेम्मा मां की बात सुन रही थी, साथ ही कभी हंसती थी, तो कभी उसांसें भरती थी, कभी मां का कंधा सहलाती थी, तो कभी उंगली के इशारे से धमकाने लगती थी और बीच-बीच में सानिन की ओर देख लेती थी; अन्त में वह उठी, उसने मां को बाहों में भर लिया और उसके गले पर चूम लिया, ठीक ठोड़ी के नीचे, जिससे वह खूब हंसी, यहां तक कि चिचियाने भी लगी।

सानिन से पंतालिओने का भी परिचय कराया गया। पता चला कि वह कभी ओपेरा का गायक था, मध्यम ऊंचाई की आवाज़वाला, लेकिन थियेटर का काम उसने बहुत पहले ही छोड़ दिया था और रोज़ेली परिवार में रह रहा था, जहां उसकी स्थिति पारिवारिक मित्र और नौकर के बीच की थी। जर्मनी

में लम्बे समय से रहने के बावजूद वह जर्मन भाषा ठीक से नहीं सीख पाया था। और उसमें सिर्फ़ गालियां सुना सकता था, वह भी उच्चारण को बेरहमी से तोड़-मरोड़कर। "फ़ेरोफ्लक्तो स्पीच्चेबूब्बियो"* गाली वह लगभग हर जर्मन को दे दिया करता था। इतालवी वह बखूबी बोलता था, क्योंकि सीनीगालिया में जन्मा था, जहां "lingua toscana in bocca romana!"** सुनने को मिलती थी। एमीलियो लगता था कि नेह के मज़े ले रहा था, या ऐसे आदमी की मधुर अनुभूतियों से मगन हो रहा था, जो अभी अभी खतरे से उबरा हो या स्वास्थ्य-लाभ कर रहा हो; और इसके अतिरिक्त सब ओर से यही लग रहा था कि घरवाले उसे दुलारते हैं। उसने सानिन को झिझकते हुए धन्यवाद दिया; वैसे, ज़्यादा ज़ोर उसका मीठे सीरप और पेस्ट्रियां उड़ाने में ही था। सानिन को भी उम्दा चाकलेट के बड़े-बड़े दो कप पीने पड़े, ढेर सारे बिस्कुट खाने पड़े: वह एक बिस्कुट खाता था कि जेम्मा उसकी ओर एक और बढ़ा देती थी—और इन्कार करना बिल्कुल संभव नहीं था। जल्द ही वह ऐसा महसूस करने लगा, जैसे अपने घर में बैठा हो: समय बहुत तेज़ी से भाग रहा था। उसे ढेर सारी बातें बतानी पड़ीं—पूरे रूस के बारे में, रूस की जलवायु के बारे में, रूसी समाज के बारे में, रूसी किसानों के बारे में—खासकर कज़्ज़ाकों के बारे में; फिर 1812 के युद्ध के बारे में,*** पीटर महान के बारे में, क्रेमलिन, रूसी गीतों और घड़ी-घंटों के बारे में। दोनों महिलाओं को हमारे अद्भुत और सुदूर वतन के बारे में कोई खास ज्ञान नहीं था; मिसेज़ रोज़ेली या जैसा कि अक्सर उसे पुकारते थे, फ़्राऊ लेनोरे ने तो एक प्रश्न से सानिन को बिल्कुल हक्का-बक्का ही कर दिया: पीटर्सबर्ग में जो पिछली सदी में बर्फ़ की सिल्लियों का महल बनाया गया था, वह अब है या

---

* कमबख्त धूर्त! (जर्मन: verfluchte Spitzbube), सही उच्चारण: फ़ेर्फ़्लूख्टे स्पिट्सबूबे।

** रोमन मुंह से तोस्कानी भाषा!

~~भाषा प्राप्त है)।~~

*** रूस पर नेपोलियन के आक्रमण का समय। —अनु०

नहीं? इसके बारे में उसने अपने स्वर्गीय पति की एक पुस्तक Bellezze delle arti,* में पढ़ा था। उत्तर में सानिन के मुंह से विस्मय ही निकला: "क्या सचमुच आप सोचती हैं कि रूस में कभी गर्मी का मौसम नहीं होता?" फ़्राऊ लेनोरे ने आपत्ति के साथ बताया कि अब तक वह रूस के बारे में यही सोचती थी: वहां बर्फ़ का चिरंतन जमाव होता है, सभी फ़रकोट पहनकर घूमते हैं, सभी सैनिक सेवा में होते हैं, लेकिन मेहमाननवाज़ी बहुत अच्छी करते हैं, सभी किसान बड़े आज्ञापालक होते हैं! सानिन ने उन्हें और उनकी बेटी को अधिक सही सूचनाएं देने का प्रयास किया। जब रूसी संगीत की बात चली तो वे तुरंत उससे कोई रूसी गीत गाने का अनुरोध करने लगीं, उन्होंने कमरे में रखे एक नन्हे से पियानो की ओर इशारा किया, जिसमें काले रीड़ों की जगह सफ़ेद और सफ़ेद की जगह काले रीड़ लगे हुए थे। उसने बिना कोई नानुकर किए बात मान ली और दाएं हाथ की दो और बाएं हाथ की तीन उंगलियों (अंगूठे, मध्यमा और अनामिका) से पियानो बजाते हुए दो गीत अपने महीन नासिक स्वर में—पहले 'सराफ़ान', फिर 'पथरीली गली' गा दिये। उन गीतों के स्वर और संगीत की औरतों ने प्रशंसा की, लेकिन इससे अधिक वे रूसी भाषा की कोमलता और खनक से खुश हुईं और उन गीतों का अनुवाद करने के लिए कहने लगीं। सानिन ने उनकी इच्छा तुरन्त पूरी की, लेकिन 'सराफ़ान' और खासकर 'पथरीली गली' के शब्द (sur une rue pavée une jeune fille allait à l'eau**—उसने इतना भद्दा अनुवाद किया था) उसकी श्रोताओं तक रूसी काव्य धारणा को संप्रेषित करने में असमर्थ रहे, इसलिए उसने पहले पुश्किन की कविता 'याद है मुझे वह [illegible] क्षण' का पाठ किया, फिर उसका अनुवाद भी, उसके बाद ग्लीन्का की बनाई संगीत तर्ज़ पर इसे गाया; उन्हें गाने में उसने थोड़ा फ़रेब कर दिया था भी। अब तो औरतें गदगद हो गईं। फ़्राऊ लेनोरे ने तो रूसी और इतालवी भाषाओं

* 'कला का सौंदर्य'। (इतालवी)

** शब्दशः—पत्थर पटी गली पर जवान लड़की चली पानी भरने।

[illegible] के स्वर पर ढेर सारे सादृश्य भी ढूंढ निकाले : '[illegible]'* — 'ओ, वियेनी'**, 'सम्नोय'***, 'सि आम नोय'**** आदि। यहां तक कि नाम—पुश्किन (वह पुसेकीन कहती थी) और ग्लीन्का—भी उसे आत्मीय से लगे। अब सानिन ने भी औरतों से कुछ गाने को कहा, उन्होंने भी कोई नाज-नखरे नहीं किए। फ़्राऊ लेनोरे पियानो के पास बैठ गई और जेम्मा के साथ मिलकर उसने कुछेक गीत सुनाए। मां का गला कभी बहुत मधुर हुआ करता था। बेटी का गला कुछ क्षीण, लेकिन मोहक था।

6

लेकिन सानिन जेम्मा के गीत पर नहीं, उसके समग्र रूप पर मोहित था। वह बगल में थोड़ा पीछे की ओर बैठा हुआ मन में सोच रहा था कि कोई ताड़वृक्ष—यहां तक कि उस ज़माने के फ़ैशनेबुल रूसी कवि बेनेदीक्तोव की कविताओं में भी नहीं—उसके छरहरे देह सौष्ठव का मुकाबला नहीं कर सकता था। और जब संगीत लहरी से भाव-विभोर होकर वह अपने नेत्र ऊपर उठाती, तो उसे लगता था कि आकाश की क्या बिसात जो उनके सामने ठहर सके। यहां तक कि द्वार-कपाट पर कन्धे टिकाए बूढ़ा पंतालिओने भी, जो ठुड्डी और मुंह को अपनी चौड़ी नेकटाई में गड़ाकर गंभीरता से एक पारखी की तरह संगीत का आनंद ले रहा था—वह भी युवती के आकर्षक चेहरे को निहारता हुआ मंत्र-मुग्ध था—और लगा कि वह निश्चय ही उसे देखने का अभ्यस्त होगा! बेटी के साथ अपने सहगान समाप्त करने के बाद फ़्राऊ लेनोरे ने कहा कि यूं तो एमीलियो का गला बहुत अच्छा है, असली चांदी की तरह, लेकिन अब वह उम्र के एक ऐसे दौर

* रूसी : 'क्षण'।—अनु०

** इतालवी : 'ओ, आ जा'।—अनु०

*** रूसी : 'मेरे साथ'।—अनु०

**** इतालवी : 'ये हम हैं'।—अनु०

में पहुंच चुका है, जब आवाज़ में बदलाव आ जाता है (वास्तव में वह निरन्तर फटी-फटी मंद आवाज़ में बोलता था), और इस कारण उसे गाने से रोक दिया गया। लेकिन क्या हुआ अगर पंतालिओने ही अतिथि-सम्मान में अतीत की पुनरावृत्ति कर दे। पंतालिओने ने तुरन्त असन्तोष व्यक्त किया, भौंहें सिकोड़ लीं, और अपने बालों पर हाथ फेरकर बोला कि वह बहुत पहले ही यह सब छोड़ चुका है, जबकि अपनी जवानी के दिनों में वह एक श्रेष्ठ गायक था और सामान्यतः उस महान युग की देन है, जब सचमुच शास्त्रीय गायक होते थे, वे आज की नई पीढ़ी के गायकों की तरह किकियाते नहीं थे; और असली गायकी का स्कूल वह था, जिसकी बदौलत एक बार उसे, वारेज़े के पंतालिओने चिप्पात्तोला को मोडेना में सम्मानित किया गया था, विजेता का ताज पहनाया गया था, और समारोह के उपलक्ष्य में थियेटर में श्वेत-कपोत तक उड़ाए गए थे। प्रसंगवश एक रूसी प्रिन्स तारबूस्की–(il principe Tarbusski)–का ज़िक्र आया, जिसके साथ उसकी बड़ी पक्की दोस्ती थी, वह हमेशा उसे रूस बुलाता था, कहता था कि उसे वहां सोने के अम्बार मिलेंगे, सोने के अम्बार!.. लेकिन वह इटली छोड़ना ही नहीं चाहता था, दांते की धरती का मोह जो था–il paese del Dante! बाद में निःसन्देह स्थितियां दुर्भाग्यपूर्ण रहीं, वह पर्याप्त सतर्क नहीं रहा... यहीं बूढ़ा चुप हो गया, उसने एक या दो गहरी उसांसें भरीं, सिर झुकाया और पुनः गायकी के शास्त्रीय युग की चर्चा करने लगा, साथ ही मशहूर गायक गार्सिया की, जिसके लिए उसके हृदय में असीमित आदर रहा है।

"वह था असली आदमी!" उसने चिल्लाकर कहा। "महान गार्सिया ने–il gran Garcia–कभी इस घटिया स्तर की गायकी नहीं की, जैसा कि इस ज़माने के टुटपुंजिए गायक बेसुरा राग ज़ोर-ज़ोर से अलापते हैं। लेकिन वह सम्पूर्ण वक्ष-स्वर से गाता था, voce di petto, si!*" बूढ़े ने छोटी सी, शुष्क मुट्ठी सीने पर कमीज़ की जालीदार गोट पर दे मारी। "और

* हां, सम्पूर्ण वक्ष-स्वर से।

[illegible] भी क्या गज़ब का था! ज्वालामुखी था वह, signori miei*, ज्वालामुखी, un Vesuvio! और मैं खुशनसीब हूं, जिसे dell'illustrissimo maestro** रोस्सीनी के 'ओथेलो' ओपेरा में उसके साथ गाने और अभिनय करने का सम्मान प्राप्त हुआ। गार्सिया ने ओथेलो का अभिनय किया था, मैंने यागो का और जैसे ही उसने इन शब्दों का उच्चारण किया..."

यहीं उसने एक खास तरह की मुद्रा बना ली और रूक्ष, कंपकंपाते, किन्तु भावात्मक स्वर में गाया:

L'i...ra da ver... so da ver... so il fato lo più no... no... no... nou temerò!***

"सारा थियेटर कांप उठा, मेरे महानुभावो! लेकिन मैं भी उन्नीस नहीं था; उसके बाद मैंने भी तान छेड़ दी:

L'i... ra da ver... so da ver... so il fato Temèr più non davrò!****

"और अचानक वह बिजली की तरह कड़क उठा, चीते की तरह दहाड़ उठा:

Morrò!.. ma vendicato...*****

"या एक और नमूना, il gran Garcia 'Matrimonio segreto'****** ओपेरा का Pria che spunti...******* गीत ऐसे

---

* मेरे महानुभावो। ~~(इतालवी)~~

** विख्यात कलाकार। ~~(इतालवी)~~

*** भाग्य के कोप से... अब मुझे डर नहीं!

**** भाग्य के कोप से... अब मुझे डरना नहीं!

***** मर जाऊं!.. पर बदला लेकर।

****** 'गुप्त विवाह'।

******* संस्कार से पहले...

गाता था..." बूढ़े ने गाना शुरू किया लेकिन तुरन्त ही यकायक रुक गया, गला साफ़ करने लगा, फिर हवा में हाथ लहराता हुआ एक ओर घूम गया और बोला: "क्यों सता रहे हैं आप मुझे?" जेम्मा तुरन्त कुर्सी से उठकर खड़ी हो गई, ज़ोर-ज़ोर से तालियां बजाते हुए "बहुत खूब! बहुत खूब!" कहकर चिल्लाने लगी। वह इस बेचारे यागो के पास दौड़कर पहुंची और स्नेहसिक्त हाथों से उसकी पीठ थपथपाने लगी! सिर्फ़ एमील निर्दय हंसी बिखेर रहा था। कभी बहुत पहले लाफ़ोन्टेन कह चुका था: "Cet âge est sans pitié,"–"यह उम्र दया से अपरिचित है।"

सानिन ने बुज़ुर्ग गायक को दिलासा देने की कोशिश की और उसके साथ इतालवी में बातें करने लगा (अपनी विदेश यात्रा के दौरान उसे कुछ भाषा-ज्ञान हो गया था), वह "paese del Dante, dove il si suona"* के बारे में कहने लगा। इस वाक्य समेत "Lasciate ogni speranza"** युवा पर्यटक का इतालवी कविता के बारे में सारा ज्ञान यहीं तक सीमित था। लेकिन पंतालिओने उसकी कोशिशों से अप्रभावित रहा। वह चौड़ी नेकटाई में अपनी ठुड्डी और अन्दर गड़ाए रूक्षता से आंखें फाड़े हूबहू एक पक्षी की तरह लग रहा था, और वह भी एक गुस्सैल पक्षी, कौवा या चील जैसा। तब एमील, जिसका चेहरा पलक झपकते ही हलका सुर्ख हो गया था, जैसा कि आम तौर पर शरारती बच्चों के साथ होता है, अपनी बहन से बोला कि, यदि वह मेहमान का मन बहलाना चाहे तो बेहतर होगा कि माल्त्ज़ की कॉमेडी में से कोई एक पढ़कर सुना दे, जिन्हें वह खूब मज़े से पढ़ती है। जेम्मा खिलखिलाकर हंस पड़ी और भाई के हाथ पर हाथ मारकर चिल्लाकर बोली कि वह हमेशा "कुछ न कुछ ढूंढ़ निकालता है!" फिर भी वह तुरन्त अपने कमरे में आई और जब लौटी तो हाथ में एक छोटी सी किताब लिए थी। वह मेज पर लैम्प

---

* "दांते का देश, जहां 'हां' शब्द सुनाई देता है।"

** "आशा छोड़ दो।"

[illegible] पास बैठ गई, उसने आस-पास मुड़कर देखा, उंगली उठाई, [illegible] कह रही हो "कृपया शान्त रहें!" शुद्ध इतालवी अन्दाज़ था उसका और वह पढ़ने लगी।

7

फ़्रैंकफ़र्ट के निवासी लेखक माल्ट्ज़ उन्नीसवीं सदी के तीसरे दशक के साहित्यकार थे और स्थानीय बोली में वहां के ठेठ बाशिंदों के बारे में हल्के-फुल्के हास्य नाटक लिखा करते थे, जो गहन भले ही न हों, पर चटपटे और मनोरंजक होते थे। जेम्मा खूबसूरत लहजे में पढ़ रही थी–एक अभिनेत्री की तरह। वह कॉमेडी के हरेक पात्र की मुख्य विशेषताएं प्रदर्शित करते हुए उसके चरित्र का सूक्ष्मता से निर्वाह करती थी और उपहास उड़ाते हुए उसका अभिनय करती थी, जो उसे पीढ़ी दर पीढ़ी इतालवी खून के साथ विरासत में मिला था। जब वह किसी सनकी बुढ़िया की नकल करती या बेवकूफ़ नगरपति की, तो वह अपने खूबसूरत चेहरे और स्नेहिल स्वर का भी कतई लिहाज़ नहीं करती थी; जोकर की तरह वह बेहद मज़ाकिया चेहरे बनाती, कभी नाक सिकोड़ती, तो कभी आंखें, कभी हकलाती, तो कभी तुतलाती या किकियाती थी... हास्य रचना पढ़ते समय वह खुद नहीं हंस रही थी। लेकिन जब उसके श्रोता (पंतालिओने को छोड़कर, जो अत्यन्त असन्तुष्ट होकर उसी क्षण हट गया था, जैसे ही quel ferroflucto Todesco* का जिक्र शुरू हुआ) ज़ोरदार ठहाके के साथ उसे पढ़ने से रोक देते, वह किताब घुटनों पर रखकर और सिर पीछे झुकाकर खुद भी ठहाके मारते हुए हंसने लगती थी, उसके श्यामल घुंघराले बालों के नरम छल्ले उसकी गर्दन और झूलते हुए कन्धों पर थिरक रहे थे। ठहाका थम जाता–उसी क्षण जेम्मा किताब उठाती और पुनः उसे तन्मय भाव से गंभीर होकर पढ़ने लगती। सानिन आश्चर्य से उबर नहीं पा रहा था; खासकर वह

* किसी कमबख्त जर्मन।

हैरान था कि किस जादू से ऐसी अनिंद्य सुन्दरी का मुखड़ा कभी विदूषक जैसा दिखने लगता था, तो कभी फूहड़ भाव दर्शाता था। जेम्मा जवान लड़कियों, तथाकथित "jeunes premières"* उतनी बारीकी से रोल नहीं निभा पाती थी ; विशेषतः प्रेम दृश्यों का अभिनय तो कतई नहीं। वह इसे खुद भी अनुभव करती थी और इसी लिए ऐसे दृश्यों का अभिनय ज़रा चतुराई से हल्का मखौल उड़ाते हुए करती थी, मानो उसे इन बड़ी-बड़ी कसमों और लम्बी-चौड़ी बातों में कोई यकीन न हो, जिनसे खुद लेखक भी यथासंभव बचता रहा है।

सानिन को पता ही नहीं लगा कि कब शाम बीत गई, और उसे सिर्फ़ तभी अपनी भावी यात्रा का खयाल आया, जब घड़ी ने दस बजाए। वह उछल पड़ा, जैसे किसी ने डंक मार दिया हो।

"क्या बात है?" फ़ाऊ लेनोरे ने कहा।

"आज रात मुझे बर्लिन जाना है, सीट भी बुक हो चुकी है।"

"कितने बजे?"

"साढ़े दस बजे।"

"अब तो देर हो चुकी है," जेम्मा ने कहा। "रुक जाइए... मैं कुछ और पढ़ती हूं।"

"आपने सभी रकम चुकता कर दी है या सिर्फ़ कुछ एडवान्स ही दिया है?" फ़ाऊ लेनोरे ने पूछा।

"पूरी रकम!" सानिन ने तीव्र स्वर में हताश होकर कहा।

जेम्मा उसे आंख सिकोड़े हुए देख रही थी, वह हंस पड़ी, लेकिन मां ने उसे डांटा।

"भले आदमी के पैसे बरबाद हो गए और तुम्हें हंसी आ रही है!"

"खैर," जेम्मा ने कहा। "इससे उनका कुछ न बिगड़ेगा, हम उन्हें धैर्य बंधाने की कोशिश करेंगे। लेमोनेड पिएंगे आप?"

* नायिकाओं का।

सानिन ने एक गिलास लेमोनेड पिया, जेम्मा मालत्ज़ की कॉमेडी पढ़ने लगी, पहले की तरह हंसते-खिलखिलाते हुए।

घड़ी ने बारह बजाए। सानिन विदा लेने के लिए उठ खड़ा हुआ।

"तो अब आपको फ़्रैंकफ़र्ट में कुछ दिन और रुकना चाहिए," जेम्मा ने कहा। "आखिर ऐसी जल्दी भी क्या है? दूसरे शहर में ऐसा लुत्फ़ न मिलेगा।" यह कहकर वह चुप हो गई। "सचमुच नहीं मिलेगा," उसने फिर कहा और मुस्करा दी।

सानिन चुप रहा, लेकिन सोच रहा था—जेब खाली होने पर उसे अनचाहे ही फ़्रैंकफ़र्ट में रुकना पड़ेगा, जब तक कि बर्लिन से उसके एक मित्र का जवाब नहीं मिल जाता, जिसे कर्ज़ लेने के लिए पत्र लिखना होगा।

"हां, तो रुक ही जाइए न," फ़्राऊ लेनोरे ने कहा, "हम जेम्मा के मंगेतर हेर कार्ल क्लूबेर से आपका परिचय कराएंगे। आज वह नहीं आ सका, अपनी दुकान में बहुत व्यस्त था... शायद आपने ज़ाइल पर इस शहर में कपड़े की सबसे बड़ी दुकान देखी भी होगी। वह इस दुकान का मालिक है। लेकिन आपसे मिलकर बहुत खुश होगा।"

इस खबर से—भगवान ही जाने क्यों—सानिन थोड़ा उदास हो गया। "भाग्यशाली आदमी है!" उसके मस्तिष्क में यह विचार कौंध गया। उसने जेम्मा की ओर देखा; सानिन को लगा कि उसकी आंखों में उपहास झलक रहा है। वह विदा लेने लगा।

"कल मिलेंगे? तो आइएगा, न?" फ़्राऊ लेनोरे ने पूछा।

"कल मिलेंगे!" जेम्मा ने सवालिया लहजे में नहीं, बल्कि पक्के इरादे के स्वर में कहा, मानो इसके अतिरिक्त कोई और संभावना न हो।

"कल मिलेंगे," सानिन ने उत्तर दिया।

एमील, पंतालिओने और पूडेल तर्तालिया उसे सड़क के मोड़ तक छोड़ने आए। जेम्मा के पुस्तक-पाठ से असन्तुष्ट पंतालिओने खुद को रोक नहीं पा रहा था।

"उसे शर्म आनी चाहिए। कभी मुंह बनाती है, तो कभी किकियाती है–una carricatura!* उसे मेरोपा या क्लितेम्नेस्तरा** का अभिनय करना चाहिए–कुछ महान हो, कारुणिक हो, लेकिन वह किसी सड़ियल जर्मन की नकल करती है... यह सब तो मैं खुद कर सकता हूं–मेर्त्स, केर्त्स, स्मेर्त्स," उसने रूखी आवाज़ में आगे कहा, ठुड्डी बाहर निकालते और उंगलियां फैलाते हुए। पूडेल उस पर भौंक पड़ा और एमील ठहाके लगाकर हंस पड़ा। बूढ़ा यकायक घूमा और वापस चला गया।

सानिन 'श्वेत हंस' होटल लौटा (उसने अपना सामान लांज में रख दिया था)। वह किंचित व्यग्र था। उसके कान में जर्मन-फ्रेंच-इतालवी भाषाओं के शब्द घनघना रहे थे।

"उसकी तो मंगनी हो चुकी है!" होटल के कमरे में बिस्तर पर लेटते हुए उसने फुसफुसाकर कहा। "कितनी खूबसूरत है वह! लेकिन मैं क्यों यहां रुक गया?"

फिर भी अगले दिन उसने अपने मित्र को एक पत्र बर्लिन भेज दिया।

8

अभी वह कपड़े पहन ही नहीं पाया था कि वेटर ने इत्तला दी: कोई दो साहबान आपसे मिलना चाहते हैं। उनमें से एक एमील था और दूसरा–सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट युवक, जो चेहरे से रोबीला लग रहा था–यही हेर कार्ल क्लूबेर था, मनमोहिनी जेम्मा का मंगेतर।

उन दिनों शायद पूरे फ़्रैंकफ़र्ट में हेर क्लूबेर जैसा शिष्ट, प्रतिष्ठित, विनम्र और गंभीर व्यवसाई नहीं था। उसकी उत्कृष्ट वेशभूषा उसकी ठवन की गरिमा और सुन्दरता के अनुकूल थी, जो वस्तुतः किंचित दंभी और संयत थी, ब्रिटिश जीवन-शैली

* कार्टून।

** प्राचीन यूनानी त्रासदियों की नायिकाएं।

से प्रभावित (वह दो वर्ष ब्रिटेन में रह चुका था), लेकिन फिर भी उसके तौर-तरीके सुरुचिपूर्ण और मोहक थे! पहली नज़र में ही स्पष्ट हो गया कि यह आकर्षक, किंचित कठोर, अत्यन्त शिष्ट और साफ़-सुथरा युवक अपने बड़ों के प्रति नम्र और छोटों को आदेश देने का अभ्यस्त है, और यह कि दुकान के काउण्टर पर बैठे इस व्यक्ति का ग्राहक आदर करते हैं। हां, उसकी विलक्षण ईमानदारी में ज़रा भी सन्देह नहीं हो सकता था—सिर्फ़ उसकी कलफ़दार कड़ी कालर को ही देख लें, यकीन हो जाएगा! और उसकी आवाज़ ठीक वैसी ही थी, जैसी कि उम्मीद की जा सकती थी: विश्वसनीय और गूंजदार, पर अधिक तीव्र नहीं, ध्वनि में आंशिक कोमलता का पुट! विशेषतः ऐसे स्वर में दुकान-सहायकों को आदेश देना सुविधाजनक रहता है: "कृपया लाल मखमल का थान दिखाइए!" या "मैडम के लिए कुर्सी लाइए!"

हेर क्लूबेर ने अपना परिचय देते हुए अपने जिस्म को ऐसी खूबसूरती से झुकाया, ऐसी मोहकता से पैरों को खिसकाया और बड़े अदब के साथ एड़ी से एड़ी जोड़ दी, कि हर कोई यह सोच सकता था—"इस व्यक्ति का परिधान और हृदय अव्वल दर्जे का है।" उसका खुला हुआ दाहिना हाथ (बायां हाथ दस्ताने के अन्दर था, जिससे वह अपने ऊंचे हैट को पकड़े हुए था। हैट की चिकनी सतह शीशे की तरह चमचमा रही थी) जिसे उसने विनम्रता और पर्याप्त दृढ़ता के साथ सानिन की ओर बढ़ाया, परिष्कृत और कल्पनातीत था: उसका हर नाखून खुद में कला का एक नमूना था। उसने अत्यन्त परिष्कृत जर्मन में कहा कि विदेशी महानुभाव के प्रति वह अपना आदर और आभार प्रगट करता है, जिसकी वजह से उसके भावी रिश्तेदार, मंगेतर के भाई को ऐसी सामयिक सहायता मिल सकी। यह कहकर उसने अपना बायां हाथ, जिसमें वह हैट पकड़े था, एमील की ओर हिला दिया। और वह मुंह में उंगली डाले, मानो घबड़ाया सा खिड़की की ओर मुड़ गया। हेर क्लूबेर ने यह भी कहा कि उसे खुशी होगी, यदि वह विदेशी मेहमान के किसी काम आ सका। सानिन ने थोड़ा अटकते हुए जर्मन में उत्तर दिया कि वह भी उससे

मिलकर बेहद खुश है, यूं कि उसकी मामूली मदद कोई खास मायने नहीं रखती... और उसने अतिथियों से बैठने का आग्रह किया। हेर क्लूबेर ने आभार प्रगट किया और पलक झपकते ही कुर्सी पर बैठ गया। वह ऐसे आहिस्ते से हल्के-फुल्के अन्दाज़ में कुर्सी पर टिका हुआ था कि यह समझना मुश्किल नहीं था: यूं तो यह व्यक्ति शिष्टतावश बैठ गया है, लेकिन क्षणांत में उड़ जाएगा। और सचमुच वह उड़ चला कुछ झिझकते, दो बार पैर पटकते हुए, मानो कोई नृत्य-भाव दिखा रहा हो, उसने कहा: अफ़सोस है कि जल्द ही उसे दुकान पहुंचना है, अधिक समय वह नहीं रुक सकता – सबसे पहले काम है – लेकिन कल इतवार को उसने मैडम लेनोरे और मिस जेम्मा की राय से सोडेन में पिकनिक का प्रोग्राम बनाया है, जिसके लिए वह विदेशी महानुभाव को निमंत्रित करने आया है, और उम्मीद है कि हमारे मेहमान अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएंगे। सानिन ने इन्कार नहीं किया। हेर क्लूबेर ने बाअदब विदा ली और चल दिया। मटर के रंग की उसकी पतलून खूबसूरती से झिलमिला रही थी और उतनी ही खूबसूरती से उसके नए जूते चर्र-चर्र करते जा रहे थे।

9

एमील, जो अभी तक खिड़की के पास खड़ा था, सानिन के आग्रह के बावजूद कुर्सी पर नहीं बैठा लेकिन जैसे ही उसका भावी रिश्तेदार कमरे से निकला, वह एड़ी के सहारे घूम गया; बच्चों की तरह झिझकते और लाल होते हुए उसने सानिन से पूछा कि क्या वह थोड़ी देर और उसके यहां नहीं रुक सकता। "मेरी तबियत आज बिल्कुल अच्छी है," उसने आगे कहा, "लेकिन डाक्टर कहता है कि मुझे सिर्फ़ आराम करना चाहिए।"

"बैठो, बैठो! मुझे कोई परेशानी नहीं होगी," सानिन ने फ़ौरन से चिल्लाकर कहा, उसे तो सच्चे रूसी की तरह कुछ न करने का कोई बहाना ही चाहिए था, और वह खुश था कि उसे बहाना मिल ही गया।

एमील ने उसे धन्यवाद कहा और जल्द ही उसके साथ घुल-मिल गया और अब उसका कमरा एमील के लिए अपरिचित नहीं रह गया। उसने सानिन की हरेक चीज़ का मुआयना किया और लगभग हरेक वस्तु के बारे में पूछता गया कि उसने उसे कहां खरीदा है, और वह किस काम आती है। एमील ने शेव के दौरान सानिन को मदद दी और यह सलाह भी दी कि उसे मूंछ रखनी चाहिए। वह अपनी मां, अपनी बहन, पंतालिओने, कुत्ते तर्तालिया तक के बारे में, उनके पूरे रहन-सहन के बारे में ढेरों बातें बताता रहा। एमील की झिझक अब बिल्कुल मिट चुकी थी, यकायक वह सानिन के प्रति एक विशेष अनुराग महसूस करने लगा था, और इसलिए नहीं कि उसने एक दिन पहले ही उसकी जान बचाई थी, बल्कि इसलिए कि वह एक नेक इनसान था। जल्द ही उसने सानिन के समक्ष अपने निजी जीवन के सभी रहस्य खोल दिए। यह कि मां उसे दुकानदार बनाना चाहती है, लेकिन उसे तो सिर्फ़ यही मालूम है कि वह एक जन्मजात कलाकार है, संगीतकार और गायक है; कि थियेटर ही उसका वास्तविक व्यवसाय है; कि पंतालिओने भी उसका हौसला बढ़ाता है। लेकिन जनाब क्लूबेर मां की तरफ़दारी करते हैं, जिन पर उनका दबदबा है और यह कि उसे व्यवसाई बनाने का विचार खुद जनाब क्लूबेर के दिमाग में आया है, जिनका खयाल है कि दुनिया में दुकानदारी से बढ़कर कोई और धंधा नहीं है! बस, खूब रेशम और मखमल बेचो, ग्राहकों को ठगो, लूट लो उन्हें मनमाना "Narren—oder Russen—Preise" (पगली या रूसी कीमत) – यही है उनका आदर्श!"*

"तो क्या खयाल है? अब चलिए हमारे घर," सानिन के कपड़े बदलने और बर्लिन पत्र लिख चुकने के बाद उसने उत्साह से चिल्लाकर कहा।

"अभी इतनी जल्दी," सानिन ने उत्तर दिया।

---

* पुराने ज़माने में – अभी भी शायद ऐसा ही होता है – मई के शुरू से ढरों रूसी फ़्रैंकफ़र्ट में आने लगते थे – तब सभी दुकानों में मालों के भाव चढ़ जाते थे और इसे "Russen" या "Narren-Preise" का नाम दिया जाता था। – ले०

"तो क्या हुआ," एमील ने मीठे स्वर में कहा, "चलिए न! पहले पोस्टआफ़िस चलेंगे, फिर वहां से हमारे घर चलिएगा! जेम्मा आपको देखकर बड़ी खुश होगी! आप हमारे यहां नाश्ता करिएगा... और मेरे बारे में भी मां से कुछ कह दीजिएगा, मेरे भविष्य के बारे में उन्हें कुछ बता दीजिएगा..."

"तो चलिए, चलते हैं," सानिन ने कहा और वे घर की ओर चल पड़े।

10

जेम्मा उसे देखकर सचमुच बहुत खुश हुई, फ़ाऊ लेनोरे ने भी उसका हार्दिक स्वागत किया; स्पष्टतः कल उसके व्यवहार से वह पूरी तरह सन्तुष्ट थी। एमील सानिन के कान में फुसफुसाकर बोला: "लेकिन भूलिएगा नहीं!" और नाश्ते का आदेश देने अन्दर दौड़ गया।

"नहीं, कतई नहीं," सानिन ने तपाक से उत्तर दिया।

फ़ाऊ लेनोरे पूर्ण स्वस्थ्य नहीं थी, वह माइग्रेन से पीड़ित थी और आरामकुर्सी में लेटी थी--स्थिर, हिलने की कोई चेष्टा नहीं कर रही थीं। जेम्मा पीले रंग का एक ढीला ब्लाउज़ पहने थी, जिस पर चमड़े की काली बेल्ट कसी हुई थी; वह ख[illegible] भी थकी-थकी लग रही थी; चेहरा पीला था और काले घे[illegible] आंखों के नीचे दिख रहे थे, लेकिन उनकी दीप्ति क्षीण नहीं हुई थी, जबकि यह पीलापन उसके अनुपम, तीखे नाक-नक्श को [illegible] रहस्यमय और मोहक बना रहा था। उस दिन सानिन [illegible] मुग्ध होकर उसके हाथों के सौन्दर्य को अनिमेष निहार रहा था, जब राफ़ैल की फ़ारनारीना की तरह वह अपनी लम्बी, [illegible] उंगलियोंवाले हाथ से रेशम सी मुलायम अपनी घुंघराली [illegible] संवार रही थी।

बाहर बेहद गर्मी थी; नाश्ते के बाद सानिन वापस जाना चाहता था, लेकिन उसे यह सलाह दी गई कि ऐसी [illegible] गर्मी में बेहतर है यहीं रुक जाय—और वह सहमत हो गया। वह अपने

मेज़बानों के साथ पिछले कमरे में बैठा हुआ था, जो तपिश के बावजूद काफ़ी ठण्डा था। कमरे की खिड़कियां एक छोटे से बगीचे की ओर खुलती थीं, जहां कीकर के अनेक झाड़ उगे हुए थे। पीले फूलों से ढंकी उनकी घनी टहनियों के बीच असंख्य मधुमक्खियां, भौंरे और बर्रें ज़ोर-ज़ोर से भनभना रहे थे। यह अविराम स्वर अधखुले शटर और परदे के पीछे से गूंजता हुआ कमरे में सुनाई पड़ रहा था: स्पष्टतः बाहर काफ़ी गर्मी थी, और उस बन्द, आरामदायक कमरे की शीतलता अब और ज़्यादा सुखद लग रही थी।

सानिन कल की तरह आज भी बहुत बोलता रहा, लेकिन विषय रूस और रूसी जीवन से भिन्न था। उसने अपने किशोर मित्र को खुश करने की इच्छा से प्रेरित होकर बात शुरू की, जिसे नाश्ते के बाद ही बहीखाते का अभ्यास करने के लिए हेर क्लूबेर के पास भेज दिया गया। सानिन की बात का रुख कला और व्यापार के तुलनात्मक गुण-दोष की ओर था। उसे कोई हैरानी न हुई जब फ़ाऊ लेनोरे ने व्यापार का समर्थन किया; इसकी तो पहले से ही उसे उम्मीद थी; लेकिन जेम्मा भी उनके ही पक्ष में बोल रही थी।

"माना कि तुम एक कलाकार हो—विशेषतः एक गायक हो," उसने ज़ोर-ज़ोर से हाथ हिलाते हुए कहा, "तो स्पष्ट है कि तुम्हें हर सूरत में एक अव्वल दर्जे का कलाकार होना चाहिए। अन्यथा सब बेकार है: और क्या पता कि उस शिखर तक तुम पहुंच भी पाओ?" पंतालिओने भी बहस में शरीक था (पुराने नौकर और बुज़ुर्ग होने के नाते उसे अपने मालिकों के सामने कुर्सी पर बैठने का अधिकार था; वैसे सामान्यतः इतालवी लोग शिष्टाचार के मामले में सख़्त नहीं होते), ज़ाहिर था कि पंतालिओने कला का पूर्ण पक्षधर था। लेकिन सच कहा जाय तो उसकी दलीलें बेहद कमज़ोर थीं: वह इस बात पर विशेष ज़ोर दे रहा था कि आदमी में d'un certo estro d'inspirazione—प्रेरणा का एक उफान—होना चाहिए। लेकिन फ़ाऊ लेनोरे ने उत्तर देते हुए कहा कि वास्तव में उसमें यह "estro" था, लेकिन फिर भी...

"मेरे दुश्मन भी तो थे," पंतालिओने ने उदास स्वर में कहा।

"और तुम यह कैसे समझते हो (आम तौर से इतालवी लोग जल्दी से 'तू' पर आ जाते हैं), कि एमील के दुश्मन नहीं होंगे, जब उसमें यह estro आ भी जाएगा?"

"तो ठीक है, बना दीजिए उसे टुटपुंजिया दुकानदार," पंतालिओने ने तैश में आकर कहा, "लेकिन जवान्नी बत्तीस्ता यह नहीं करते, जबकि वे खुद एक व्यवसाई थे!"

"मेरे पति जवान्नी बत्तीस्ता बड़े समझदार व्यक्ति थे और अगर उसे जवानी में शौक था..."

लेकिन बूढ़े ने फ़्राऊ लेनोरे की एक न सुनी और ताने के साथ पुनः यह कहता हुआ चला गया: "आह, जवान्नी बत्तीस्ता!"

जेम्मा ने तेज़ स्वर में कहा कि यदि एमील में वाकई देशभक्ति है और वह चाहता है कि उसकी सारी शक्ति इटली को आज़ाद कराने में इस्तेमाल हो, तो निश्चय ही इस महान और पवित्र कार्य के लिए अपने भविष्य को कुर्बान किया जा सकता है लेकिन ड्रामा-थियेटर के लिए नहीं। यह सुनते ही फ़्राऊ लेनोरे घबड़ा उठी और मिन्नतें करने लगी कि वह कम से कम अपने भाई को गुमराह नहीं करे और खुद ही खुश रहे कि वह ऐसी मौफ़ रिपब्लिकन है! इन शब्दों के साथ ही फ़्राऊ लेनोरे कराहते हुए अपने सिर की ओर संकेत करने लगी, जो दर्द से "फटा जा रहा" था। (फ़्राऊ लेनोरे ने मेहमान की उपस्थिति का खयाल करते हुए फ़्रांसीसी में अपनी बेटी से कहती थी।)

जेम्मा मां की परिचर्या में तत्काल जुट गई, पहले उनके माथे को उसने यूडीकोलन से तर किया, फिर उसे धीरे-धीरे फूंक मारकर राहत देने लगी, मां के गालों को आहिस्ते से चूमा, सिर के पीछे तकिया लगाया, बातचीत करने से उसे रोका और पुनः ...ना लिया। तब उसने सानिन की ओर मुड़कर देखा और कुछ ...से, कुछ गंभीरता से कहने लगी – कितनी अच्छी है उसकी ..., कितनी सुन्दर थी वह! "मैं भी क्या कह गई थी! पर

वह तो अब भी सुन्दर है—अति सुन्दर। जरा देखिए तो कितनी प्यारी हैं मेरी मा की आंखें!"

जेम्मा ने झपटकर जेब से सफ़ेद रूमाल निकाला और उसे मां के चेहरे पर ढंक दिया, और तब उसको आहिस्ते-आहिस्ते ऊपर से नीचे की ओर खींचते हुए फ़ाऊ लेनोरे के मस्तक, भौंहों और आंखों का आवरण हटा दिया; कुछ देर ठहरने के बाद मां से बोली कि अब वह अपनी आंखें खोल दें। जेम्मा सराहते हुए चिल्ला पड़ी, जैसे उन्हें आज पहली बार देख रही हो (फ़ाऊ लेनोरे की आंखें सचमुच बड़ी सुन्दर थीं), और मां के चेहरे पर नीचे, कम खूबसूरत भाग पर-रूमाल को झट से खिसका दिया और फिर उसे चूमने के लिए जल्दी से आगे बढ़ी। फ़ाऊ लेनोरे हंस पड़ी और मुंह धीरे से दूसरी ओर घुमाते और दिखावा करते हुए बेटी को एक ओर हटाने लगी। लेकिन वह भी मां से झूठ-मूठ झगड़ने के साथ-साथ अपना प्रेम भी दर्शाये जा रही थी—लेकिन बिल्लियों जैसी कोमल फ़्रांसीसी स्टाइल से नहीं, बल्कि इतालवी अदा के साथ, जिसमें शक्ति का अहसास भी होता है।

अन्त में फ़ाऊ लेनोरे ने कहा कि वह थक गई है... उसी क्षण जेम्मा ने उन्हें थोड़ी देर के लिए वहीं आरामकुर्सी पर सो जाने की सलाह दी, और कहा कि "रूसी महानुभाव" और मैं नन्हे चूहों की तरह शान्त रहेंगे... "comme des petites souris"। फ़ाऊ लेनोरे ने प्रत्युत्तर में मुस्करा दिया, उसने आंखें मूंद लीं और कुछेक बार उसांसें लेकर वह ऊंघने लगी। जेम्मा उसके पास ही एक कुर्सी पर डटकर बैठ गई। सिर्फ़ यदा-कदा अपने एक हाथ की उंगली होंठों की ओर लाती, दूसरा हाथ उसके तकिए पर टिका था, जिसे वह मां के सिर के नीचे लगाए थी। और तिरछी नज़र से सानिन को देख लेती थी। जब वह ज़रा भी हिल-डुल जाता था, तब वह उसे चुप रहने का संकेत करती थी। अन्त में यही हुआ कि वह स्तब्ध सा हो गया—मंत्रमुग्ध की तरह निश्चल बैठा रहा और अंतरात्मा की सारी शक्ति से चित्र का आनन्द लेने लगा, जो उसकी आंखों के सामने इस हल्के अन्धेरे कमरे में दिख रहा था: पुराने ढंग के हरे गिलासों में लगे ताज़े, बड़े-बड़े गुलाब चमकदार बिन्दुओं की भांति यत्र-तत्र जगमगा

रहे थे, यह सोयी हुई महिला, उसके नम्रता से मुड़े हुए हाथ, हिम शुभ्र तकिए पर जड़ा-सा थका-थका नेक चेहरा, फिर यह कमसिन, सजग-सतर्क और यहां तक कि नेक, समझदार, भोला-भाला और अकथनीय रूप से सुंदर प्राणी; उसकी ऐसी काली गहरी आंखें साये में थीं, लेकिन फिर भी वे चमचमा रही थीं... यह सब क्या है? सपना परीलोक? और वह यहां कैसे आया?

11

बाहरी दरवाज़े पर लगी घंटी घनघना उठी। फ़र की टोपी और लाल वास्केट पहने हुए एक किसान युवक सड़क से दुकान में आया। सुबह से यहां एक भी ग्राहक नहीं झांका था... "यही हमारी दुकानदारी है!" फ़्राऊ लेनोरे ने सुबह नाश्ते के वक्त एक उसांस भरते हुए सानिन को बताया था। वह ऊंघती रही; जेम्मा तकिए के नीचे से हाथ निकालने से डर रही थी, इसलिए सानिन से फुसफुसाकर बोली: "जाइये, ज़रा मेरी जगह आप ही सौदा दे दीजिए!" सानिन उसी समय दबे पांव दुकान में आया। युवक को चौथाई पौंड पेपरमिंट की मीठी टिकियां चाहिए थीं।

"कितना दाम उससे लिया जाय?" सानिन ने दरवाज़े से झांककर दबी ज़बान पूछा।

"छह क्राइत्सेर!" उसने भी उसी तरह फुसफुसाकर जवाब दिया।

सानिन ने चौथाई पौंड तौल दिया, कागज़ ढूंढ़ा, उसका चोंगा बनाया, उसमें टिकियां लपेटीं, लेकिन वे बिखर गईं, फिर लपेटीं, व फिर बिखर गईं, अंत में ग्राहक को सौदा दिया, पैसे लिए... युवक उसकी ओर आश्चर्य से देख रहा था, पेट पर अपनी टोपी रगड़ते हुए, उधर बगल के कमरे में जेम्मा मुंह दबाए हंसी से बेहाल हो रही थी। यह ग्राहक अभी निकला भी नहीं था, कि दूसरा आ गया, फिर तीसरा... "लगता है कि मेरी किस्मत बलन्द है!" सानिन ने सोचा। दूसरे ने एक गिलास सीरप मांगा,

गिगर ने आधा पौंड चाकलेट। सानिन उनकी मांगें पूरी करता गया. चाव के साथ चमचे खनखनाते हुए, कभी तश्तरियां खिसकाते हुए, कभी डिब्बों, तो कभी मर्तबानों में बेहिचक हाथ डालते हुए। हिसाब करने पर पता चला कि सीरप उसने सस्ता बेच दिया था और चाकलेटों के लिए दो क्राइत्सेर फालतू ले लिया था। जेम्मा मुंह दबाए हंसती जा रही थी, और सानिन को भी असाधारण रूप से मजा आ रहा था, वह मन में एक विशेष प्रफुल्लता महसूस कर रहा था। उसे लग रहा था कि वह इसी तरह सारी ज़िन्दगी दुकान में खड़ा रहता और चाकलेट, सीरप आदि बेचता रहता; और उधर प्यारी सी लड़की आंखों में मैत्री और हास्य का भाव लिए उसे दरवाज़े के पीछे से देखती जा रही थी, ग्रीष्म का सूरज खिड़कियों के सामने उगे घने पांगुर-वृक्ष की टहनियों से छन-छनकर पूरे कमरे में हरिताभ धूप-छांह बिखेर रहा था. और हृदय मीठे आलस्य, निश्चिंतता और यौवन—यौवन के प्रथम उन्मेष—की खुमारी में डूब-उतरा रहा था!

चौथे ग्राहक ने एक कप कॉफ़ी मांगी: इसके लिए पंतालिओने को पुकारना पड़ा (एमील अभी तक क्लूबेर महाशय की दुकान से लौटा नहीं था)। सानिन फिर जेम्मा के पास बैठ गया। फ़्राऊ लेनोरे ऊंघती रही, जिससे उनकी बेटी का मन खुश हो रहा था।

"मेरी मां जब सोती है, तो उसका माइग्रेन दूर होने लगता है," उसने बताया।

सानिन अपनी दुकानदारी के बारे में बताने लगा—बेशक पहले की ही तरह फुसफुसाकर; गंभीरता से अलग-अलग वस्तुओं का दाम पूछता रहा; जेम्मा भी उसी गंभीरता से दाम बताती गई, साथ-साथ दोनों मन-ही-मन हंसते भी जा रहे थे, यह समझते हुए कि मानो किसी मज़ेदार कॉमेडी का कोई रोल निभा रहे हों। सड़क पर अचानक स्ट्रीट आर्गन से जर्मन संगीतकार वेबेर 'फ़्रेइशूत्स' के ओपेरा की धुन बजने लगी: "Durch die Felder, durch die Auen"...* उसकी कलपती आवाज़ स्थिर हवा में थरथराती, सीत्कारती बिलखने लगी। जेम्मा चौंक गई... "वह

* "खेतों से, घाटियों से..."

मां को जगा देगा!" सानिन तुरंत बाहर निकल गया, बाजेवाले के हाथ में कुछ क्राइत्सेर थमाकर उसे चुप करा दिया, वह चला गया। जब वह लौटा, तो जेम्मा ने धीरे से सिर हिलाकर धन्यवाद दिया और कुछ सोचते, मुस्कराते हुए खुद धीमी आवाज़ में वेबेर की एक मधुर धुन गुनगुनाने लगी, जिसमें माक्स ने प्रथम प्रेम की सभी अनबूझ पहेलियों को व्यक्त किया था। फिर उसने सानिन से पूछा कि वह 'फ़्रेइशूत्स' को जानता है या नहीं, वेबेर उसे पसंद है या नहीं, फिर उसने अपने बारे में बताया कि वह खुद इतालवी होने के बावजूद इस तरह का संगीत सबसे अधिक पसन्द है। वेबेर से चली बात कविता और रोमांटिसिज़्म पर फिसल आई, फिर गोफ़मान की चर्चा छिड़ी, जिसे उस समय सभी चाव से पढ़ते थे...

फ़्राऊ लेनोरे अभी भी ऊंघ रही थी, बीच-बीच में हल्के से खर्राटे भी ले लेती थी, और अब सूरज की किरणें अधखुले शटर से छनकर एक संकरी पट्टी के रूप में फ़र्श पर, फ़र्नीचर पर, जेम्मा के फ़्राक पर, पत्तियों और फूलों की पंखुड़ियों पर एक अविराम यात्रा किए जा रही थीं।

12

पता चला कि जेम्मा को गोफ़मान कोई खास पसन्द नहीं था, यहां तक कि वह बोर भी लगता था! उसकी कहानियों के उत्तरी कल्पना-प्रधान धुंधले तत्व उसके दक्षिणी आलोकमान स्वभाव की समझ से परे थे। "ये सब तो परीकथाएं हैं, बच्चों के लिए लिखी गई हैं!" वह बार-बार दोहरा रही थी और उसका स्वर उपेक्षा के भाव से खाली नहीं था। गोफ़मान की रचनाओं में काव्यात्मकता का अभाव भी वह महसूस कर रही थी। लेकिन उनका एक लघु उपन्यास था, जिसका नाम वह भूल गई थी, जो उसे बहुत पसन्द आया था; सच पूछा जाय, तो उस कथा का आरंभ ही अच्छा लगा था: अंत उसने पढ़ा ही नहीं था या उसे भी भूल गई थी। कहानी एक युवक की थी जो

शायद किसी कंफ़ेक्शनरी की दुकान में ही एक आश्चर्यजनक ग्रीक सुंदरी से मिला था; उसके साथ-साथ एक विचित्र और रहस्यमय बदमाश बूढ़ा हुआ करता था। युवक का पहली नज़र में ही लड़की से प्यार हो गया था; वह उसे इतनी कातर दृष्टि से देखती थी, मानो उससे मुक्ति के लिए प्रार्थना कर रही हो... वह एक पल के लिए चला जाता है, लेकिन जब दुकान में लौटता है, तो उसे न लड़की मिलती है, न बूढ़ा, वह उसे ढूंढ़ने लगता है, उसे निरन्तर उनके पदांक मिलते हैं, जिनका वह अनुसरण करता है, लेकिन उन तक वह कभी भी पहुंच नहीं पाता। सुंदरी हमेशा के लिए उससे दूर हो जाती है—वह उसकी अनुनय भरी कातर दृष्टि को भूल नहीं पाता, वह इस विचार से ही छटपटाता रहता है कि उसके जीवन की सारी खुशियां उसके हाथ से निकल चुकी हैं...

गोफ़मान ने शायद ही अपना लघु उपन्यास इस तरह समाप्त किया हो; लेकिन जेम्मा की स्मृति में वह कुछ इसी प्रकार अंकित हो गया था।

"मुझे लगता है कि," उसने बताया, "इस तरह के मिलन और विछोह की घटनाएं दुनिया में जितना हम सोचते हैं, उससे कहीं अधिक घटती हैं।"

सानिन चुप रहा... थोड़ी देर बाद वह कहने लगा... क्लूबेर के बारे में। उसने पहली बार उसकी याद दिलाई थी; इस क्षण तक उसे एक बार भी उसकी याद नहीं आई थी।

अब जेम्मा चुप हो गई और कुछ सोचती हुई निगाहें एक ओर फेरकर तर्जनी का नख कुतरने लगी। इसके बाद उसने अपने मंगेतर की तारीफ़ की, याद दिलाया कि उसने कल पिकनिक का प्रोग्राम बनाया है और फुर्ती से सानिन पर निगाहें डालकर फिर चुप हो गई।

सानिन को पता नहीं था कि अब किस बारे में बात शुरू की जाय।

एमील शोर मचाता दौड़ आया और उसने फ़ाऊ लेनोरे को जगा दिया... सानिन को उसके आने से खुशी हुई।

फ़ाऊ लेनोरे सोफ़े से उठीं। पंतालिओने आया और बोला कि

दोपहर का खाना तैयार है। परिवार का मित्र, भूतपूर्व गायक और नौकर घर के बावर्ची का काम भी अच्छा कर लेता था।

13

सानिन दोपहर के खाने के बाद भी वहीं रुका रह गया। उसे लोग उसी भयानक गर्मी के बहाने रोके रहे और जब गर्मी ढली, तो बाग में कीकर की छांव में कॉफ़ी पीने का प्रस्ताव उसके सामने रखा गया। सानिन सहर्ष तैयार हो गया। वह बहुत खुश था। जीवन के एकसुरे, शांत जीवन प्रवाह में असीम आनंद छिपा होता है—और वह उसी रसास्वादन में लगा हुआ था; वर्तमान दिन से उसकी कोई खास चाह नहीं थी, कल के बारे में वह सोच नहीं रहा था, न बीते दिन की ही याद कर रहा था। जेम्मा जैसी लड़की का सामीप्य ही कितना मूल्यवान था। वह जल्द ही उससे बिछड़ जाएगा और शायद हमेशा के लिए; लेकिन जब तक जर्मन कवि उलांद की कविता की तरह एक ही डोंगी उन्हें जीवन के मंद प्रवाह में बहाए ले जा रही है, यात्री को खुश होने और आनन्द लेने के सिवा कुछ नहीं रह जाता। और सौभाग्यशाली यात्री को यहां सब कुछ प्रिय लग रहा था। फ़ाऊ लेनोरे ने उसके सामने पंतालिओने के साथ तिनपतिया की बाज़ी लगाने का प्रस्ताव रखा, उसने इस सरल से इतालवी खेल का गुर उसे सिखा दिया, उससे कुछेक क्राइत्सेर जीत भी लिए—और वह बहुत ही सन्तुष्ट था; पंतालिओने ने एमील के कहने पर पूडेल तर्तालिया के सभी करतब भी दिखाए—तर्तालिया छड़ी फांदता था, "बोलता था," यानी भौंकता था, छींकता था, थूथने से दरवाज़ा बन्द करता था, यहां तक कि अपने मालिक की घिसी-पिटी चप्पल भी उठा लाया और अन्त में वह फ़ौजी कैप सिर पर रखकर मार्शल बेर्नादोट की नकल उतारने लगा, जिसको सम्राट नेपोलियन ने गद्दारी के लिए बुरी तरह फटकारा था। नेपोलियन की नकल ज़ाहिर है कि पंतालिओने कर रहा था और बड़ी स्वाभाविक नकल कर रहा था। हाथ वक्ष पर बांध लिए, तिकोण टोपी आंखों पर खिसका

ना और तेज़ कर्कश आवाज़ में फ़ांसीसी बोलने लगा, और हे भगवान, कैसी फ़ांसीसी भाषा थी! तर्तालिया अपने मालिक के सामने दुम दबाए बैठा हुआ था और आगे की ओर झुके फ़ौजी कैप के नीचे से तिरछी नज़र से देखता जा रहा था; समय-समय पर जब नेपोलियन अपनी आवाज़ तेज़ करता था, तो बेर्नाडोट पिछले पैरों पर खड़ा हो जाता था। "Fuori, traditore!"* — अंत में नेपोलियन चीख उठा, क्रोध के आवेश में वह भूल गया था कि उसे अंत तक फ़ांसीसी चरित्र का अभिनय जारी रखना चाहिए, – और बेर्नाडोट सोफ़े के नीचे लपककर जा छिपा, लेकिन तुरन्त खुशी से भौंकता हुआ बाहर निकल आया, मानो यह जता रहा हो कि जनाब, अब खेल समाप्त हो गया। सभी दर्शक खूब हंस रहे थे, लेकिन सानिन सबसे अधिक।

जेम्मा की हंसी विशेष रूप से प्यारी, अनवरत और धीमी थी, बीच-बीच में उसके मुंह से छोटी-छोटी मजेदार चीखें भी निकल आती थीं... इस हंसी से सानिन को इतना मज़ा आ रहा था कि इन चीखों के लिए उसे चूम ही लेता!

आखिर रात हो गई। शिष्टाचार भी जानना चाहिए! सबसे कई-कई बार विदा लेकर, सबको कई-कई बार "कल मिलेंगे" कहकर (एमील को उसने स्नेह से चूमा भी था) सानिन होटल की ओर चल पड़ा, हृदय में युवती की छवि अंकित थी, जो कभी हंसती थी, तो कभी शांत और यहां तक कि उदासीन भी हो जाती थी, लेकिन सदा आकर्षक बनी रहती थी! उसकी आंखें, कभी फटी-फटी, सुनहरे दिन की तरह प्रकाशमान और खुशहाल, तो कभी अधमुंदी, रात्रि की तरह गहरी और काली, उसकी आंखों के सामने निरंतर नाच रही थीं, मानस में सभी अन्य छवियों और कल्पनाओं को एक अद्भुत मिठास से भरती जा रही थी।

क्लूबेर के बारे में, फ़्रैंकफ़र्ट में टिके रहने के कारणों के बारे

* "दूर हो, गद्दार!"

में, अर्थात् उन सभी बातों के बारे में, जो उसे एक दिन पहले परेशान कर रही थीं, उसने एक बार भी नहीं सोचा।

14

लेकिन खुद सानिन के व्यक्तित्व के बारे में यहां दो बातें कहना आवश्यक होगा।

प्रथम तो यह कि सानिन एक अत्यन्त प्रियदर्शी युवक था। उसका जिस्म लम्बा, छरहरा था, चेहरा श्वेत-गुलाबी, बाल सुनहरे और आंखें सदय, निलछौंह थीं। लेकिन विशेष था उसके चेहरे का भाव, जो सरल और प्रफुल्ल था, विश्वसनीय और निश्छल था, किन्तु पहली नज़र में हल्की मूर्खता झलकाता हुआ लगता था, जिसे देखते ही पुराने कुलीन परिवारों के बच्चों, "पापा के" बच्चों, खुशमिज़ाज छोटे साहबजादों को तुरंत ही पहचाना जा सकता था, जो हमारी अर्ध स्तेपियों के विस्तारों में जन्मे और फले-फूले थे; ठुमक चाल, तुतलाती आवाज़, बाल-सुलभ मुस्कान, जो उसे देखते ही होंठों पर थिरक उठती है... और तरोताज़गी, सेहत और भरपूर कोमलता ही कोमलता, कुल मिलाकर यही है एक अदद सानिन। दूसरी बात यह कि वह मूर्ख नहीं था, उसे एक निश्चित ज्ञान था। पर विदेश यात्रा के बावजूद वह बिल्कुल अछूता रहा: उस ज़माने के श्रेष्ठ युवक जिन बेचैन भावों से परिपूर्ण थे, उनका उसे अहसास भी नहीं था।

वक्त आया, जब हमारे साहित्य में "नए लोगों" की निरर्थक खोज के बाद उन युवकों के बारे में लिखा जाने लगा, जो हर सूरत में तरोताज़ा ही बने रहते थे... वैसे ही तरोताज़ा जैसे पीटर्सबर्ग में आयातित फ्लेंसबर्ग की सीपियां... सानिन उनसे भिन्न था। यूं उसकी तुलना एक हरे-भरे सेब के वृक्ष से की जा सकती है, जो कलम बांधकर काली मिट्टीवाले हमारे बगीचों में उगाया जाता है। या एक और बेहतर उदाहरण दें तो यूं कहें कि वह किसी पुराने "लाटसाहब" के तबेले के एक तीन वर्ष के बछेड़े

जैसा था, जिसकी अच्छी परवरिश की गई हो; टांगें मोटी, जिस्म चिकना, जिसे चन्द रोज़ पहले ही सधाया जाने लगा था... कालांतर में जो लोग सानिन से मिले, तब उसकी उम्र एकदम ढल चुकी थी, गदराये यौवन के निशान मिट चुके थे, उन्हें एक दूसरा व्यक्ति, एक दूसरा सानिन नज़र आता था।

अगले दिन सानिन अभी बिस्तर में ही था कि कमरे में धड़धड़ाता हुआ एमील आ पहुंचा, उसके बाल हेयर-क्रीम से सेट थे, कपड़े रौनकदार थे और हाथ में एक केन था। एमील ने सानिन से कहा कि हेर क्लूबेर घोड़ागाड़ी लेकर आ रहे हैं, कि मौसम आज अच्छा रहेगा, कि उनके यहां सभी तैयार हो चुके हैं, लेकिन मां नहीं जाएंगी, क्योंकि वह सिरदर्द से फिर परेशान हैं। सानिन से उसने झटपट तैयार होने के लिए कहा और उसे विश्वास दिलाया कि वह एक क्षण भी बरबाद न करे... और सचमुच हेर क्लूबेर आ पहुंचा, सानिन अभी तैयार हो रहा था। उसने दरवाज़े पर दस्तक दी, कमरे में आया, झुककर अभिवादन किया और बोला कि वह इन्तज़ार कर लेगा, ऐसी कोई जल्दी नहीं है। यह कहकर वह बैठ गया। प्रतिष्ठित व्यापारी का पहनावा भड़कीला था और बेहद खुशबू बिखेर रहा था: उसकी प्रत्येक गति से भीनी-भीनी खुशबू का झोंका आता था। वह एक बड़ी सी खुली घोड़ागाड़ी, तथाकथित लैंडो पर बैठकर आया था, जिसमें दो मज़बूत, कद्दावर घोड़े जुते हुए थे, भले ही वे देखने में सुन्दर न थे। पन्द्रह मिनट बाद सानिन, हेर क्लूबेर और एमील इस घोड़ागाड़ी में बैठकर कंफ़ेक्शनरी की ओर शान से चल पड़े। मैडम रोज़ेली ने पिकनिक में जाने से साफ़ इनकार कर दिया; जेम्मा ने मां के पास रुकने के लिए कहा, लेकिन मां ने उसे ज़बर्दस्ती भेज दिया।

"मुझे यहां किसी की ज़रूरत ही क्या है?" उसने विश्वास दिलाते हुए कहा, "मैं आराम करूंगी। मैंने तो पंतालिओने को भी भेज दिया होता, लेकिन दुकान यहां कौन संभालेगा?"

"तर्तालिया को साथ ले जायें?" एमील ने पूछा।

"हां, हां, उसे भी ले जाओ।"

तर्तालिया खुशी से कोचबाक्स पर कूदकर बैठ गया। वह जीभ से अपना थूथुन चाट रहा था; शायद इस तरह के सैर-सपाटे का अभ्यस्त था। जेम्मा पुआल का बड़ा सा हैट लगाए थी, जिस पर भूरे रंग के फ़ीते लगे हुए थे। हैट का अगला सिरा नीचे तक झुका हुआ था और लगभग पूरे चेहरे को तेज़ धूप से बचा रहा था। परछाईं की लकीर ठीक होंठों के ऊपर पड़ रही थी: वे कैबेज-रोज़ की अछूती, कोमल पंखुड़ियों की तरह सुर्ख लग रहे थे और दांत बाल-सुलभ निर्दोष चमक बिखेर रहे थे। जेम्मा पीछे की ओर सानिन के बगल में बैठी थी; क्लूबेर और एमील सामने बैठे थे। फ़ाऊ लेनोरे का श्वेत चेहरा खिड़की पर दिखाई दिया, जेम्मा ने उसकी ओर अपना रूमाल हिलाया, घोड़े दुलकी चाल से चल पड़े।

15

सोडेन फ़्रैंकफ़र्ट के पास एक छोटा सा कस्बा है, कुल आधे घण्टे का सफ़र था। वह टाउनुस पर्वतीय इलाके में एक खूबसूरत स्थल पर बसा हुआ है, वहां एक सोता है, जिसका पानी रूस में कमज़ोर वक्षवाले लोगों को फ़ायदा पहुंचाने के लिए मशहूर है। फ़्रेंकफ़र्ट के लोग वहां ज़्यादातर मनोरंजन के लिए जाते हैं, क्योंकि सोडेन में खूबसूरत उपवन और तरह-तरह के "विर्टशाफ़्ट" हैं, जहां ऊंचे-ऊंचे लिंडन और मैपल की छांह में बियर और कॉफ़ी पी जा सकती है। फ़्रैंकफ़र्ट से सोडेन तक का रास्ता माइन नदी के किनारे-किनारे चला जाता है, जहां ढेर सारे फलों के वृक्ष उगे हुए हैं। जब तक लैंडो धीरे-धीरे इस खूबसूरत सड़क पर सरकती रही, सानिन कनखियों से देखता रहा कि जेम्मा अपने मंगेतर से किस तरह पेश आ रही है: उसने पहली बार दोनों को साथ-साथ देखा था। उसका व्यवहार शांत और सरल था, लेकिन कुछ सीमित सा और गंभीर था; वह थोड़ा बड़प्पन के साथ उपदेशक की तरह लग रहा था, जिसने खुद को और अपने अधीनस्थों को छोटे-छोटे

विनम्र मनोरंजन की इजाज़त दे रखी थी। उसकी ओर से जेम्मा के लिए वैसा विशेष सौजन्य सानिन को नज़र नहीं आया, जिसे फ़ांसीसी लोग "empressement" कहते हैं। लगता था कि हेर क्लूबेर महाशय यह सोच रहे थे कि बात तो बन ही चुकी है, अब परेशानी किस बात की है। लेकिन उनका घमंड एक क्षण के लिए भी दूर नहीं हुआ था! यहां तक कि दोपहर के खाने से पूर्व सोडेन के पार वनाच्छादित पर्वतों और घाटियों में सैर के दौरान प्रकृति का रस लेते समय उसके प्रति क्लूबेर का व्यवहार उसी तरह बेरुखा रहा, जिसके पीछे कभी-कभी सामान्य आधिकारिक कठोरता-सी झलक जाती थी। मसलन, एक सोते के बारे में उसने बताया था कि मैदान में वह कुछ ज़्यादा ही सीधा बह रहा है, उसे कुछ ख़ूबसूरत से मोड़ लेने चाहिए थे; एक चिड़िया से भी वह नाराज़ था जिसका गीत उसे काफ़ी एकसुरा लगा। जेम्मा को ऊब नहीं हो रही थी, शायद वह लुत्फ़ ही उठा रही थी; लेकिन उसमें परिचित जेम्मा सानिन को नज़र नहीं आ रही थी। ऐसी बात नहीं कि उस पर उदासी छा गई हो – उसका सौन्दर्य कभी भी इतना आलोकमान नहीं था, लेकिन उसकी आत्मा शायद भीतर दब गई थी। वह छाता लगाकर और दस्तानों के बटन खोले बगैर चुपचाप शान के साथ घूम रही थी, जैसे शिक्षित लड़कियां घूमती हैं, और बोल भी कम रही थी। एमील भी कुछ दबा हुआ महसूस कर रहा था, सानिन तो और भी। उसे इस बात से काफ़ी असुविधा भी थी कि बातचीत लगातार जर्मन में हो रही थी। सिर्फ़ तर्तालिया ही एक था, जो उदास नहीं था। रास्ते में आनेवाली हर चिड़िया पर पागलों की तरह भौंकता हुआ दौड़ पड़ता था, गड्ढों, ठूंठों और गिरे पेड़ों को छलांगता चला जाता था, पानी में कूद पड़ता था और जल्दी-जल्दी चाटने लगता था, बदन को झकझोरकर कूं-कूं करने लगता था, फिर लाल जीभ कंधे तक निकाले तीर की तरह दौड़ पड़ता था! क्लूबेर महाशय पूरी टोली के दिल-बहलाव के लिए जो ज़रूरी समझते थे, सब कर रहे थे। उन्होंने उन लोगों को घने बलूत की छांह में बैठने को कहकर बगल की जेब से एक छोटी सी किताब निकाली, जिसका नाम था: *'Knallerbsen, oder Du sollst und wirst*

lachen!' ('पटाके–या तुम हंसोगे और ज़रूर हसोगे!'), और उसमें से चुन-चुनकर चुटकुले सुनाने लगा, जिनसे किताब भरी पड़ी थी। कोई बीसेक पढ़ गए, लेकिन मज़ा कम ही आया : एक सानिन ही था, जो शिष्टाचार के नाते खीसें निपोड़ देता था, और खुद जनाब क्लूबेर भी हर चुटकुले के बाद हल्की सी कामकाजू और वह भी अपने बड़प्पन की हंसी बिखेर देते थे। बारह बजे के करीब पूरी टोली सोडेन के सबसे अच्छे रेस्तरां में लौट आई।

अब खाने का वक्त आया।

क्लूबेर महाशय ने बन्द लाउन्ज में भोजन का प्रस्ताव रखा–"im Gartensalon", लेकिन उस पर जेम्मा ने अचानक विरोध कर दिया और एलान किया कि वह बाग की खुली हवा में ही खाना खाएगी। उसने बताया कि एक ही जैसे चेहरे देख-देखकर वह ऊब चुकी है और अब बदलाव चाहती है। कुछ मेज़ों पर अभी-अभी आए लोगों के समूह बैठ चुके थे।

जब तक कि जनाब क्लूबेर "अपनी मंगेतर के नखरे" के आगे हार मानकर हेड वेटर से बातें करते रहे, जेम्मा आंखें झुकाए और होंठ भींचे निश्चल खड़ी रही; वह महसूस कर रही थी कि सानिन उसे निरन्तर सवालिया नज़र से देखे जा रहा है लगता था कि इससे वह गुस्सा हो रही है। अंत में जनाब क्लूबेर लौटे और बोले कि खाना आधे घंटे में तैयार हो जाएगा, प्रस्ताव रखा गया कि खाने से थोड़ा पहले स्किटेल्स खेल लिया जाए, यह जोड़ते हुए कि इससे भूख तेज़ होगी, हे-हे-हे! स्किटेल्स वह पूरी उस्तादी के साथ खेल रहे थे; गेंद फेंकते वक्त पट्ठे का सा नायाब पोज़ देते थे, फंटूसों की तरह पेशियां उभारते थे, फंटूसों की तरह ही पैर उठाते और झकझोड़ते थे। एक तरह से जनाब क्लूबेर खिलाड़ी जैसे थे–बदन भी गठीला था! और हाथ भी उनके श्वेत और खूबसूरत थे, और वह उन्हें पोंछते थे कीमती, सुनहरे, रंग-बिरंगे हिंदुस्तानी रेशमी रूमाल से!

खाने का वक्त आ गया–और पूरी टोली मेज़ के पास बैठ गई।

जर्मन खाना क्या है, यह कौन नहीं जानता? दालचीनी के साथ आटे की गोलियोंवाला पनीला सूप, पतले चिपचिपे आलू, गिजगिजा चुकन्दर और चबाई-सी घुड़मूली, सफ़ेद चर्बी से ढंका हुआ कॉर्क की तरह शुष्क उबला हुआ मांस, कैपर और विनेगार के साथ नीली पड़ी एल मछली, जेली के साथ भुनी हुई कोई चीज़ और निश्चय ही पुडिंग से मिलती-जुलती चीज़, जिस पर खट्टी लाल चटनी डली होती है; लेकिन शराब और बियर के तो कहने ही क्या हैं! सोडेन के रेस्तरां में ठीक ऐसा ही भोजन अपने ग्राहकों को खिलाया गया। वैसे, दावत ठीक-ठाक हो गई। उसमें कोई खास चहल-पहल नहीं दिखी; वह तब भी नहीं आई, जिस वक्त हेर क्लूबेर ने टोस्ट कहा, "उसके लिए, जिसे हम प्यार करते हैं!" (was wir lieben!) सब कुछ ज़रूरत से ज़्यादा ही सभ्य और शिष्ट था। खाने के बाद कॉफ़ी आई, पनीली सी भूरी, ठीक जर्मन कॉफ़ी। जनाब क्लूबेर ने सच्चे जेंटिलमैन की तरह जेम्मा से सिगार पीने की इजाज़त मांगी... लेकिन अचानक एक अप्रत्याशित घटना घट गई, जो निश्चय ही क्लेशदायक थी और अशिष्ट भी!

बगल की एक मेज़ पर माइंट्स में तैनात सैनिक टुकड़ी के कुछ अफ़सर बैठे हुए थे। उनकी दृष्टि और फुसफुसाहट से सहज ही समझा जा सकता था कि उन पर जेम्मा की खूबसूरती का तीर चल चुका है; उनमें से एक, जो शायद फ़्रैंकफ़र्ट एक बार गया था, रह-रह उसे यूं देख रहा था, मानो उसे अच्छी तरह जानता हो: उसे शायद अच्छी तरह मालूम था कि जेम्मा कौन है। अचानक वह उठ खड़ा हुआ और हाथ में गिलास लिए हुए—सभी अफ़सर बहुत पी चुके थे और उनके सामने पूरा मेज़पोश बोतलों से पटा पड़ा था—उस मेज़ के पास चला आया, जहां जेम्मा बैठी हुई थी। यह बहुत ही युवा और बिल्कुल हल्के रंग के बालोंवाला व्यक्ति था, उसका नाक-नक्शा भी बहुत प्यारा सा था; लेकिन नशे में धुत्त होने के कारण उसका चेहरा

विकृत लग रहा था: गाल फड़क रहे थे, उत्तेजक आंखें धृष्टता छलका रही थीं। उसके दोस्तों ने पहले तो उसे टोकने की कोशिश की, फिर छोड़ दिया: जो होगा सो होगा – देखा जाएगा!

हल्के लड़खड़ाते पैरों से युवा अफ़सर जेम्मा के सामने खड़ा हो गया और जबरन चीखती आवाज़ में, जिससे लग रहा था कि वह अभी भी अपने आप से संघर्ष कर रहा है, बोलने लगा: "मैं पूरे फ़्रैंकफ़र्ट की, पूरी दुनिया की सबसे हसीन कंफ़ेक्शनरी-मलिका के नाम यह जाम पी रहा हूं (और पूरा जाम गटक गया) – और बदले में यह फूल ले लेता हूं, जिसे उसकी नाज़ुक उंगलियों ने तोड़ा है!" उसने गुलाब का फूल उठा लिया, जो जेम्मा के छुरी-कांटे के पास रखा हुआ था। जेम्मा पहले तो अचकचा गई, डर गई, बुरी तरह पीली पड़ गई... फिर भय क्रोध में परिणत हो गया, वह यकायक लाल हो गई, पूरी, बालों तक और अपमान करनेवाले को घूरती हुई उसकी आंखें यकायक काली भी पड़ गईं और दहक भी उठीं, बुझ भी गईं और प्रचंड क्रोध की आग से भभक भी उठीं। अफ़सर शायद इस दृष्टि से थोड़ा घबड़ा सा गया; वह कुछ बड़बड़ाया, झुककर अभिवादन किया और अपने साथियों के पास लौट गया। उन्होंने हंसकर हल्की तालियों से उसका स्वागत किया।

जनाब क्लूबेर अचानक कुर्सी से उठ गए, लम्बे तनकर खड़े हो गए, हैट लगाया और बहुत ज़ोर से नहीं, लेकिन गरिमा के साथ कहने लगे: "क्या बदतमीज़ी है! सरासर बेहूदगी है!" (Unerhört! Unerhörte Frechheit!) – और उसी क्षण सख़्त आवाज़ में वेटर को बुलाकर बिल तुरंत लाने के लिए कहा... यही नहीं, लैंडो तैयार करने का हुक्म दिया और यह भी कहा कि यहां भले आदमियों के आने लायक जगह नहीं है, क्योंकि यहां लोगों का अपमान किया जाता है! इन शब्दों को सुनकर जेम्मा ने, जो अपनी जगह पर स्थिर बैठी हुई थी – उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था – अपनी दृष्टि क्लूबेर महाशय पर टिका दी... और उसी दृष्टि मे उसे घूरकर देखने लगी, जिस दृष्टि से उस अफ़सर को देख रही थी। एमील गुस्से से कांप रहा था।

"उठिए, माइन फ़्रोयलिन," उसी सख्ती से जनाब क्लूबेर ने उससे कहा, "यहां रुकना आपके लिए उचित नहीं है। हम अन्दर रेस्तरां में बैठेंगे!"

जेम्मा चुपचाप उठ खड़ी हुई; उसने अपना हाथ मोड़े हुए उसकी ओर बढ़ाया, जेम्मा ने भी अपना हाथ बढ़ा दिया, और वह रेस्तरां की ओर शान से चल पड़ा, उसकी चाल और उसका लहजा उतने शानदार और अभिमानयुक्त होते जा रहे थे, जितना ही वह उस जगह से दूर होता जा रहा था, जहां वे थोड़ी देर पहले बैठे थे। बेचारा एमील उन्हीं के पीछे-पीछे घिसटता सा चला गया।

लेकिन जब तक जनाब क्लूबेर वेटर को बिल का भुगतान करते रहे, जिसे उन्होंने जुर्माने के तौर पर वोद्का के लिए एक भी क्राइत्सर नहीं दिया। सानिन तेज़ चाल से उस मेज़ के पास आया, जहां वे अफ़सरान बैठे थे, और जेम्मा को अपमानित करनेवाले की ओर मुखातिब होकर (वह इस क्षण जेम्मा का गुलाब अपने दोस्तों को सूंघने के लिए दे रहा था) फ़्रांसीसी में बिल्कुल स्पष्ट शब्दों में कहा:

"अभी जो आपने किया है, साहबे आलम, ईमानदार आदमी के लायक नहीं है, इस वर्दी की गरिमा के अनुकूल नहीं है, जिसे आप पहने हुए हैं, और मैं आपसे कहने आया हूं कि आप अव्वल दर्जे के बेहूदे हैं!"

युवा अफ़सर उछलकर खड़ा हो गया, लेकिन दूसरे अफ़सर ने, जो उम्र में कुछ बड़ा था, हाथ के इशारे से उसे रोक लिया, ज़बर्दस्ती बैठा दिया और सानिन की ओर मुड़कर फ़्रांसीसी में ही पूछ बैठा:

"क्या आप उस लड़की के रिश्तेदार, भाई या मंगेतर हैं?"

"मैं उसके लिए बिल्कुल पराया हूं," सानिन ने डांटकर कहा, "मैं रूसी हूं, लेकिन मैं इस बेहूदगी को अनदेखा नहीं कर सकता था; यह रहा मेरा विज़िटिंग कार्ड और मेरा पता: ये अफ़सर महाशय मुझे ढूंढ़ सकते हैं।"

इतना कहकर सानिन ने मेज़ पर अपना विज़िटिंग कार्ड फेंक दिया और साथ ही फुर्ती से जेम्मा का गुलाब भी उठा लिया,

जिसे एक बैठे हुए अफ़सर ने अपनी प्लेट में डाल दिया था। युवा अफ़सर कुर्सी से पुनः उठना चाहता था, लेकिन उसके साथी ने उसे फिर रोक लिया और बोला: "ड्योनगोफ़, शांत हो जाओ!" (Dönhof, sei still!) इसके बाद खुद उठ गया और फ़ौजी कैप से हाथ लगाते हुए आवाज़ और लहजे में आदर का भाव लाते हुए सानिन से बोला कि कल सुबह उनकी टुकड़ी का एक अफ़सर उसके घर बाअदब पैगाम लेकर पहुंचेगा। सानिन ने भी जवाब में झुककर अभिवादन किया और तेज़ चाल से अपने साथियों के पास लौट आया।

जनाब क्लूबेर ने यूं दिखाया कि उन्हें न तो सानिन की अनुपस्थिति का अहसास है, न अफ़सरों से उसकी बातचीत का ही; उन्होंने कोचवान को डांटा, जो घोड़े जोत रहा था, वह उसकी सुस्ती पर बहुत नाराज़ हो रहे थे। जेम्मा ने भी सानिन से कुछ नहीं कहा, उसकी ओर देखा भी नहीं: उसकी चढ़ी हुई भौंहों, उसके पीले, भिंचे हुए होंठों और निश्चलता को देखकर समझा जा सकता था कि उसका दिल दुखी है। स्पष्टतः सिर्फ़ एमील को सानिन से बात करने की इच्छा हो रही थी, वह उससे पूछना चाहता था। उसने देखा था कि कैसे सानिन अफ़सरों के पास गया, उन्हें कोई सफ़ेद सी चीज़ दी—कागज़ का टुकड़ा या कोई पुर्ज़ा... बेचारे किशोर का हृदय धड़क रहा था, उसके गाल रक्ताभ हो रहे थे, वह सानिन के गले लग जाने को तैयार था, रो पड़ने को या उसके साथ उसी क्षण इन बदमाश अफ़सरों की पिटाई करने को तैयार था! लेकिन उसने खुद को रोक लिया और इतने से ही संतोष कर गया कि अपने उदार रूसी मित्र की हर गति का गौर से अवलोकन करने लगा।

कोचवान ने आखिर घोड़ों को जोत लिया; सभी लैंडो में बैठ गए। तर्तालिया के बाद एमील भी कोचबाक्स पर बैठ गया; यहां वह स्वयं को उन्मुक्त महसूस कर रहा था, और

15-544

क्लूबेर भी, जिसे वह शान्त मन से नहीं देख पा रहा था, उसके सामने नहीं था।

रास्ते भर जनाब क्लूबेर बकबक करते रहे... और अकेले ही बड़बड़ाते रहे; कोई भी न तो विरोध कर रहा था, न उनसे सहमति प्रगट कर रहा था। वह खासकर इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि बेकार ही उसकी बात नहीं मानी गई, जब वह लाउन्ज में खाने का प्रस्ताव रख रहा था। मान लेते तो यह अपमानजनक घटना नहीं घटती। इसके बाद उसने कुछ तीखी और लिबरल बातें भी सुनाईं कि सरकार ने इन अफ़सरों को बहुत सिर चढ़ा लिया है, उनके अनुशासन का खयाल नहीं करती और समाज के असैनिक तत्त्वों का (das bürgerliche Element in der Societät!) अधिक सम्मान नहीं करती और कैसे इससे समय के साथ-साथ असंतोष फैलने लगता है, जिससे क्रान्ति भी बहुत दूर नहीं होती। इसका एक दुखद उदाहरण है (यहां उसने अफ़सोस से उसांस ली, लेकिन सख्ती के साथ ही), इसका एक दुखद उदाहरण है फ़्रांस! लेकिन यहीं उसने यह भी जोड़ दिया कि खुद वह शासन की इज़्ज़त करता है और कभी भी... कभी भी!.. क्रान्तिकारी नहीं बनेगा। लेकिन इस अनुशासनहीनता की भर्त्सना किए बिना भी वह किसी तरह नहीं रह सकता! इसके बाद उसने नैतिकता और अनैतिकता, शिष्टाचार और आत्मगरिमा की भावना पर कुछ सामान्य बातें कहीं।

इन सारी बड़ी-बड़ी बातों के दर्मियान जेम्मा को, जो भोजन से पूर्व टहलते वक्त ही क्लूबेर महाशय से पूरी तरह संतुष्ट नहीं थी (इसीलिए तो वह सानिन से कुछ दूरी बनाए हुए थी और उसकी मौजूदगी से शरमा सी रही थी। उसे अपने मंगेतर के कारण शरम आने लगी थी!) इस यात्रा के अंत में तो वह निश्चय ही दुखी थी, और यद्यपि पहले की ही तरह सानिन से बात नहीं कर रही थी, अचानक उसने एक कातर दृष्टि से उसे देखा... अपनी ओर से सानिन को उस पर अधिक दया आ रही थी, बनिस्बत

कि क्लूबेर पर गुस्सा; मन ही मन अचेतन रूप से वह इस घटना से खुश ही हो रहा था, जो उस दिन घटी थी, यद्यपि वह अगली सुबह को चुनौती का पैगाम आने की आशा कर सकता था।

आखिर यह यंत्रणादायक partie de plaisir* समाप्त हुई। कंफ़ेक्शनरी के सामने जेम्मा को उतारते वक्त सानिन ने बिना एक शब्द कहे उसके हाथ में वह गुलाब थमा दिया, जिसे उसने वापस ले लिया था। वह भभक उठी, उसने उसका हाथ तपाक से दबाया और गुलाब को तुरंत ही छिपा लिया। वह घर में नहीं आना चाहता था, यद्यपि शाम अभी शुरू ही हुई थी। जेम्मा ने खुद ही उसे आमंत्रित नहीं किया। इसके अलावा पोर्च में बाहर निकलते हुए पंतालिओने ने बताया कि फ़्राऊ लेनोरे सो रही हैं। सकुचाते हुए एमील ने सानिन से विदा ली; वह मानो उससे झेंप रहा हो: सानिन पर उसे बहुत ही आश्चर्य हो रहा था। क्लूबेर ने सानिन को उसके निवास पर पहुंचा दिया और तकल्लुफ़ के साथ उससे विदा ली। यह अत्यन्त संतुलित जर्मन इतने आत्मविश्वास के बावजूद कुछ अटपटा सा महसूस कर रहा था। सभी अटपटा सा महसूस कर रहे थे।

वैसे, सानिन के मन से यह अनुभूति–अटपटेपन की अनुभूति–जल्द ही गायब हो गई। उसकी जगह एक अनिश्चित किन्तु सुखद, यहां तक कि एक उल्लसित भावना घर करने लगी। वह कमरे में चहलकदमी करता रहा, वह कुछ भी सोचने के मूड में नहीं था, सीटी बजाते हुए कोई धुन निकालता रहा–वह स्वयं से बहुत खुश था।

17

"तो अफ़सर महोदय का सुबह दस बजे तक इन्तज़ार करना चाहिए, आएं और अपनी सफ़ाई पेश करें," यह बात अगले दिन

---

* मनोरंजक सैर।

सुबह अपने दैनिक कार्यों के दौरान सानिन सोच रहा था। "उसके बाद वह करता रहे मेरी तलाश!" लेकिन जर्मन लोग सुबह जल्दी उठ जाते हैं। घड़ी ने बमुश्किल नौ बजाए ही थे कि वेटर ने सूचना दी: सेकेंड लेफ़्टिनेंट जनाब फ़ोन रिख्टेर आपसे मिलना चाहते हैं। सानिन ने फुर्ती से अपना कोट पहना और वेटर से कहा कि वह उन्हें अन्दर भेज दे। सानिन की आशा के विपरीत आगन्तुक बेहद कम उम्र दिख रहा था, लगभग एक छोकरे जैसा। उसने अपने दाढ़ीहीन चेहरे पर गुरुता का भाव दर्शाने का प्रयास किया। लेकिन वह असफल रहा; यहां तक कि उसकी घबराहट भी छिप नहीं पा रही थी, कुर्सी पर बैठते समय भी वह अपनी तलवार की म्यान से ठोकर खाया और गिरते-गिरते बचा। थोड़ा अटकते, हकलाते हुए उसने फूहड़ फ़्रांसीसी में सानिन को बताया कि वह अपने मित्र बैरन फ़ोन ड्योनगोफ़ का संदेश लाया है; यह कि जनाब फ़ोन ज़ानिन ने कल जो अपमानजनक शब्द उन्हें कहे थे, उसके लिए माफ़ी मांगें; यदि जनाब फ़ोन ज़ानिन इन्कार करते हैं, तो बैरन फ़ोन ड्योनगोफ़ उन्हें द्वंद्वयुद्ध की चुनौती देना चाहेंगे। प्रत्युत्तर में सानिन ने बताया कि वह माफ़ी मांगने का इरादा नहीं रखता, हां, द्वंद्वयुद्ध के लिए अवश्य तैयार है। उसी क्षण हेर फ़ोन रिख्टेर ने उसी तरह अटकते हुए पूछा कि किससे, कितने बजे और किस स्थान पर मिलकर प्रारम्भिक शर्तें वगैरह तय होंगी। सानिन ने कहा कि जनाब रिख्टेर करीब दो घण्टे में आ जायें, तब तक वह, सानिन, अपने साक्षी का इंतज़ाम कर लेगा ("लेकिन तलाश किस शैतान की करूं?" सानिन सोच रहा था।) फ़ोन रिख्टेर कुर्सी से उठा और जाने लगा... लेकिन दहलीज़ पर ठिठक गया, मानो किसी आत्म-दंश से पीड़ित हो, वह सानिन की ओर मुड़कर बोला कि उसका मित्र बैरन फ़ोन ड्योनगोफ़ खुद यह स्वीकार करता है कि कल की घटना के लिए... कुछ हद तक वह भी कसूरवार है... और इसलिए वह सिर्फ़ हल्की सी माफ़ी मांग लेने से संतुष्ट हो जाएगा। लेकिन प्रत्युत्तर में सानिन ने कहा कि वह किसी भी तरह की माफ़ी नहीं मांग सकता, हल्की या भारी का तो प्रश्न ही नहीं है, क्योंकि वह किसी भी सूरत में खुद को दोषी नहीं मानता।

"ऐसी स्थिति में," हेर फ़ोन रिख्टेर ने विरोध के स्वर में कहा, उसका चेहरा ज़्यादा सुर्ख हो गया था, "तो पिस्तौल के दोस्ताने फ़ायर ही करने होंगे – des coups de pistolet à l'aimable!*"

"यह तो मैं बिल्कुल ही नहीं समझ पा रहा हूं," मानिन ने कहा, "क्या हमें हवाई फ़ायर करने होंगे?"

"ओहो, नहीं, ऐसी बात नहीं है," सेकेंड लेफ्टिनेंट ने हड़बड़ाकर अटकते हुए कहा, "मैं तो सिर्फ़ यहाँ आया था, लो, घटना के शिकार दो प्रतिष्ठित लोग हैं लेकिन मैं आपके साक्षी से बात करूंगा," यहीं उसने बात खत्म कर दी और चल दिया।

वह जैसे ही कमरे से निकला, मानिन कुर्सी पर बैठ गया और फ़र्श पर नज़र गड़ाए देखता रहा। "आखिर यह सब हो क्या रहा है? ज़िन्दगी मुझे किस मोड़ पर ले आई है? मेरा सारा अतीत, मेरा सारा भविष्य यकायक निरर्थक हो गया, नष्ट हो गया। और शेष रह गया है फ़्रैंकफ़र्ट में द्वंद्वयुद्ध का लड़ना – किसी के साथ, किसी के लिए!" उसे अपनी एक पगली मौसी का खयाल आ रहा था, जो अक्सर खूब नाच-नाचकर गाया और दोहराया करती थी:

> आओ, आओ, प्यारे!
> आंखों के तारे!
> लेफ़्टिनेंट प्यारे!
> नाचूं तेरे सहारे!

और उसने एक ज़ोरदार ठहाका लगाया, और गाने लगा उस पगली मौसी की तरह: लेफ़्टिनेंट प्यारे! नाचूं तेरे सहारे!

"लेकिन अब काम का वक्त है, और समय कम है," वह ज़ोर से चिल्लाया, उछला, और देखा कि सामने पंतालिओने खड़ा है, एक पुर्ज़ा उसके हाथ में है।

"मैंने दरवाज़ा कई बार खटखटाया था, लेकिन आप बोले ही

---

* पिस्तौल के दोस्ताने फ़ायर से

नहीं। मैंने समझा शायद बाहर गए होंगे," वृद्ध व्यक्ति ने कहा और एक चिट उसकी ओर बढ़ा दी। "सिनियोरिना जेम्मा ने भेजी है।"

सानिन ने चिट को यंत्रवत ले लिया, उसे खोला और पढ़ गया। जेम्मा ने लिखा था कि अमुक मामले को लेकर वह बड़ी चिन्तित है, और सन्देश पाते ही शीघ्र आकर मिल लें।

"सिनियोरिना घबड़ा रही हैं," पंतालिओने ने कहा, स्पष्टतः उसे पत्र का मजमून मालूम था, "उन्होंने मुझे आपकी खैरियत जानने के लिए भेजा है, और यह कि मैं अपने साथ ही आपको घर ले आऊं।"

सानिन ने वृद्ध इतालवी को देखा और कुछ सोचने लगा। अचानक उसके मस्तिष्क में एक विचार कौंध गया। पहले तो वह बेहद अजीब लगा...

"लेकिन... क्यों नहीं?" उसने खुद से पूछा।

"मिसिये पंतालिओने," उसने ज़ोर से कहा।

बूढ़ा चौंक पड़ा, अपनी ठुड्डी उसने नेकटाई में धंसा ली और सानिन को अनिमेष देखने लगा।

"जानते हैं कल क्या हुआ था?" सानिन ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा।

पंतालिओने ने अपने होंठ काट लिए, जुल्फ़ें झटकार दीं और बोला:

"जानता हूं।"

(एमील ने घर पहुंचते ही सब कुछ उसे बता दिया था।)

"अच्छा, आप जानते हैं! एक अफ़सर अभी मिलने आया था। वह बेहूदा द्वंद्वयुद्ध की चुनौती दे रहा है। मैंने उसकी चुनौती स्वीकार कर ली है। मैं एक साक्षी की तलाश में हूं। क्या आप मेरे लिए साक्षी बनना पसन्द करेंगे?"

पंतालिओने सिहर उठा, भौंहें इतनी ऊंची तन गईं कि उसकी झूलती जुल्फ़ों तले बिल्कुल ढक गईं।

"तो आप ज़रूर लड़ेंगे?" वह अब इतालवी में बोलने लगा, जबकि इससे पहले फ़्रांसीसी में बातें कर रहा था।

"बेशक। नहीं, तो हमेशा के लिए मैं कलंकित हो जाऊंगा।"

"हुंह। अगर मैं साक्षी बनने से इनकार कर दूं तो आप किसी दूसरे से अनुरोध करेंगे?"

"ज़रूर..."

पंतालिओने सकपका गया।

"लेकिन इजाज़त हो तो एक बात पूछ लूं, गिनियोर डी ज़ानिनी! क्या द्वंद्वयुद्ध में उतरने से किसी की मर्यादा तो नहीं घटेगी?"

"ऐसा तो मैं नहीं समझता। खैर, कुछ भी हो–अब तो कोई रास्ता नहीं है।"

"हुंह।" पंतालिओने की ठुड्डी उसकी नेकटाई में अब कहीं ज़्यादा धंस चुकी थी। "और Ferroflucto Cluberio के बारे में आप क्या कहेंगे?" उसने कहा और चेहरा ऊपर उठा लिया।

"कुछ नहीं।"

"Ché!"* पंतालिओने ने नफ़रत से कन्धे उचकाए। "महोदय, जो भी हो मैं आपके प्रति कृतज्ञ हूं," लरज़ते स्वर में उसने कहा, "कि मेरी वर्तमान दयनीय दशा के बावजूद आप मुझे एक प्रतिष्ठित व्यक्ति मानते हैं–un galant'uomo! और अपने इस फ़ैसले से आप सचमुच एक galant'uomo सिद्ध हो चुके हैं। मैं आपके प्रस्ताव पर गौर करूंगा।"

"लेकिन इसके लिए वक्त ही कहां है, प्रिय मिसिये चि... चिप्पा..."

"टोला," पंतालिओने ने जोड़ते हुए कहा, "मुझे सोचने के लिए घण्टे भर का वक्त दीजिए। आखिर मेरे शुभचिन्तकों की बेटी का इससे ताल्लुक है... मैं सोचने के लिए बाध्य हूं! मैं घंटे... पौने घंटे में ही बता दूंगा।"

"ठीक है, इन्तज़ार करूंगा।"

"और अब... सिनियोरिना जेम्मा को आपकी ओर से क्या कह दूं?"

सानिन ने छोटा सा पत्र लिखा दिया: "मेरी अज़ीज़ मोहतरमा, फ़िक्र की कोई बात नहीं है। करीब तीन घंटे की

---

* छि।

मोहलत दें, आपके घर पहुंच रहा हूं। बाकी सभी बातें मिलने पर ही मालूम होंगी। आपकी इस हमदर्दी के लिए हृदय से आभारी हूं।" पत्र उसने पंतालिओने की ओर बढ़ा दिया।

वृद्ध व्यक्ति ने उसे संभालकर बगल की जेब में रख लिया और दरवाज़े की ओर यह दोहराते हुए बढ़ा: "एक घंटे में!" लेकिन सहसा वह उल्टे पांव लौट पड़ा, सानिन की ओर लपका और उसके हाथ को पकड़ा, उसे अपने सीने पर गर्मजोशी से दबाया और नज़र ऊंची करके उत्साह से चीख पड़ा:

"नायाब नौजवान! दरियादिल इनसान! (Nobil giovanotto! Gran cuore!)—एक कमज़ोर बूढ़े को (a un vecchioto) इजाज़त दें कि वह इन जांबाज़ हाथों को (la vostra valorosa destra!) अपने कमज़ोर दिल से लगा सके।" और इसके बाद वह उछलकर एक कदम पीछे हटा, दोनों हाथ उसने चमकाए और चल दिया।

सानिन ने उसे पीछे से देखा... उसने अखबार उठाया और पढ़ने लगा। उसकी आंखें व्यर्थ ही शब्दों को निहारती रहीं, जैसे उन शब्दों ने अर्थ ही खो दिए हों।

18

घंटे भर बाद वेटर फिर सानिन के पास आया और एक पुराना, मैला सा कार्ड थमा गया: पंतालिओने चिप्पाटोला, वारेज़े, महामहिम ड्यूक मोडेना का दरबारी गायक (cantante di camera)। वेटर के बाद खुद पंतालिओने भी आ गया। सिर से पैर तक वह सज-धजकर आया था। वह फीका पड़ा हुआ काला फ़ॉककोट और सफ़ेद मोटिया वास्केट पहने हुए था, जिस पर कांसे की चेन लटक रही थी; नारंगी कैलसिडौनी का भारी सा नग तंग काली पतलून पर झूल रहा था। दाएं हाथ में काले खरगोश की खाल का हैट लिए था और बाएं हाथ में—क्रोम लेदर के दो भारी दस्ताने; नेकटाई पहले से ज़्यादा चौड़ी थी और उसे सामान्य से कुछ ऊपर बांधे हुए था। कमीज़ की कलफ़दार गोट में पत्थर जड़ा हुआ एक पिन लगा था, जिसे "बिल्ली की आंख"

(oeil de chat) कहते हैं। दाईं तर्जनी पर एक अंगूठी थी, जिस पर दो परस्पर मिलते हुए हाथ अंकित थे; दोनों के बीच में धधकता हृदय बना था। बूढ़े के कपड़ों से कपूर और कस्तूरी के पुरानेपन की दबी हुई गंध आ रही थी; थोड़ी चिंता मिश्रित उसकी गरिमामय ठवन उदासीन से उदासीन व्यक्ति को अचंभित कर देती थी! सानिन उससे मिलने के लिए उठ खड़ा हुआ।

"मैं आपका साक्षी हूं," पंतालिओने ने फ़्रांसीसी में कहा और नर्तकों की तरह पैर रखकर धड़ पूरा आगे की ओर झुका दिया, "हुक्म फ़रमाएं, बन्दा हाज़िर है। क्या आप बेरहमी से लड़ेंगे?"

"बेरहमी से क्यों, प्रिय चिप्पाटोला महाशय! मैं कल के अपने शब्दों को किसी भी हालत में वापस नहीं लूंगा, लेकिन मैं कोई रक्त-पिपासु नहीं हूं! हां, ज़रा ठहरिए, अभी मेरे प्रतिद्वंद्वी का साक्षी आएगा। मैं बगल के कमरे में चला जाता हूं—आप उसके साथ सब तय कर लीजिएगा। विश्वास रखें, मैं आपकी इस मदद को कभी नहीं भूलूंगा और आपके प्रति हृदय से कृतज्ञ रहूंगा।"

"सम्मान सबसे बड़ी चीज़ है!" पंतालिओने ने उत्तर दिया और सानिन उसे बैठने के लिए कहे कि वह पहले ही सोफ़े पर बैठ गया। "यदि यह फ़ेरोफ़्लुक्तो स्पीचेबूबिओ," वह जर्मन के साथ इतालवी मिलाकर बोलने लगा, "यदि यह बनिया क्लुबेरियो अपना कर्त्तव्य नहीं समझता या डर गया, तो उसी के लिए अच्छा नहीं है! कौड़ी का आदमी है—और क्या! जहां तक द्वंद्वयुद्ध की शर्तों का प्रश्न है, तो मैं आपका साक्षी हूं और आपका हित मेरे लिए पवित्र है!! जब मैं पादुआ में रहता था, तो वहां श्वेत घुड़सवार सेना की एक टुकड़ी थी और अनेक अफ़सर मेरे अंतरंग मित्र थे! उनकी सारी नियम-संहिता मुझे अच्छी तरह मालूम है। फिर मैं आपके प्रिंस तार्बुस्की से भी अक्सर इन प्रश्नों पर बातें किया करता था... क्या वह साक्षी जल्द ही आनेवाला है?"

"हां, वह आने ही वाला है। लो, आ ही गया," सानिन ने सड़क की ओर देखते हुए कहा।

पंतालिओने खड़ा हो गया, उसने घड़ी देखी, बाल ठीक

किए, पतलून के नीचे से झूलते फ़ीते को हड़बड़ाकर जूते में घुसेड़ दिया। युवक लेफ़्टिनेंट अन्दर आया – वैसा ही लाल और शर्मिन्दा सा।

सानिन ने दोनों साक्षियों का परिचय कराया।

"Monsieur Richter, soulieutenant! — Monsieur Zippatola, artiste!" *

लेफ़्टिनेंट बूढ़े को देखकर थोड़ा अचंभित हो गया... क्या कहा होता उसने, यदि किसी ने उसके कान में इस क्षण बता दिया होता कि यह "कलाकार" पाक-कला में भी प्रवीण है! लेकिन पंतालिओने ने खुद को इस तरह प्रदर्शित किया कि द्वंद्वयुद्ध का प्रबंध करना उसके लिए बिल्कुल आम बात है: शायद इस परिस्थिति में उसके रंगमंचीय जीवन का अनुभव उसके काम आ रहा था और वह साक्षी की भूमिका अभिनय के रूप में बखूबी निभा रहा था। दोनों थोड़ी देर खामोश रहे।

"तो फिर? बात शुरू करें!" कैलर्सिडौनी का नग उछालते हुए पंतालिओने ने ही बात शुरू की।

"शुरू करें," लेफ़्टिनेंट ने उत्तर दिया, "लेकिन... एक प्रतिद्वंद्वी की उपस्थिति में..."

"मैं चला, महानुभाव," सानिन तुरंत बोल पड़ा और अभिवादन करके सोने के कमरे में चला गया, और दरवाज़ा उसने बंद कर लिया।

वह बिस्तर पर लेटकर जेम्मा के बारे में सोचने लगा... लेकिन साक्षियों की बातचीत बन्द दरवाज़े से सुनाई पड़ रही थी। बात फ़्रांसीसी में हो रही थी; दोनों बेरहमी से उसकी टांगें तोड़ रहे थे, अपनी-अपनी तरह से। पंतालिओने ने फिर से पादुआ की घुड़सवार टुकड़ी की और प्रिंस तार्बुस्की की याद दिलाई, लेफ़्टिनेंट ने "exghizes léchères" और "coups à l'aimable!" के बारे में। लेकिन बूढ़ा किसी exghizes के बारे में कुछ सुनने को तैयार नहीं था! सानिन घबड़ा गया कि पंतालिओने अचानक लेफ़्टिनेंट

* महाशय रिख्टेर, लेफ़्टिनेंट! – महाशय चिप्पाटोला, कलाकार!

को किसी निर्दोष लड़की के बारे में समझाने लगा कि दुनिया के सभी अफ़सर मिलकर उसकी एक कानी उंगली की बराबरी नहीं कर सकते (oune zeune damigella innoucenta, qu'a ella sola dans soun péti doa vale piu que toutt le zouffissié del mondo!) और जोश में उसने कई बार दोहराया ; "यह शर्म की बात है, शर्म की ! " (E ouna onta, ouna onta!) लेफ़्टिनेंट ने पहले कोई विरोध नहीं किया, लेकिन बाद में उसके स्वर में आवेश का आभास मिलने लगा, उसने कहा कि वह इसलिए नहीं आया है कि नीति के उपदेश सुने ...

"अजी, आपकी इस उम्र में न्याय-संगत बातें सुनना फ़ायदेमंद ही रहेगा ! " पंतालिओने ने चीखकर कहा।

नोक-झोंक दोनों साक्षियों के बीच कई बार तेज़ हुई थी ; वह एक घंटे से अधिक जारी रही, और अन्त में निम्न शर्तें तय हुईं : "बैरन फ़ोन ड्योनगोफ़ और महाशय डी सानिन को कल दस बजे सुबह हानाऊ के निकट छोटे से जंगल में बीस कदम की दूरी से गोली चलानी होगी। हरेक प्रतिद्वंद्वी साक्षियों के इशारे पर दो-दो बार फ़ायर करेगा ; पिस्तौल एक ट्रिगरवाले होंगे, नली के भीतर चूड़ियां नहीं होनी चाहिए।" महाशय फ़ोन रिख्टेर चले गए, और पंतालिओने ने शान के साथ कमरे का दरवाजा खोला, बातचीत के परिणाम का बयान किया और एक बार फिर से कह उठा : "Bravo, Russo! Bravo, giovanotto! तुम्हारी जीत होगी ! "

कुछ मिनट बाद दोनों रोज़ेली की कंफ़ेक्शनरी की ओर चल दिए। सानिन ने पहले ही पंतालिओने से वचन ले लिया कि द्वंद्वयुद्ध की बात वह बिल्कुल गोपनीय रखेगा। प्रत्युत्तर में बूढ़े ने सिर्फ़ उंगली ऊपर उठाई और आंखें सिकोड़कर लगातार दो बार बोला : "Segredezza!" (रहस्य !)। वह थोड़ा जवान लग रहा था और अधिक खुलकर बोल कर रहा था। ये सभी असाधारण घटनाएं यद्यपि दुखद थीं, उसे उस ज़माने की याद दिला रही थीं, जब वह खुद इस तरह की चुनौतियां लिया-दिया

करता था। यह बात और है कि सब सिर्फ़ रंगमंच पर होता था। मंद्र गायक, जैसा कि सभी जानते हैं, अपनी भूमिकाओं का बड़ी रंगीनी से अभिनय करते हैं।

19

एमील दौड़कर बाहर आया — वह एक घंटे से अधिक समय तक सानिन की प्रतीक्षा करता रहा — और झट से उसके कान में फुसफुसाया कि मां को कल शाम की अप्रिय घटना के बारे में कुछ भी नहीं पता है और यह कि उसकी ज़रा भी भनक उसे नहीं मिलनी चाहिए, और यह कि उसे फिर से दुकान भेजा जा रहा है!! लेकिन वह दुकान नहीं जाएगा, कहीं छिप जाएगा! यह सब कुछेक सेकंड में कह चुकने के बाद वह सानिन के कन्धे से लिपट गया और उत्साह से उसे चूमकर सड़क की ओर दौड़ चला। दुकान में उसे जेम्मा मिली, जो उससे कुछ कहना चाहती थी, पर कह नहीं पा रही थी। उसके होंठ धीरे से कांप उठे, आंखें सिकुड़ गईं और नज़रें नहीं मिला पा रही थी। उसने शीघ्र ही विश्वास दिलाते हुए उसे आश्वस्त किया कि सब काम निपट गया है...

"आज कोई मिलने आया था?" उसने पूछा।

"हां, एक आदमी आया था, हमारी बातें हो चुकी हैं और... और नतीजा भी नायाब रहा है।"

जेम्मा फिर काउण्टर पर पहुंच गई।

"उसे यकीन नहीं है!" उसने खुद से कहा... और बगलवाले कमरे की ओर बढ़ चला, जहां फ़ाऊ लेनोरे मौजूद थी।

फिलहाल उन्हें माइग्रेन की शिकायत नहीं थी, लेकिन मन ज़रूर कुछ खिन्न था। उसे देखते ही वह सौजन्यता से मुस्कराई, और यह आगाह करते हुए बोली कि आज उसके साथ बैठने में सानिन को बोरियत ही होगी, क्योंकि वह उसके मनबहलाव की स्थिति में नहीं है। वह उसके पास बैठ गया। उसने गौर किया कि फ़ाऊ लेनोरे की पलकों का रंग लाल है और वे सूज गई हैं।

"क्या बात है? फ़्राऊ लेनोरे? शायद आप रो रही थीं?"

"शांत!" उसने फुसफुसाकर कहा और सिर हिलाकर उस कमरे की ओर इशारा कर दिया, जहां उसकी बेटी मौजूद थी। "इसे... जोर से मत कहिये।"

"लेकिन आप किसलिए रो रही थीं?"

"ओह, मिसिये सानिन, यह तो मैं खुद भी नहीं जानती!"

"क्या किसी ने आपको ठेस पहुंचाई है?"

"ओह, नहीं! यकायक मेरा जी भर आया। जवानी की [illegible] को याद आ गई थी... अपनी जवानी के उन दिनों की... कितनी जल्दी यह सब बीत गया। मैं बूढ़ी हो चली, मेरे दोस्त! लेकिन इस बात से मैं किसी तरह सहमत ही नहीं हो पा रही हूं। मुझे तो लगता है कि सब कुछ ठीक वैसे ही है, जैसा कभी था... लेकिन बुढ़ापा आ रहा है, शनै: शनै: बढ़ता आ रहा है!" फ़्राऊ लेनोरे की आंखें छलछला आईं। "मैं देख रही हूं कि आप हैरान हैं... लेकिन आप भी बूढ़े हो जाएंगे, मेरे दोस्त, और तब आप महसूस करेंगे कि कितना कड़वा होता है यह सच!"

सानिन ने बदस्तूर उसे धैर्य बंधाया, उसके बच्चों का स्मरण दिलाया, जिनमें उसका ही यौवन पुनर्जन्म ले चुका है, हल्का-सा मज़ाक भी किया – कहा कि वह मन-ही-मन चाहती है कि उसकी तारीफ़ की जाय... लेकिन उसने गंभीरता से आग्रह किया कि अब उसे बख्श दिया जाय। उसे पहली बार यह यकीन हुआ कि इस तरह का दुख, बुढ़ापे के अहसास से उपजा हुआ दुख, न कम होता है और न उसे मिटाया ही जा सकता है; सिर्फ़ इन्तजार किया जा सकता है कि वह बीत जाए। फ़्राऊ लेनोरे से उसने तिनपतिया खेलने के लिए कहा और इससे बेहतर वह कुछ सोच भी नहीं सकता था। वह तुरन्त सहमत हो गई और खुश नज़र आने लगी।

सानिन दोपहर के भोजन तक उसके साथ ताश खेलता रहा, लेकिन खाने के बाद भी खेल चलता रहा। अब पंतालिओने भी खेलने लगा था। उसकी जुल्फ़ें न कभी माथे पर इतनी नीचे झूली थीं, उसकी ठुड्डी न कभी नेकटाई में इतनी नीचे धंसी थी! उसकी हरेक हरकत में एक ऐसी शांत गुरुता थी कि उसे

देखकर अनचाहे ही यह विचार जाग उठता था : आखिर कौन सा रहस्य ऐसी गहनता से छुपाए है यह आदमी ?

लेकिन – Segredezza! Segredezza!

दिन भर वह सानिन को हर तरह से पूर्ण आदर देता रहा। खाने की मेज़ पर महिलाओं को वरीयता न देकर बड़े इत्मीनान से उसे ही पहले परोसता था। ताश खेलते वक्त रियायतें कर देता था, दांव की राशि मांगने की ज़िद नहीं करता था।

बिना किसी बात के वह यह भी कह बैठा कि रूसी लोग दुनिया में सबसे ज़्यादा दरियादिल, बहादुर और पक्के इरादे के लोग हैं !

"वाह रे, धूर्त बूढ़े," सानिन ने मन में सोचा।

मैडम रोज़ेली का मूड अचानक खराब होने की खबर से वह इतना नहीं चौंका था, जितना कि इस बात से कि किस तरह मैडम रोज़ेली की बेटी का व्यवहार उसके प्रति बदल गया है। वह उसकी उपेक्षा नहीं कर रही थी... बल्कि इसके विपरीत अधिकांश समय उसके करीब ही बैठी रही, उसकी बातें सुनती रही, उसे देखती रही ; लेकिन उससे बात ही नहीं करना चाहती थी, और जैसे ही वह उसकी तरफ़ कुछ कहने के लिए मुखातिब होता था – धीरे से अपनी जगह से उठकर कुछेक मिनट के लिए कमरे से बाहर चली जाती थी। वह फिर अन्दर लौटकर किसी कोने में स्थिर बैठ जाती थी, मानो किन्हीं गहन विचारों में खोई हो, किसी उधेड़बुन में हो... अन्त में फ़ाऊ लेनोरे ने उसके इस असामान्य व्यवहार की ओर ध्यान दिया और तकरीबन दो बार पूछा कि उसे क्या हो गया है ?

"कोई खास बात नहीं है, मां," जेम्मा ने प्रत्युत्तर में कहा, "आप तो जानती हैं कि कभी-कभी मेरा मूड ही ऐसा हो जाता है।"

"यह तो तुम बिल्कुल ठीक कहती हो," मां ने उसके कथन की पुष्टि की।

इस तरह पूरा दिन बीत गया – न चहल-पहल से, न शिथिलता से, न प्रफुल्लता से, न उदासी से। यदि जेम्मा ने विपरीत व्यवहार किया, तो मुमकिन है सानिन भी हल्का-सा

दिखावा करने से खुद को न रोक पाया हो—या वह खुद अनंत विछोह के दुख में डूबा जा रहा हो... इस तरह वह एक बार भी जेम्मा से बात नहीं कर पाया, उसने शाम की कॉफ़ी पीने से पन्द्रह मिनट पहले पियानो पर एक दर्दभरी धुन बजाई।

एमील घर देर से लौटा और जल्दी से गायब हो गया, ताकि हेर क्लूबेर के बारे में पूछ-ताछ से खुद को बचा सके। सानिन के विदा लेने का वक्त आ गया।

उसने जेम्मा से विदा ली। न जाने क्यों उसे 'येवगेनी अनेगिन' का वह क्षण याद आ गया, जब लेन्स्की अपनी ओल्गा से विदा लेता है।

उसने गर्मजोशी से हाथ मिलाया और उसके चेहरे को देखने की कोशिश करने लगा। लेकिन वह धीरे से मुड़ गई और उसने अपनी उंगलियां छुड़ा लीं।

20

जब वह पोर्च पर पहुंचा, तारे छिटक आए थे। कितने अनगिनत, बेशुमार थे वे—बड़े, छोटे, पीले, लाल, नीले, सफ़ेद! वे टिमटिमा रहे थे, अपनी चमक छोड़ते हुए निरंतर आंख मिचौली खेल रहे थे। चांद आकाश में नहीं था, लेकिन उसके बिना भी हर वस्तु हलके प्रकाश में, सीमाहीन झुटपुटे में साफ़-साफ़ दिख रही थी। सानिन टहलता हुआ गली के अंत तक पहुंच गया... उसे घर लौटने की इच्छा नहीं हो रही थी; वह खुली हवा में घूमना चाहता था। वह वापस मुड़ा—और जिस घर में रोज़ेली की कंफ़ेक्शनरी थी, उसके सामने से गुज़रने ही वाला था कि अचानक सड़क की ओर एक खिड़की खुलने की आवाज़ हुई—उसके काले चौखटे में किसी नारी की आकृति दिखाई दी (कमरे में अन्धेरा था) और सुनाई दिया कि कोई उसे पुकार रहा है:

"Monsieur Dimitri!"

वह तुरंत खिड़की की ओर दौड़ पड़ा... जेम्मा!

वह खिड़की के दासे पर कोहनी रखकर आगे की ओर झुक आई।

"Monsieur Dimitri," वह सजग स्वर में कहने लगी, "आज सारा दिन मैं आपको एक चीज़ देना चाहती थी... लेकिन हिम्मत नहीं हो रही थी; अब, जब अचानक मैंने आपको देखा, तो सोचा कि शायद यही बदा है..."

जेम्मा अनचाहे ही इस शब्द पर अटक गई। वह आगे भी कुछ नहीं कह सकी: इसी क्षण एक असाधारण घटना घटी।

सहसा उस पूर्ण नीरवता में बिल्कुल स्वच्छ आकाश होने के बावजूद ऐसी तेज हवा चली कि लगा जैसे पैरों तले धरती हिलने लगी है, तारों का क्षीण प्रकाश कांप उठा है, खुद हवा चक्कर खाने लगी है। बवंडर ठण्डा नहीं, गर्म था, तकरीबन उमस लिए हुए, उसने वृक्षों, घर के छप्परों, दीवारों और सड़क पर ज़ोरदार हमला बोल दिया; क्षण भर में सानिन के सिर से हैट उड़ा दिया, जेम्मा के काले बालों को बिखेरकर लहराने लगा। सानिन का सिर खिड़की के दासे की ऊंचाई पर था; वह अनचाहे ही उसकी ओर झुक गया—जेम्मा ने दोनों हाथों से उसके कन्धों को पकड़ लिया और उससे चिपक गई। सारा शोरगुल लगभग एक मिनट तक रहा... चिड़ियों के विशाल झुंड की तरह बवंडर हड़कंप मचाकर चला गया... फिर पहले जैसी झीनी नीरवता छा गई।

सानिन ने सिर उठाया और ऊपर इतना प्यारा, सहमा, उत्तेजित चेहरा, इतनी विशाल, अत्यन्त खूबसूरत आंखें देखीं—ऐसी रूपसी को उसने देखा कि उसका हृदय स्तंभित रह गया, उसने अपने सीने पर लहराते बालों की पतली लटों से अपने होंठ सटा लिये और इतना ही कह सका:

"ओह, जेम्मा!"

"यह क्या था? बिजली थी?" जेम्मा ने दूर तक अपनी नज़र दौड़ाते हुए पूछा, उसके हाथ अभी भी सानिन के कन्धों पर टिके हुए थे।

"जेम्मा!" सानिन ने दोहराया।

उसने एक उसांस ली, पीछे कमरे की ओर देखा और जेब

में कुम्हलाए गुलाब को शीघ्रता से निकालकर सानिन की ओर उछाल दिया।

"मैं आपको यह फूल देना चाहती थी..."

उसने गुलाब को पहचान लिया, जिसे हाल ही में वह जीतकर ले आया था...

खिड़की बन्द हो गयी, और अंधेरे शीशे के पार न कुछ दिख रहा था, न झलक रहा था।

सानिन बिना हैट के घर लौटा... उसने ध्यान भी नहीं दिया कि उसे कब का खो चुका है।

21

उसे नींद सुबह तड़के ही आई। होता भी क्या! गर्मी के उस क्षणिक बवंडर के आक्रमण से उसने प्रायः उसी क्षण महसूस किया—यह नहीं कि जेम्मा खूबसूरत है, यह भी नहीं कि वह उसे अच्छी लगती है—यह तो वह पहले से जानता था... उसने महसूस किया कि वह उसे... प्यार करने लगा है! क्षण भर में, उस बवंडर की तरह ही, उस पर प्यार का नशा छा गया। और अब बेवक़ूफ़ाना द्वंद्वयुद्ध होनेवाला है! शोक की एक पूर्वानुभूति उसे सालने लगी। चलो, मान लेते हैं कि उसकी जान नहीं जायेगी लेकिन इस लड़की के प्रति उसके प्यार का नतीजा क्या होगा, जो किसी दूसरे की मंगेतर है? यह भी मान लेते हैं कि यह "दूसरा" उसके लिए खतरनाक नहीं है, और यह कि खुद जेम्मा उसे प्यार करने लगेगी... तो इससे क्या होता है? क्या मतलब? ऐसी रूपसी...

वह कभी कमरे में टहलने लगता, तो कभी मेज़ के पास बैठकर कागज़ का पन्ना उठा लेता, उस पर कुछ पंक्तियां लिखता और उसी क्षण उन्हें काटकूट देता... उसे अन्धेरी खिड़की में जड़ा जेम्मा का खूबसूरत चेहरा याद आ रहा था, तारक प्रकाश में, गर्मी के उस बवंडर में उसके बाल उड़ रहे थे। उसके संगमरमर से श्वेत हाथों की याद कौंध गई, ऐसे हाथ ओलिंप की देवियों

के होते हैं, उसने अपने कंधों पर उनका सजीव स्पर्श महसूस किया था... इसके बाद, वह उस गुलाब को हाथ में लेता, जिसे जेम्मा ने उसकी ओर प्यार से उछाला था—उसे लगता था कि उसकी अध-कुम्हलाई पंखुड़ियों से एक और कहीं अधिक सूक्ष्म सुगंध आ रही थी, गुलाब की सामान्य सुगंध के अतिरिक्त...

"और कहीं उसे मार डालेंगे या अपंग कर देंगे तो?"

वह बिस्तर में नहीं लेटा, सोफ़े पर कपड़े पहने ही सो गया।

सुबह किसी ने उसके कंधे थपथपाए...

उसने आंखें खोलीं, सामने पंतालिओने खड़ा था।

"आप तो वैसे ही सो रहे हैं, जैसे सिकन्दर महान बेबीलोन की लड़ाई में जाने से पहले सोया था!"

"कितने बजे हैं?" सानिन ने पूछा।

"पौन सात; हानाऊ पहुंचने में दो घण्टे लगेगें, और हमें वहां पहले ही पहुंचना चाहिए। रूसी अपने दुश्मनों से हमेशा आगे रहे हैं! मैंने फ़्रैंकफ़र्ट की एक उम्दा बग्गी तय कर ली है!"

सानिन मुंह-हाथ धोने लगा।

"और पिस्तौलें कहां हैं?"

"वही ferroflucto tedesco उन्हें लेकर आएगा। उसके साथ एक डाक्टर भी होगा।"

ज़ाहिर है कि पंतालिओने में उत्साह की तरंगें अभी उठ रही थीं; लेकिन जब वह सानिन के बगल में बग्गी पर बैठ गया, कोचवान ने चाबुक फटकारी और घोड़े दुलकी चाल से चल पड़े, तो श्वेत अश्वारोहियों के मित्र और भूतपूर्व गायक में एक आकस्मिक परिवर्तन दिखाई दिया। वह घबड़ा गया था, यहां तक कि भयभीत हो गया था। उसके अन्दर मानो कुछ ढह गया हो, ठीक जर्जर दीवार की तरह।

"लेकिन हम यह क्या कर रहे हैं, हे भगवान, santissima Madonna! *" आकस्मात वह एक किकियाती आवाज़ में चिल्लाया और सिर पकड़कर बैठ गया। "मैं यह क्या कर रहा हूं, बूढ़ा बेवकूफ़, पागल, frenetico?"

सानिन विस्मय से हंस दिया और पंतालिओने की कमर में बांहें डालकर उसने एक फ़्रांसीसी कहावत कह सुनाई: "Le vin est tiré—il faut le boire." **

"हां, हां," बूढ़े ने कहा, "यह जाम तो हम साथ मिलकर उठायेंगे,—लेकिन कुछ भी कह लो, मैं पागल हूं! मैं पागल हूं! सब कुछ इतना शान्तिमय था, इतना सुहाना था... कि अचानक: ता-ता, थई-थई, तत्-तत्!"

"मानो आर्केस्ट्रा में सहसा tutti *** की शुरुआत हो," सानिन ने एक मजबूर मुस्कान बिखेरते हुए कहा। "लेकिन इसमें तुम्हारा क्या दोष है!"

"मैं जानता हूं कि दोष मेरा नहीं है। यह बात स्पष्ट करने की नहीं! लेकिन यह उतावलापन है, बात तो वही है। Diavolo! Diavolo!" पंतालिओने ने जुल्फ़ें झटकीं, उसांस ली और बात दोहराते हुए बोला।

बग्गी अपनी रफ़्तार से बढ़ी जा रही थी, मंज़िल की ओर चली जा रही थी।

सुबह खुशनुमा थी। फ़्रैंकफ़र्ट की साफ़-सुथरी, सपाट सड़कें नींद से जागती जा रही थीं। घरों की खिड़कियां रांगे से पुती-सी चमचमा रही थीं। बग्गी जैसे ही नगर-द्वारों को पार करती हुई गुज़रती, तो धुंधले नीले आकाश में लवा पक्षियों का झुण्ड ज़ोर-ज़ोर से चहचहाता हुआ ऊपर छितर जाता था। अचानक सड़क के मोड़ पर ऊंचे पोपलर के पेड़ के पीछे से एक परिचित आकृति दिखाई दी, वह कुछेक कदम उनकी ओर बढ़ी और ठिठक गई। सानिन ने ज़रा गौर से उसे देखा... हे भगवान! एमील!

---

* पवित्र मरियम! ~~(इतालवी)~~

** शाब्दिक अनुवाद—बोतल खुल गई है, बिन पिए कैसे जाओगे।

*** सर्वसम्मिलित स्वर।

"तो क्या उसे पता चल गया है?" वह पंतालिओने की ओर मुड़ते हुए बोला।

"मैंने कहा था न, मैं पागल हूं," बेचारा इतालवी चीखकर मायूसी से रोने ही वाला था। "उस कमबख्त लड़के ने मुझे रात भर सोने नहीं दिया। अन्त में सुबह मैंने उसे सब कुछ बता दिया।"

"यही है segredezza!" सानिन ने मन में कहा।

बग्गी एमील के करीब बढ़ी जा रही थी; सानिन ने कोचवान को रुकने के लिए कहा और "उस कमबख्त लड़के" को बुलाया। एमील शिथिल कदम बढ़ता हुआ उसके पास पहुंचा। वह पीला पड़ चुका था, वैसा ही पीला, जैसा बेहोशी के दौरान था। वह बमुश्किल खड़ा हो पा रहा था।

"तुम यहां क्या कर रहे हो?" सानिन ने सख्ती से पूछा, "घर से क्यों चले आए?"

"मैं भी... आपके साथ चलूं," एमील ने कांपती, गिड़गिड़ाती आवाज़ में कहा और हाथ जोड़ लिया। उसके दांत बज रहे थे, मानो उसे बुखार चढ़ा हो। "मैं आपको परेशान नहीं करूंगा – बस, मुझे भी साथ ले चलिए!"

"अगर तुम मुझे ज़रा भी चाहते हो, या मेरी इज़्ज़त करते हो," सानिन ने कहा, "तो इसी क्षण चुपचाप घर लौट जाओ, या हेर क्लूबेर की दुकान चले जाओ, किसी से कुछ कहना नहीं, मेरी वापसी का इन्तज़ार करना, समझे!"

"आपकी वापसी!" एमील कराह उठा, आवाज़ खनकी और टूट गई, "लेकिन अगर आपको..."

"एमील!" सानिन ने उसे टोकते और कोचवान की ओर आंख से इशारा करते हुए कहा। "होश में आओ! एमील, मुझ पर मेहरबानी करो, मेरे दोस्त! कहते थे कि तुम मुझे प्यार करते हो! जाओ, घर लौट जाओ, सिर्फ़ मेरे लिए!"

सानिन ने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया। एमील उछलकर आगे बढ़ा, वह सुबक रहा था, उसने सानिन की हथेलियां अपने होंठों से लगा लीं और सड़क लांघकर मैदान पार करता हुआ फ़्रैंकफ़र्ट की ओर दौड़ पड़ा।

"एक और नायाब दिल," पंतालिओने ने कहा, लेकिन सानिन उदास नज़र से उसे देखता रहा था... पंतालिओने बग्गी के कोने पर टेक लगाकर बैठ गया। उसने अपना अपराध स्वीकार किया; उसकी व्यग्रता हर क्षण बढ़ती जा रही थी: क्या यह सच है कि उसने ही साक्षी का पद स्वीकार किया है, कि बग्गी का प्रबंध उसने ही किया है और उसने ही सारी देखभाल का जिम्मा लिया है, और अपना घर भी सुबह छह बजे उसने ही छोड़ा है? तिस पर पैरों में बेहद दर्द था और वे कष्ट दे रहे थे।

सानिन ने यह महसूस किया कि उसका उत्साह बढ़ाना चाहिए, उसे सफलता भी मिली, उसने ओजस्वी स्वर में कहा:

"कहां है आपका पुराना जांबाज हौसला, जनाबे आला सिनियोर चिप्पाटोला? कहां है–il antico valor?"

सिनियोर चिप्पाटोला तनकर बैठ गया, उसकी भौंहें सिकुड़ गईं।

"Il antico valor?" वह मंद्र स्वर में बोला। Non è ancora spento (वह तो अभी भी शेष है) il antico valor!!"

उसका अतीत जाग उठा, वह अपने कलाकार जीवन, ओपेरा और महान गायक गार्सिआ के बारे में बता रहा था,–और हानाऊ सही-सलामत आ गए। यदि सोचा जाय तो शब्द से ज़्यादा शक्तिशाली कुछ नहीं है... और न ही उससे ज़्यादा शक्तिहीन!

22

छोटा-सा जंगल, जहां द्वंद्वयुद्ध होना था, हानाऊ से चौथाई मील की दूरी पर था। पंतालिओने के साथ सानिन पहले ही पहुंच गया, जैसी उसने भविष्यवाणी की थी; बग्गी को जंगल के किनारे रुकने के लिए कहकर वे भीतर काफ़ी घने वृक्षों की छांह में चले गए। उन्हें करीब घण्टे भर इंतज़ार करना पड़ा।

प्रतीक्षा सानिन को भारी नहीं लग रही थी; वह छोटे-से पथ पर चहलकदमी करने लगा, वह चिड़ियों का कलरव सुनता, बगुलों की उड़ती पांत का अवलोकन करता, और जैसा कि

अधिकांश रूसी लोग ऐसी परिस्थितियों में करते हैं, कोशिश करता कि कुछ सोचे नहीं। सिर्फ़ एक बार वह सोच में पड़ गया : वह एक छोटे-से कोमल लिण्डन वृक्ष के पास आकर ठिठक गया, जो शायद कल के बवंडर से टूट गया था। वह निश्चय ही अंतिम सांसें गिन रहा था... उसकी सभी पत्तियां दम तोड़ रही थीं। "यह क्या कोई शकुन है?"–उसके मन में कौंधा; लेकिन वह उसी क्षण सीटी बजाने लगा, उसी लिण्डन वृक्ष को लांघकर वन पथ पर चलने लगा। पंतालिओने बड़बड़ा रहा था, जर्मनों को गालियां दे रहा था, आह-ऊंह करता हुआ कभी पीठ मल रहा था, तो कभी घुटने। अकुलाहट से उसे जंभाई भी आ जाती थी, जिससे उसके छोटे-से सहमे चेहरे पर रोचक मुद्रा उत्पन्न हो जाती थी। उसे देखकर सानिन ठहाका लगाते-लगाते रह जाता था।

अंत में पहियों की खड़खड़ाहट सुनाई दी। "आ गये!" पंतालिओने ने कहा और सजग होता हुआ तनकर खड़ा हो गया; वह नर्वस होने के कारण क्षणिक सिहर भी उठा, जिसे छिपाने के लिए उसने "बर्र-ऽ-ऽ" की विस्मयबोधक आवाज़ निकाली और कहा कि आज की सुबह बड़ी ताज़ी लग रही है। ओस की भरमार से घास और पत्ते बिल्कुल भीगे हुए थे, फिर भी गर्मी अब जंगल को बेधने लगी थी।

जल्द ही दोनों अफ़सर उसकी छांह में दिख पड़े; उनके साथ नाटे कद का एक मोटा और शान्त प्रकृति का आदमी था, जिसका चेहरा अभी भी नींद की खुमारी से अलसाया हुआ था–यह फ़ौजी डाक्टर था। वह एक हाथ में पानी से भरी सुराही लिए हुए था–शायद काम आ जाए; आपरेशन के औज़ार और प्राथमिक उपचार का थैला उसके बायें कंधे पर लटक रहा था। लगता था कि वह इस तरह की सैर का आदी हो चुका था; यह उसकी आमदनी का एक अतिरिक्त ज़रिया हुआ करता था : हर द्वंद्वयुद्ध में उसे आठ अशर्फ़ियां मिल जाती थीं–हर प्रतिपक्ष की ओर से चार-चार। फ़ोन रिख़्टेर महाशय पिस्तौलों का डिब्बा लिए हुए थे, मिस्टर फ़ोन ड्योनगोफ़ हाथ में छोटा-सा चाबुक लहरा रहे थे–शायद खुद को "दिखाने" के लिए।

"पंतालिओने!" सानिन ने बूढ़े से फुसफुसाकर कहा,

"यदि... यदि मेरी मृत्यु हो जाए — यहां कुछ भी हो सकता है, — मेरे बगल की जेब से चौपरता कागज़ निकाल लीजियेगा — उसमें फूल है — और उस कागज़ को सिनियोरिना जेम्मा को दे दीजियेगा। आप सुन रहे हैं न? वचन देते हैं न?"

बूढ़े ने उदासी से उसे देखा और सहमति के लहजे में सिर हिला दिया... लेकिन भगवान ही जाने, उसने समझा भी या नहीं कि सानिन उससे क्या अनुरोध कर रहा है।

प्रतिपक्षियों और साक्षियों ने, जैसी कि रीत थी, परस्पर अभिवादन किया, सिर्फ़ डाक्टर की मुख-मुद्रा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ — वह जंभाई लेते हुए घास पर बैठ गया: "भाई, मुझे बहादुराना नम्रता की नोक-झोंक से क्या लेना-देना!" मिस्टर फ़ोन रिख्टेर ने "त्शिबादोला" के सामने प्रस्ताव रखा कि वह जगह चुन ले; लेकिन "त्शिबादोला" महोदय कुंद भाव से बड़बड़ाकर बोले (उनकी भीतरी "दीवार" फिर से ढह चुकी थी): "यह तो, साहबान, आप ही करें, जो करना चाहते हैं; मैं तो सिर्फ़ मुआयना करूंगा..."

मिस्टर फ़ोन रिख्टेर इंतज़ाम में जुट गया। उसने वहीं, जंगल में फूलों से भरा एक छोटा-सा मनोहर मैदान ढूंढ़ लिया; बीस कदम नापे, उसके दोनों छोरों पर छीलकर बनाई दो छड़ी गाड़ दी, डिब्बे से पिस्तौलें निकालीं और उकड़ूं बैठकर उनमें गोलियां भरीं। वह पसीने से तर-ब-तर चेहरे को बार-बार रूमाल से पोंछते हुए पूरी मेहनत करता रहा। उसके साथ लगा हुआ पंतालिओने भीगी बिल्ली-सा दिख रहा था। इन सब तैयारियों के दौरान दोनों प्रतिपक्षी दूर-दूर खड़े रहे, वे सज़ायाफ़्ता दो स्कूली बच्चों की याद दिला रहे थे, जो अपने शिक्षकों पर गुस्सा दिखा रहे होते हैं।

निर्णायक क्षण आया...

और हरेक ने अपनी-अपनी पिस्तौल निकाल ली...*

---

* पुश्किन की प्रसिद्ध काव्य कृति 'येव्गेनी अनेगिन' से एक पंक्ति।

लेकिन यहीं मिस्टर फ़ोन रिख्टेर ने पंतालिओने को बताया कि वरिष्ठ साक्षी होने के नाते द्वंद्वयुद्ध के नियमानुसार अन्तिम शब्द "एक, दो, तीन!" कहने से पूर्व प्रतिपक्षियों को एक बार सलाह देनी चाहिए और यह प्रस्ताव रखना चाहिए कि वे आपस में सुलह कर लें; यद्यपि इस प्रस्ताव से कुछ होता जाता नहीं है लेकिन इस औपचारिकता की अवहेलना करके मिस्टर चिप्पाटोला अपने कर्तव्य से विमुख हो रहे हैं; सच पूछें तो यह काम तथाकथित "निष्पक्ष साक्षी" (unparteiischer Zeuge) का काम है, लेकिन चूंकि यहां ऐसा कोई आदमी है नहीं, इसलिए यह सम्मानजनक काम वह, मिस्टर फ़ोन रिख्टेर, अपने आदरणीय सहसाक्षी के ज़िम्मे खुशी-खुशी सौंपने को तैयार हैं। पंतालिओने, जो अब तक झाड़ी की ओट में जा चुका था, ताकि वह अपमान करनेवाले अफ़सर की शक्ल न देखे, पहले तो मिस्टर फ़ोन रिख्टेर की बात का एक शब्द भी नहीं समझ पाया—तिस पर बात भुनभुनाकर कही गयी थी; लेकिन अचानक वह जोश में आगे बढ़ा और छाती ठोकते हुए अवरुद्ध स्वर में मिली-जुली भाषा में चीख उठा: A la-la-la... Che bestialitá! Deux zeun' ommes comme ça qué si battono—perchè? Che diavolo? Andate a casa!"*

"मैं सुलह के लिए तैयार नहीं हूं," सानिन ने हड़बड़ाकर कहा।

"मैं भी तैयार नहीं हूं," उसके बाद प्रतिपक्षी ने भी दोहराया।

"तब चिल्लाकर कहिये: एक, दो, तीन!" फ़ोन रिख्टेर ने अकबकाये हुए पंतालिओने से कहा।

वह तुरंत फिर से झाड़ी के पीछे छिप गया और वहीं से जिस्म सिकोड़े आंखें मीचे, लेकिन गला फाड़कर चीख पड़ा:

"Una... due... e tre!"

पहले सानिन ने गोली चलायी, लेकिन वह लगी नहीं और

---

* अर-ऽ-ऽ... यह क्या वहशीपन है! दो युवक लड़ रहे हैं—किसलिए? क्या शैतानी है? घर जाओ! ~~(इतालवी और फ़्रांसीसी)~~

एक पेड़ में धंस गई। उसके बाद ही बैरन ड्योनगोफ़ ने तुरन्त गोली चला दी—यह जानबूझकर एक ओर, हवाई फ़ायर किया गया था।

एक तनावपूर्ण खामोशी छा गई... कोई अपने स्थान से हिला नहीं। पंतालिओने के मुंह से एक हल्की आह निकल गई।

"क्या जारी रखना चाहेंगे?" ड्योनगोफ़ ने पूछा।

"आपने हवाई फ़ायर क्यों किया?" सानिन ने पूछा।

"आपको इससे क्या मतलब?"

"क्या आप इसी तरह दूसरी बार भी हवाई फ़ायर करेंगे?" सानिन ने फिर पूछा।

"मुमकिन है; कुछ कह नहीं सकता।"

"ठहरिये, ठहरिए, साहबान..." फ़ोन रिख्टेर ने कहना शुरू किया, "प्रतिपक्षियों को आपस में बात करने का कोई अधिकार नहीं होता। यह नियम विरुद्ध है।"

"मैं गोली नहीं चलाऊंगा," सानिन ने कहा और पिस्तौल ज़मीन पर फेंक दी।

"मैं भी द्वंद्वयुद्ध जारी नहीं रखना चाहता," ड्योनगोफ़ चिल्ला पड़ा और उसने भी अपनी पिस्तौल ज़मीन पर फेंक दी। "हां, एक बात और, मैं यह स्वीकार करने के लिए भी तैयार हूं कि उस दिन मैं ग़लत था।"

वह अपनी जगह पर थोड़ा असमंजस में खड़ा रहा, फिर उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। सानिन ने तेज़ी से उसके पास आकर उससे हाथ मिलाया। दोनों युवकों ने एक-दूसरे को मुस्कराते हुए देखा—और उनके चेहरे सुर्ख हो गये।

"Bravi! Bravi!" पंतालिओने अचानक पागलों की तरह चीख पड़ा और तालियां बजाते हुए झाड़ियों के पीछे से सरपट दौड़ता हुआ बाहर निकला। डाक्टर, जो अब तक एक ओर बैठा हुआ था, तुरंत उठा, उसने सुराही से पानी उड़ेल दिया और जंगल से बाहर की ओर अलसायी चाल से बढ चला।

"सम्मान की रक्षा हुई और द्वंद्वयुद्ध समाप्त हुआ!" फ़ोन रिख्टेर ने घोषित किया।

अफ़सर साहबान से विदा लेने के बाद बग्गी में बैठते वक्त सानिन अपनी रग-रग में सन्तोष नहीं, तो कम से कम एक हल्कापन अवश्य महसूस कर रहा था। लेकिन उसमें एक दूसरी भावना भी अंगड़ाई लेने लगी, जो शर्म जैसी थी... यह सारा द्वंद्वयुद्ध उसे नकली, पहले से तय किये हुए अफ़सरों या विद्यार्थियों के खेल जैसा लग रहा था, जिसमें अभी-अभी उसने अपनी भूमिका निभाई थी। उसे सुस्त प्रकृति के डाक्टर का स्मरण हो आया, याद आया कि कैसे वह मुस्कराया था, मुस्कराया नहीं, बस, समझें कि उसने नाक सिकोड़ी थी, जब वह बैरन ड्योनगोफ़ की बांह में बांह डाले जंगल से बाहर निकल रहा था। और फिर जब पंतालिओने डाक्टर को उसकी फ़ीस की चार अशर्फ़ियां दे रहा था... हुंह! अच्छा नहीं हुआ यह सब!

हां, सानिन को कुछ शर्म-सी आ रही थी... लेकिन दूसरे नज़रिये से देखा जाय तो वह कर भी क्या सकता था? इस युवा अफ़सर की धृष्टता की सज़ा दिये बगैर वह कैसे रह सकता था; उसे जनाब क्लूबेर का अनुकरण नहीं करना था। उसने जेम्मा का पक्ष लिया, उसकी प्रतिष्ठा बचायी... बात तो ठीक ही है; फिर भी हृदय में कुछ कुरेद रहा था, उसे शर्म आ रही थी।

लेकिन पंतालिओने जीत की उमंग में था! उसका मस्तक गर्व से ऊंचा उठ गया था। रण-विजय के बाद, लौटता हुआ विजयी सेनापति भी इतनी आत्मतुष्टि से नहीं देखता रहा होगा। द्वंद्वयुद्ध के समय सानिन का आचरण उसे कायल किये हुए था। वह उसे एक नायक का सम्मान दे रहा था और उसकी बात को, उसके अनुरोध को बिल्कुल नहीं सुन रहा था। वह उसकी तुलना संगमरमर या कांस्य प्रतिमा से कर रहा था—'दोन जुआन' में नाइट कमांडर की मूर्ति से! हां, अपने बारे में उसने खुद स्वीकार कर लिया कि कुछ घबराहट महसूस कर रहा था। "मैं एक कलाकार जो हूं," उसने कहा, "मेरी प्रकृति ही नर्वस-सी है और आप हिमपुत्र हैं, ग्रैनाइट पत्थर की तरह कठोर हैं।"

सानिन कतई समझ नहीं पा रहा था कि इस बौराये कलाकार को चुप कैसे किया जाय।

सड़क के तकरीबन उसी स्थल पर, जहां वे दो घण्टे पूर्व एमील से मिले थे, वह फिर पेड़ों के पीछे से उछलकर बाहर निकला, किलकारियां मारते, सिर के ऊपर हैट नचाते हुए बग्घी की तरफ़ दौड़ पड़ा, पहिये के नीचे दबते-दबते बचा और घोड़ा के रुकने की प्रतीक्षा किये बगैर बग्गी में घुसकर सानिन से लिपट गया।

"आप ज़िन्दा हैं, आप ज़ख्मी तो नहीं है," वह बार-बार पूछ रहा था। "मुझे माफ़ कीजियेगा कि मैंने आपका कहना नहीं माना, फ़्रैंकफ़र्ट नहीं लौटा... मैं जा ही नहीं सकता था! मैं यहीं आपका इंतज़ार कर रहा था... बताइये न, वहां क्या-क्या हुआ था? क्या आपने उसे मार डाला?"

सानिन ने बमुश्किल उसे शांत किया। पंतालिओने ने बड़ी खुशी के साथ नमक-मिर्च लगाकर द्वंद्वयुद्ध का सारा किस्सा बयान किया, और बेशक, नाइट कमांडर की मूर्ति, उस कांस्य प्रतिमा की भी याद दिलाना नहीं भूला! यहां तक कि वह उठ खड़ा हुआ और संतुलन बनाये रखने के लिए पैर फैलाए, वक्ष पर हाथ बांधे और कंधे की ओर हिकारत से देखते हुए उसने नाइट कमांडर-सानिन का अभिनय भी कर दिया! एमील अचंभे से सब बातें सुन रहा था, बीच-बीच में विस्मय प्रगट कर देता था और फुर्ती से उठकर उतनी ही तेज़ी से अपने नायक-मित्र सानिन को चूम लेता था। बग्गी के पहिये फ़्रैंकफ़र्ट की पथरीली सड़क पर खड़खड़ा उठे, और अन्त में उस होटल के सामने रुके, जहां सानिन ठहरा हुआ था।

अपने दो मित्रों के साथ वह सीढ़ियां चढ़कर दूसरी मंजिल पर आया—जहां अचानक अन्धेरे गलियारे से तेज़ कदम बढ़ाती हुई एक स्त्री-आकृति सामने आयी; उसका चेहरा नकाब से ढका हुआ था; वह सानिन के सामने ज़रा ठिठकी, थोड़ा लड़खड़ाई, जल्दी

से एक उसांस भरकर फ़ौरन सीढ़ी से नीचे उतरी और सड़क पर गायब हो गई। वेटर को बड़ा आश्चर्य हुआ, उसने बताया कि "यह महिला घंटे भर से विदेशी महाशय की प्रतीक्षा कर रही थी।" वह क्षण भर के लिए ही सामने आई थी, लेकिन सानिन ने जेम्मा को पहचान लिया था। वह उसकी आंखों को मोटे सिल्क के भूरे नकाब के पीछे से ही पहचान गया था।

"क्या फ़ोयलीन जेम्मा को यह सब पता था..." सानिन ने एमील और पंतालिओने की ओर देखकर नाराज़गी से जर्मन में पूछा।

एमील का चेहरा सुर्ख हो गया। वह कुछ घबरा गया।

"मुझे ही बताना पड़ा था," वह हकलाने लगा, "उसे शक हो गया था—और मैं किसी भी तरह से उसे मना नहीं सका... लेकिन अब इससे क्या होने को है," उसने उल्लसित स्वर में कहा, "अब तो इतना बढ़िया अंत हो चुका है, और उसने भी आपको सही-सलामत देख लिया है!"

सानिन दूसरी ओर मुड़ गया।

"कैसे बकवादी हो तुम दोनों!" उसने खीजकर कहा और अपने कमरे में आकर कुर्सी पर बैठ गया।

"कृपया, नाराज़ न होइये," एमील ने विनीत स्वर में कहा।

"ठीक है, नाराज़ नहीं होऊंगा।" (सानिन सचमुच नाराज़ नहीं था—और, आखिर शायद ही उसने चाहा हो कि जेम्मा को कुछ भी पता न चले।) "अच्छा... अब गले से लिपटना खत्म कीजिये। और अब आप लोग जाइये। मैं एकान्त चाहता हूं। फ़िलहाल सोने जा रहा हूं। थक गया हूं।"

"खयाल अच्छा है!" पंतालिओने ने खुशी से कहा। "आपको आराम करना चाहिए! यह तो अब आपका हक है, भले आदमी! चलें, एमील! पंजों के बल, पंजों के बल! चुपचाप..."

सोने का बहाना करके सानिन सिर्फ़ अपने इन साथियों से छुटकारा पाना चाहता था; लेकिन एकांत में वह अंग-प्रत्यंग

में सचमुच काफ़ी थकान महसूस करने लगा था: पिछली सारी रात उसने पलक भी नहीं झपकाई थी, इसीलिए बिस्तर में लेटते ही वह तुरंत गहरी नींद सो गया।

23

वह लगातार कई घण्टे से गहरी नींद सो रहा था। वह स्वप्न देख रहा था कि द्वंद्वयुद्ध में जूझ रहा है, इस बार उसका प्रतिद्वंद्वी है हेर क्लूबेर, फ़र-वक्ष पर एक तोता बैठा है, तोता है पंतालिओने, और वह टें-टें करते हुए दोहरा रहा था एक-दो-तीन! एक-दो-तीन!

एक-दो-तीन!! यह आवाज़ उसे अब अधिक स्पष्ट सुनाई दी उसने अपनी आंखें खोलीं और सिर थोड़ा ऊपर उठाकर देखा कोई कमरे का दरवाज़ा खटखटा रहा था।

"अन्दर आ जाइये!" सानिन ने चिल्लाकर कहा।

वेटर अन्दर पहुंचा, उसने बताया कि कोई महिला उससे तुरन्त मिलना चाहती हैं।

"जेम्मा!" उसके मस्तिष्क में एक विचार कौंध गया... लेकिन यह जेम्मा नहीं, उसकी मां थी – फ़ाऊ लेनोरे।

वह जैसे ही अन्दर पहुंची, कुर्सी पर बैठकर रोने लगी।

"क्या बात है, नेकदिल मैडम रोज़ेली?" सानिन ने उसके नज़दीक बैठकर मृदु स्नेह से उसका हाथ छूते हुए कहा। "क्या हुआ आपको? कृपया शान्त हो जाइये, मैं आपका हाथ जोड़ता हूं!"

"ओह, Herr Dimitri, मैं बड़ी... बड़ी बदनसीब औरत हूं!"

"आप बदनसीब हैं?"

"ओह, बहुत! क्या पता था कि ऐसा होगा? अचानक नीले आसमान से बिजली-सी फट पड़ी..."

वह बमुश्किल सांस ले पा रही थी।

"लेकिन बात क्या है? आखिर बतायें तो? पानी पियेंगी आप?"

"नहीं, धन्यवाद।" फ़्राऊ लेनोरे ने रूमाल से आंखें पोंछीं और दहाड़ें मारकर फिर से रोने लगीं। "मैं सब जानती हूं! सब!"

"सब? यानी आपका मकसद क्या है?"

"सब, जो कुछ आज हुआ है। और वजह... वह भी मैं जानती हूं। आपने तो एक शरीफ़ इनसान का फ़र्ज़ निभाया। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण स्थितियों का संयोग कैसा है! अकारण ही मुझे सोडेन की यह पिकनिक पसन्द नहीं आई थी... अकारण ही नहीं! (फ़्राऊ लेनोरे ने उस दिन ऐसा कोई जिक्र नहीं किया था, लेकिन अब वह मानने के लिए विवश है कि उसे "हरेक चीज़" का पूर्वाभास था।) मैं आपके पास आई हूं, जैसे एक शरीफ़ इनसान, एक दोस्त के पास यद्यपि हमारा परिचय सिर्फ़ पांच दिन पुराना है... लेकिन आप जानते हैं कि मैं एक बेवा हूं, अकेली हूं... मेरी बेटी...!"

फ़्राऊ लेनोरे की आवाज़ आंसुओं के कारण रुंध गई। सानिन भौचक था कि क्या कहे।

"आपकी बेटी?" सानिन ने उसके ही शब्दों को दोहराते हुए पूछा।

"हां, मेरी बेटी–जेम्मा ने..." फ़्राऊ लेनोरे ने आंसुओं से तर रूमाल की ओट से कलपती आवाज़ में बताया, "आज कहा है कि वह हेर क्लूबेर से शादी नहीं करेगी, और यह कि उसके फ़ैसले की उसे इत्तला दे दी जाय!"

सानिन यकायक चौंक पड़ा–उसे ऐसी उम्मीद नहीं थी।

"खुद-ब-खुद स्पष्ट है," फ़्राऊ लेनोरे ने आगे कहा, "कि यह शर्मनाक है, कि ऐसा कभी नहीं हुआ है, जब किसी मंगेतर ने अपने भावी पति से रिश्ता तोड़ा हो! लेकिन यह फ़ैसला हमें तबाह कर सकता है, Herr Dimitri!" फ़्राऊ लेनोरे ने रूमाल को तत्परता से कसकर ऐंठते हुए एक नन्ही-सी सख्त गेंद बना दी, मानो अपना सारा दुख-दर्द उसमें कैद कर देना चाहती हो। "दुकान की आमदनी से किसी तरह गुज़र हो रही है, Herr Dimitri! जबकि हेर क्लूबेर एक रईस आदमी हैं, उनकी रईसी दिनों-दिन बढ़ती ही जाएगी। ऐसे मंगेतर को आखिर किसलिए ठुकराया जाय?

इसलिए कि वह अपनी मगेतर की हिमायत न कर सका? बेशक उसने यह बहुत अच्छा नहीं किया, लेकिन वह फ़ौजी नहीं है, ऊंची शिक्षा उसे नहीं मिली है, लेकिन इज़्ज़तदार व्यापारी के नाते किसी अजनबी छोटे अफ़सर के छिछोरेपन की उपेक्षा करना उसके लिए स्वाभाविक ही था। आखिर इसमें कौन-सा अपमान हो गया?"

"माफ़ कीजियेगा, फ़्राऊ लेनोरे, शायद आप मुझ पर आरोप लगा रही हैं..."

"नहीं, नहीं, आरोप मैंने कतई आप पर नहीं लगाया! आपकी बात ही और है—आम रूसियों की तरह आप भी एक फ़ौजी आदमी हैं..."

"माफ़ कीजियेगा, मैं बिल्कुल नहीं..."

"जनाब, आप विदेशी हैं, यात्रा पर निकले हैं, मैं आपकी अहसानमन्द हूं!" सानिन को अनसुना करते हुए फ़्राऊ लेनोरे अपनी ही कहे जा रही थी। वह बेबसी से हाथ चमका रही थी, हांफ रही थी। उसने रूमाल की तह खोली और नाक साफ़ की। वह किस तरह अपना दुख व्यक्त कर रही थी, इसी से स्पष्ट था कि वह उत्तरी आकाश के नीचे पैदा नहीं हुई थी।

"और फिर जनाब क्लूबेर अपनी दुकान कैसे चलायेंगे, अगर ग्राहकों से यूं ही लड़ते-झगड़ते रहे? यह तो बिल्कुल बेमेल बात है! और मैं अब उन्हें इनकार कर दूं? लेकिन हमारी गुज़र कैसे चलेगी? पहले सिर्फ़ हम लोग ही पिस्ता-पुडिंग और फ़रिश्ताई केक बनाते थे, ग्राहक सिर्फ़ हमारी ही दुकान पर खरीदारी करते थे। लेकिन अब तो ये चीज़ें सभी बनाने लगे हैं। खुद ही सोचिये: इन सबके अलावा नगर में आपके द्वंद्वयुद्ध की अफ़वाहें फैलेंगी। भाई, ऐसी बातें छिपती तो हैं नहीं। और अब अचानक रिश्ता तोड़ने की नौबत आ गई है! यह सब कलंक है, कलंक! जेम्मा एक बहुत अच्छी लड़की है; वह मुझे प्यार भी बहुत करती है, लेकिन है बड़ी ज़िद्दी रिपब्लिकन, अपने आगे किसी को कुछ समझती ही नहीं है। सिर्फ़ आप ही एक ऐसे व्यक्ति हैं, जो उसे समझा सकते हैं।"

सानिन अब और ज़्यादा हैरान था:

"मैं, फ़्राऊ लेनोरे?"

"हां, सिर्फ़ आप... मैं इसीलिए आपके पास आई हूं—कोई दूसरा रास्ता सूझ नहीं रहा था! आप एक भले इनसान हैं, समझदार हैं! आपने ही उसकी हिमायत की है। वह आपका विश्वास कर लेगी। बल्कि वह विश्वास के लिए बाध्य होगी—आखिर उसके लिए ही आपने जान-जोखिम उठाया था न! उसे आप प्रभावित कर सकते हैं—लेकिन मैं मजबूर हूं, समझाकर हार चुकी हूं। उसे सिर्फ़ यही समझाकर मना लें आप कि वह अपने फ़ैसले से न सिर्फ़ खुद को, बल्कि हम सभी को तबाह कर देगी! आपने मेरे बेटे की जान बचाई थी, और अब मेरी बेटी को भी बचा लीजिए! आपको खुद ईश्वर ने ही यहां भेजा है... मैं आपके सामने घुटने टेकने को तैयार हूं..."

यह कहकर फ़्राऊ लेनोरे कुर्सी से थोड़ा उठी, मानो सानिन के पैरों पर गिरने ही वाली हो... पर सानिन ने उसे रोक लिया।

"फ़्राऊ लेनोरे! भगवान के लिये! आप यह क्या कर रही हैं?"

उसने सानिन के हाथों को कांपते हुए पकड़ लिया।

"आप वचन देते हैं न?"

"फ़्राऊ लेनोरे, ज़रा सोचिये तो, मैं होता कौन हूं..."

"आप वचन देते हैं न? क्या आप चाहते हैं कि मैं यहीं, आपके सामने दम तोड़ दूं?"

सानिन अचकचा गया। उसे जीवन में पहली बार खौलते इतालवी खून से वास्ता पड़ा था।

"मैं आपके लिए जो भी संभव होगा, करूंगा!" वह बोल उठा। "मैं फ़्रोयलिन जेम्मा से बात करूंगा..."

फ़्राऊ लेनोरे के मुंह से किलकारी-सी फूट पड़ी।

"लेकिन मैं सचमुच नहीं जानता कि परिणाम क्या होगा..."

"लेकिन इनकार न कीजिये, इनकार न कीजिये!" फ़्राऊ लेनोरे ने अनुनय के स्वर में कहा, "बस, आप तैयार हैं न! परिणाम भी बहुत अच्छा होगा। मैं तो सिर्फ़ यही कह सकती हूं! लेकिन मेरी बात तो वह सुनती ही नहीं है!"

"क्या मिस्टर क्लूबेर से रिश्ता तोड़ने का वह अंतिम निर्णय ले चुकी है?" सानिन ने क्षणिक खामोशी के बाद पूछा।

"सरासर इनकार कर चुकी है! बिल्कुल अपने बाप की बेटी है, जवान्नी बत्तीस्ता की! ज़िद्दी!"

"ज़िद्दी! वह?" सानिन ने स्वर खींचते हुए दोहराया।

"जी हां... लेकिन वह फ़रिश्ता भी है! आपकी बात मान लेगी। आप आएंगे न, जल्द ही? मेरे प्यारे रूसी मित्र!" फ़्राऊ लेनोरे आवेश में कुर्सी से उठ खड़ी हुई और उसी आवेश से सामने बैठे सानिन के सिर को बांहों में समेटकर बोली: "एक मां का आशीर्वाद लीजिए। प्यास लगी है, बेटे, थोड़ा पानी दीजिए!"

सानिन ने मैडम रोज़ेली की ओर पानी का गिलास बढ़ा दिया, वचन दिया कि जल्द ही आएगा। वह सीढ़ी से उतरकर उसे बाहर सड़क तक छोड़ने आया। सानिन कमरे में लौटा, उसने हाथ हैरानी से चमका दिये और आंखें फाड़-फाड़ देखने लगा।

"लो," उसने सोचा, "शुरू हो गया जीवन का खेल! ऐसा कि सिर चकरा गया।" उसने अपने अन्दर झांकने की, उस पर क्या बीत रही है, यह समझने की कोशिश ही नहीं की: गड्डमड्ड हो गया था सब, बस! "क्या मनहूस दिन निकला!" उसके होंठ अनायास ही बुदबुदा उठे। "ज़िद्दी है..." उसकी मां कहती है... और मैं उसे समझाऊं–उसे?! और क्या समझाऊं?!"

सानिन का सिर सचमुच चकरा रहा था। और अनुभूतियों के अव्यक्त विचारों के इस सारे बवंडर पर जेम्मा का प्रतिरूप मंडरा रहा था, वही प्रतिरूप, जो उस नर्म-गर्म, बिजली की तरह झकझोर देनेवाली रात को अन्धेरी खिड़की में टिमटिमाते तारों की रोशनी में उसके स्मृति-पटल पर अंकित हो गया था।

24

सानिन अनिश्चित कदम से मैडम रोज़ेली के घर की ओर चला जा रहा था। उसका हृदय तेज़ी से धड़क रहा था; वह स्पष्ट महसूस कर रहा था, यहां तक कि सुन रहा था कि कैसे वह फेफड़े को धकेल रहा था। जेम्मा से वह क्या कहेगा? और

17—544

बातचीत कैसे शुरू करेगा? रोज़ेली निवास में वह दुकान के बजाय पिछले दरवाज़े से अन्दर पहुंचा। छोटे-से कमरे में फ़ाऊ लेनोरे बैठी थी। फ़ाऊ लेनोरे ने उससे मिलकर खुशी प्रगट की और सहसा सजग भी हो गई।

"मैं आपका ही इन्तज़ार कर रही थी, जनाब," उसने फुसफुसाते और उसका हाथ क्रमशः अपने दोनों हाथों से दबाते हुए कहा। "बगीचे में है वह, वहीं चले जाइये। लेकिन ध्यान रखियेगा: मुझे आपका ही भरोसा है!"

सानिन बगीचे की ओर चल दिया।

जेम्मा छोटे-से उद्यान-पथ के पास ही एक स्टूल पर बैठी थी, चेरी से भरी बड़ी-सी टोकरी से पकी-पकी चेरियां छांटकर एक प्लेट में रखती जा रही थी। सूरज नीचे खिसक आया था—तकरीबन सात बज चुका था—और उसकी सुनहली धूप के बजाय अब रक्ताभ किरणों की तिरछी, चौड़ी पट्टी मैडम रोज़ेली के छोटे-से बगीचे को रोशनी से सराबोर कर रही थी। पत्तियां यदा-कदा मंद स्वर में सरसराने लगती थीं, देर से लौटी हुई मधुमक्खियां एक फूल से दूसरे फूल पर उड़ते हुए सहसा भनभनाने लगती थीं। कहीं एक चिड़िया अपनी अथक तान छेड़े हुए थी, एकसुरा गुटरगूं किये जा रही थी।

जेम्मा वही बड़ा-सा हैट लगाए हुए थी, जिसे पहनकर वह सोडेन गई थी। सानिन को उसने हैट के वक्र छज्जे की ओट से देखा और फिर से टोकरी पर झुक गई।

सानिन अनचाहे ही कदमों के फ़ासले क्रमशः कम करता जा रहा था, और... और... और उससे पूछने के लिए बस, इतना ही सोच पाया था: वह चेरियां किसलिए छांट रही है?

जेम्मा ने उत्तर देने में कोई जल्दबाज़ी नहीं की।

"वे चेरियां अधिक पकी हैं," उसने अन्त में कहा, "उनके मुरब्बे बन जाएंगे, और इनकी—मीठी कचौड़ियां। शायद आप जानते हों कि हम लोग मीठी कचौड़ियां भी बेचते हैं।"

जेम्मा ने यह कहकर अपना सिर और नीचे झुका लिया, दाहिने हाथ की उंगलियों में दो चेरियां थीं, उसका हाथ टोकरी और प्लेट के बीच में उठा हुआ था।

"मैं आपके पास बैठ सकता हूं?"

"बेशक।" जेम्मा बेंच पर थोड़ा खिसक गई। सानिन उसकी बगल में बैठ गया। "बात कैसे शुरू की जाय?" उसने खुद से कहा लेकिन जेम्मा ने उसे कठिनाई से उबार लिया।

"आज आप द्वंद्वयुद्ध में लड़े थे," उसने तपाक से पूछा और अपना आकर्षक चेहरा उसकी ओर भरपूर घुमा दिया, जो लज्जा से लाल हो चुका था,—और आंखें किस गहन कृतज्ञता से चमक रही थीं! "अजी, आप तो खामोश बैठे हैं। यानी आपके लिए खतरे जैसी कोई चीज़ ही नहीं है?"

"खूब कहा आपने! वहां खतरे की कोई नौबत ही नहीं आई। सब सही-सलामत निपट गया। कोई अप्रिय घटना नहीं हुई।"

जेम्मा ने अपनी एक उंगली आंखों के सामने दायें से बायें लहराई... यह उसका एक इतालवी अन्दाज़ था।

"नहीं, नहीं! छिपाइये नहीं! आप मुझे धोखा नहीं दे सकते! पंतालिओने ने मुझे सब कुछ बता दिया है!"

"आपने भी किसका यकीन कर लिया! क्या वह मेरी तुलना किसी कमांडर की मूर्ति से भी कर रहा था?"

"जनाब, उसकी बात हास्यास्पद हो सकती है, लेकिन उसके भाव हास्यास्पद नहीं थे, न तो वही, जो आज आपने कर दिखाया। और इसका कारण मैं थी... मेरे लिये ही... मैं इसे कभी नहीं भूलूंगी।"

"मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, फ्रोयलिन जेम्मा..."

"हां, मैं इसे कभी नहीं भूलूंगी," उसने ज़ोर देते हुए दोहराया, पुनः उसे अनिमेष देखा, और मुंह दूसरी ओर घुमा लिया।

अब उसका सुघड़, सलोना पार्श्वरूप उसकी आंख के सामने था, लगा कि यह अप्रतिम रूप उसने पहली बार देखा था—और इस अनुभव से वंचित रहा था, जो इस पल उसे महसूस हो रहा था। उसका हृदय दहक रहा था।

"और मेरा वह वचन!" उसके मस्तिष्क में कौंध गया।

"फ़ायलिन जेम्मा..." क्षणिक हिचकिचाहट के बाद उसने कहा।

"कहिये?"

उसने मुड़कर उसे देखा भी नहीं, वह चेरियां छांटती जा रही थी, उनके डण्ठलों को उंगलियों से संभालकर पकड़ती थी, और लगन से पत्तियां उठाती थी... पर कितने विश्वसनीय स्नेह से यह शब्द फूटा होगा: "कहिये"!

"क्या मां ने आपसे कुछ कहा था... इस बारे में..."

"किस बारे में?"

"मेरे बारे में!"

जेम्मा ने अचानक हाथ में उठाई हुई चेरियां टोकरी में वापस डाल दीं।

"तो क्या मां ने आपसे कुछ कहा था?" उसने पूछा।

"हां।"

"क्या कहा था?"

"उन्होंने कहा था कि आप... कि आपने आकस्मात निर्णय बदल दिया है... अपना पूर्व संकल्प।"

जेम्मा ने फिर अपना सिर झुका लिया। उसका चेहरा हैट के नीचे छिप गया; सिर्फ़ गर्दन दिख रही थी, किसी बड़े-से फूल के लचीले कोमल डंठल की तरह।

"कैसा संकल्प?"

"आपका संकल्प... यही कि... आपके भावी जीवन के बारे में..."

"यानी कि... आप मिस्टर क्लूबेर की बात कर रहे हैं?"

"हां।"

"तो मां ने आपको बता दिया है कि मैं मिस्टर क्लूबेर से शादी नहीं करना चाहती?"

"हां।"

जेम्मा बेंच पर थोड़ा खिसक गई। टोकरी एक ओर झुकी और गिर गई... कुछ चेरियां ज़मीन पर लुढ़कने लगीं। एक मिनट बीता .. फिर दूसरा...

"आखिर मां का मकसद क्या था?" जेम्मा की आवाज़

सुनाई दी। सानिन पूर्ववत उसकी गर्दन ही देख पा रहा था। सांस की रफ़्तार तेज़ होने के कारण जेम्मा का सीना जल्दी-जल्दी उभरता था।

"मां का मकसद क्या था? आपकी मां ने सोचा होगा कि हम दोनों के बीच इतने थोड़े समय में ही दोस्ती हो गई है, और आपके मन में मेरे प्रति कुछ विश्वास पनप गया है, तो मेरी स्थिति आपको कोई नेक सलाह देने लायक हो ही जाती है और आप मेरी बात सुनें।"

जेम्मा के हाथ धीरे से घुटनों पर फिसल गए... वह अपने कपड़े की सिलवटें ठीक करने लगी।

"तो आप मुझे कौन-सी सलाह देंगे, monsieur Dimitri?" क्षणिक खामोशी के बाद उसने पूछा।

सानिन ने देखा कि जेम्मा की उंगलियां उसके घुटनों पर कांप रही हैं... कपड़े की सिलवटें वह सिर्फ़ इसलिए ठीक कर रही थी, ताकि उंगलियों का कंपन छिपाया जा सके। उसने धीरे से अपना हाथ उन पीली, कंपकंपाती हुई उंगलियों पर रख दिया।

"जेम्मा," उसने कहा, "आप मेरी ओर देख क्यों नहीं रही हैं?"

उसने पलक झपकते ही अपना हैट कंधे के पीछे फेंक दिया, और पूर्ववत कृतज्ञ और विश्वसित दृष्टि से एकटक उसे देखने लगी। वह इस इंतज़ार में थी कि अब वह क्या कहता है... लेकिन उसकी सूरत देखते ही सानिन घबड़ा गया, मानो आंखें चौंधिया गई हों। सांध्य सूर्य की तप्त किरणें उसके युवा चेहरे को आलोकित कर रही थीं, जबकि उस पर झलकते हुए भाव स्वयं इस आलोक से कहीं अधिक भव्य और आभावान थे।

"हां, तो सुनाइये, monsieur Dimitri," उसने धीरे से मुस्कराते और आहिस्ते-आहिस्ते अपनी भौंहें उठाते हुए कहा, "लेकिन कौन-सी सलाह आप मुझे देना चाहें?"

"कौन-सी सलाह?" सानिन ने उसके ही शब्दों को दोहराया। "देखिए न, आपकी मां का ख़याल है कि जनाब क्लूबेर से सिर्फ़ इस बात पर भावी रिश्ता नहीं खत्म किया जाना चाहिये कि उन्होंने उस दिन अपनी विशेष बहादुरी नहीं दिखाई..."

"सिर्फ़ इसलिए?" जेम्मा यह कहते हुए नीचे झुकी, टोकरी उसने उठाई और अपने पास बेंच पर रख ली।

"लेकिन... सामान्यतः देखा जाय तो... यह एक ऐसा कदम है, जिसके सारे नतीजे आपको अच्छी तरह सोच लेने चाहिए; फिर स्थिति भी आपकी ऐसी है कि परिवार के हर सदस्य के प्रति निजी दायित्व बढ़ जाता है..."

"ख़ैर, यह सब तो मां का ख़याल है," जेम्मा ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "ये शब्द उनके ही हैं। यह मैं जानती हूं; लेकिन इस बारे में आप क्या सोचते हैं?"

"मैं?" सानिन चुप रहा, उसे लगा कि कोई चीज़ गले में अटक गई है और वह बमुश्किल सांस ले पा रहा है। "मैं भी..." उसने कोशिश करते हुए कहा।

जेम्मा तनकर खड़ी हो गई।

"आप भी? हां, आप भी?"

"हां... लेकिन..." सानिन एक भी शब्द आगे नहीं जोड़ सका।

"ठीक है," जेम्मा ने कहा, "अगर आप दोस्त के नाते मुझे अपना निर्णय बदलने की राय दे रहे हैं... यानी कि मैं अपने पूर्व निर्णय को न बदलूं—मुझे सोचना ही होगा!" और यह ध्यान न देते हुए कि वह क्या कर रही है, छंटी हुई चेरियां प्लेट से निकालकर टोकरी में वापस रखने लगी... "मां को भरोसा है कि मैं आपका कहना मान लूंगी... मुमकिन है मैं आपकी बात ही सचमुच मान लूं..."

"लेकिन इजाज़त दें, तो पहले एक बात पूछ ही लूं, फ़्रोयलिन जेम्मा! आख़िर किस कारण आप यह निर्णय लेने के लिए बाध्य हुईं..."

"मैं आपकी ही बात मानूंगी," जेम्मा ने दोहराया, उसकी भौंहें सिकुड़ गईं, गाल पीले पड़ गये; वह अपना निचला होंठ काट रही थी। "आपने इतना कुछ मेरे लिये किया है कि आप जो चाहेंगे, मैं मानने को बाध्य हूं। मां से इस मुद्दे पर बात करूंगी। लो, मां तो इधर ही आ रही हैं।"

सचमुच फ़्राऊ लेनोरे उस दरवाज़े की दहलीज पर खड़ी थी,

जो बगीचे की तरफ़ खुलता था। उसका धैर्य समाप्त हो चुका था: वह बैठी न रह सकी। उसके हिसाब से तो बातचीत बहुत पहले ही खत्म हो जानी चाहिए थी, यद्यपि उसे शुरू हुए अभी पन्द्रह मिनट भी नहीं हो पाए थे।

"नहीं, नहीं, नहीं, ईश्वर के लिए, आप अभी उससे कुछ न कहिये!" सानिन ने हड़बड़ाते हुए कहा, मानो किसी खौफ़ ने उसे जकड़ लिया हो। "धैर्य रखिये, मैं सब कुछ आपको बता दूंगा, लिख दूंगा... लेकिन आप उस समय तक कोई निर्णय न लें... बस, धैर्य रखिए!"

उसने जेम्मा का हाथ दबाया, उचककर बेंच से उठा और अचंभित फ़ाऊ लेनोरे के करीब से हैट उठाये हुए बिजली की तरह दौड़ गया, कोई अस्पष्ट-सी बात कहता हुआ ओझल हो गया।

फ़ाऊ लेनोरे जेम्मा के पास पहुंची।

"हां, तो बताओ न, जेम्मा बेटी..."

वह यकायक उठ खड़ी हुई और मां के सीने से लिपट गई।

"मेरी प्यारी मां, थोड़ा और धैर्य रखो, बस, थोड़ा-सा... सिर्फ़ कल तक की बात है। ठीक है न? लेकिन कल तक आप एक शब्द भी नहीं पूछेंगी? आह!"

उसकी आंख से अचानक एक उज्ज्वल अश्रुधारा बह चली, ये आंसू खुद उसे अप्रत्याशित लग रहे थे। फ़ाऊ लेनोरे इस बात से और भी हैरान थी कि जेम्मा के चेहरे पर तो दुख की छाया भी न थी, बल्कि वह प्रफुल्ल था।

"तुम्हें क्या हो गया है, जेम्मा?" उसने बेटी से पूछा। "तू तो कभी रोती नहीं थी—लेकिन आज अचानक..."

"कुछ भी नहीं, मां, कुछ नहीं! आप सिर्फ़ जल्दी न करें! हमें धैर्य रखना होगा। कल तक आप एक शब्द भी नहीं पूछेंगी। आइये, फ़िलहाल सूरज डूबने तक चेरियां छांट लें।"

"लेकिन तुम अक्ल से काम लोगी न?"

"जी, मैं बड़ी अक्लमंद हूं!" जेम्मा ने रोब से सिर हिला दिया। और सुर्ख चेहरे के ऊपर चेरियों के गुच्छे उठा-उठाकर उन्हें बांधने लगी। उसने अपने आंसू पोंछे नहीं थे, वे उसके गालों पर खुद ही सूख गए थे।

सानिन लगभग दौड़ता हुआ होटल पहुचा। वह अच्छी तरह महसूस कर रहा था कि यहीं, सिर्फ़ यहीं, अकेले में ही वह समझ पायेगा कि आखिर हो क्या रहा है उसके साथ। और सचमुच, जैसे ही वह अपने कमरे में आया, मेज़ के पास बैठ गया और उस पर कोहनियां टिकाकर हथेलियों से चेहरे को छिपाये एक टीस के साथ बुझी आवाज़ में चीख पड़ा: "मैं उसे प्यार करता हूं, पागलों की तरह प्यार करता हूं!" और वह भीतर ही भीतर कोयले की तरह दहक उठा, जिसकी बुझी राख की परत फूंक मारकर उड़ा दी गई हो। वह क्षण भर में यह समझने की शक्ति खो बैठा कि कैसे उसके साथ इतने पास बैठा रहा... उसके साथ! उसके साथ बातें करता रहा, लेकिन यह एहसास नहीं कर सका कि वह उसके कपड़ों के छोर पर भी फ़िदा है, और जैसा कि युवा लोग कहते हैं "उसके कदमों पर जान देने पर आमादा है।" बगीचे में हुई पिछली मुलाकात निर्णायक थी। इस समय जब वह उसके बारे में सोच रहा था, वह उसकी कल्पना तारों के प्रकाश में फहरती ज़ुल्फ़ोंवाली जेम्मा के साथ नहीं कर रहा था, वह उसे बेंच पर बैठी हुई देख रहा था, कि कैसे वह अपने सिर से हैट उतार फेंकती है, कैसे उसे विश्वास के साथ एकटक देखती है... एक झनकती आवाज़, एक प्रेम-प्यास उसकी नस-नस में दौड़ गई। उसे गुलाब के फूल की याद आई, जिसे वह आज तीसरे दिन भी जेब में रखे हुए था: उसने उसे निकाला और पागलों की तरह कसकर अपने होंठों से लगा लिया और अनायास ही एक टीस से चौंक भी पड़ा। अब न तो वह तर्क-वितर्क कर रहा था, न कुछ समझ पा रहा था, न कोई आशा थी, न कोई पूर्वाभास ही था; वह अपने संपूर्ण अतीत से कट चुका था और कहीं दूर छलांग लगा चुका था अपने एकाकी, कुंवारे जीवन के मनहूस तट से उछलकर उस उल्लसित, उफनते शक्तिशाली प्रवाह में जा गिरा था—उसे कोई गम नहीं था, उसकी चिंता भी नहीं थी कहां वह उसे बहा ले जायेगा, कहीं चट्टान पर तो नहीं पटक देगा! ये उलांद के प्रेम-गीत की

मंद लय नहीं थी, जो हाल में उसे थपकियां दिया करती थीं... ये प्रचंड तरंगें थीं! वे उफनती हुई आगे दौड़ रही थीं—और वह उन्हीं के साथ बहा जा रहा था!

उसने कागज़ का एक पन्ना लिया और बिना अटके, करीब एक सांस में यह पत्र लिख गया:

"प्रिय जेम्मा!

आप जानती हैं कि आपको कैसी सलाह देने का भार मैंने लिया है, आप यह भी जानती हैं कि आपकी मां क्या चाहती हैं और उन्होंने मुझसे किस बात का अनुरोध किया है, लेकिन एक बात जो आप नहीं जानतीं, और जिसे आपको बता देना मेरा कर्त्तव्य है—मैं आपको प्यार करता हूं, अपने हृदय की सारी लालसा से प्यार करता हूं, जिसने पहली बार प्यार किया है! यह आग मुझमें अचानक ही भड़क उठी है, लेकिन ऐसी तीव्रता से कि व्यक्त करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं!! जब आपकी मां ने मेरे पास आकर अनुरोध किया था, उस समय वह आग मुझमें सुलग ही रही थी, नहीं तो मैं एक ईमानदार आदमी होने के नाते उनके अनुरोध को नकार गया होता... और अभी जो मैं आपके समक्ष अपने प्रेम को स्वीकार कर रहा हूं, यह भी ईमानदारी से ही कर रहा हूं। आपको यह जान लेना चाहिये कि किससे आपका वास्ता पड़ा है—हमारे आपके बीच कोई गलतफ़हमी नहीं होनी चाहिये। आप देख रही हैं कि मैं आपको कोई सलाह देने के योग्य नहीं हूं... मैं आपको प्यार करता हूं, प्यार, प्यार—और इसके अलावा मेरे पास कुछ भी नहीं है—न तो मन में, न मस्तिष्क में!!

दमी० सानिन।"

पत्र को मोड़कर और उसे लिफ़ाफ़े में बन्द कर सानिन वेटर को बुलाना ही चाहता था कि पत्र उसके हाथ भेज दें... "नहीं! इस तरह ठीक नहीं होगा... एमील के हाथ भेजें? लेकिन दुकान जाना और दूसरों के बीच उसे ढूंढ़ना भी अच्छा नहीं होगा। वैसे रात भी हो चुकी है, वह शायद दुकान से जा भी चुका होगा।"

लेकिन इस तरह से सोचते-विचारते सानिन ने हैट लगा ही लिया और सड़क पर निकल आया, एक मोड़ पार किया, दूसरा मोड़ पार किया – और मारे खुशी के उसकी बांछें खिल गईं: सामने एमील खड़ा था। बगल में थैला दबाये और हाथ में कागज़ के पैकेट लिये किशोर उत्साही घर की जल्दी में था।

"ठीक ही कहते हैं लोग कि हर प्यार करनेवाले का अपना सितारा होता है," सानिन ने यह सोचते हुए एमील को पुकार लिया।

वह मुड़ा और तुरंत उसकी ओर दौड़ पड़ा।

सानिन ने उसे बहुत खुश होने नहीं दिया, उसे पत्र देकर समझाया कि किसे और कैसे देना है... एमोल ने गौर से उसकी बात सुनी।

"कोई दूसरा नहीं देखे?" उसने चेहरे पर रोचक गूढ़ रहस्य का भाव छलकाते हुए पूछा, मानो कहना चाहता हो: "अरे, हम तो समझते हैं, यार, बात क्या है!"

"हां, मेरे दोस्त," सानिन थोड़ा घबड़ाते हुए बोल पड़ा, लेकिन एमील की गर्दन उसने थपथपा दी... "और यदि उत्तर होगा... मुझ तक पहुचा देना, क्यों? मैं घर पर रहूंगा।"

"इसके बारे में निश्चिंत रहें!" एमील उल्लसित स्वर में फुसफुसाया और तेज़ी से दौड़ पड़ा; दौड़ते हुए उसने सिर हिलाया।

सानिन होटल लौट आया और बत्ती जलाये बिना सोफ़े पर लेट गया, हथेलियां सिर के नीचे रखकर प्यार की अनुभूतियों में खो गया, जिसका उसे अभी-अभी बोध हुआ था; उनका वर्णन करने की कोई ज़रूरत नहीं है: जिसने अनुभव किया है, वह इसकी कसक और मिठास को जानता ही होगा, जिसने अनुभव नहीं किया है, उसे समझाया ही नहीं जा सकता।

दरवाज़ा खुला और एमील दिखाई दिया।

"ले आया," उसने फुसफुसाकर कहा, "यह रहा उत्तर!"

उसने एक चौपरता कागज़ दिखाते हुए उसे सिर के ऊपर उठा लिया।

सानिन ने सोफ़े से उछलकर उसे एमील के हाथों से छीन लिया। यहां उमड़ती भावनाओं को छिपाने का समय नहीं था, न ही लिहाज़ करने का – इस लड़के के सामने भी नहीं, जो उसका भाई था। वह एमील का लिहाज़ भी अवश्य करता, स्वयं पर ज़ोर डालकर भी, यदि वह कर पाता!

वह खिड़की के पास आया और होटल के ठीक सामने खंभे से लटकती सड़क की बत्ती में निम्न पंक्तियों को जल्दी से पढ़ गया:

"मैं आपसे अनुरोध करती हूं, विनती करती हूं – **कल दिन भर आप हमारे यहां न आइये।** मेरे लिए यह ज़रूरी है, बहुत ज़रूरी, – फिर सब फ़ैसला हो जायेगा। मैं जानती हूं कि आप मुझे इनकार नहीं करेंगे, क्योंकि...

जेम्मा।"

सानिन इस पत्र को दो बार पढ़ गया – कितनी रोमांचक, प्रिय और ख़ूबसूरत लगी थी उसकी लिखावट! उसने थोड़ा सोचा और एमील की ओर मुड़कर, जो यह दिखाने के लिए कि वह कितना भला लड़का है, दीवार की ओर मुंह करके उसे नाख़ून से कुरेद रहा था, – ज़ोर से उसका नाम लेकर पुकारा।

एमील तुरंत सानिन के पास आ गया:

"सुनिये, मित्रवर..."

"Monsieur द्मीत्री," एमील ने बीच में ही तुनकती आवाज़ में टोक दिया, "आप मुझे 'तुम' क्यों नहीं कहते?"

सानिन हंस पड़ा।

"अच्छा, अच्छा। सुनो, दोस्त (एमील ख़ुशी से थोड़ा उछल भी पड़ा था), सुनो: वहां, तुम समझते हो न, वहां तुम कहना कि हुक्म की तामील होगी (एमील ने होंठ भींच लिये और

गंभीरता से हामी भर दी), और तुम तुम्हारा क्या प्रोग्राम है कल का ?"

"मेरा? कल का प्रोग्राम? आखिर आप मुझ से चाहते क्या हैं ?"

"यदि संभव हो, तो सुबह मेरे पास चले आना, कुछ तड़के ही, फिर हम शाम तक फ़्रैंकफ़र्ट से बाहर सैर करेंगे... तुम्हारा इरादा है न?"

एमील पुनः उछल पड़ा।

"क्या कहते हैं, इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है? आपके साथ सैर करना—यह तो बहुत ही मज़ेदार होगा! ज़रूर आऊंगा!"

"और अगर तुम्हें आने ही नहीं देंगे ?"

"आने देंगे!"

"सुनो... वहां यह मत कहना कि मैंने तुम्हें पूरे दिन के लिए बुलाया है।"

"कहने की ज़रूरत ही क्या है? यूं ही चला आऊंगा! आखिर इसमें दिक्कत ही क्या है!"

एमील ने सानिन को कसकर चूम लिया और घर की ओर दौड़ गया।

सानिन देर तक कमरे में चहलकदमी करता रहा। देर से उसे नींद आई। वह उन्हीं टीस और माधुर्य से भरी अनुभूतियों में लीन रहा, नये जीवन के समक्ष उन्हीं उल्लासपूर्ण उमंगों की अनुभूतियों में। सानिन बहुत संतुष्ट था कि कल एमील को बुलाने का खयाल आ गया था; उसकी शक्ल-सूरत बहन से मिलती-जुलती थी। "उसकी याद आती रहेगी," सानिन ने मन में सोचा।

लेकिन सबसे ज़्यादा उसे इस बात पर आश्चर्य था कि कल वह आज की तरह क्यों नहीं हो सका था? उसे लगा कि वह जेम्मा को युग-युग से प्यार करता आ रहा था—और ठीक उसी तरह प्यार करता रहा था, जैसे आज।

दूसरे दिन आठ बजे सुबह एमील तर्तालिया को चेन से पकड़े सानिन के पास पहुंच गया। यदि वह जर्मन माता पिता का पुत्र होता, तो भी इतने ठीक समय का पाबंद नही होता। घर में उसने झूठ बोल दिया था: बताया कि नाश्ते के समय तक सानिन के साथ घूमेगा, फिर दुकान चला जाएगा। जब तक सानिन कपड़े बदलता रहा, एमील ने कुछ हिचकिचाहट के साथ ही सही, जेम्मा और क्लूबेर के मनमुटाव के बारे में कहना चाहा; लेकिन सानिन उत्तर में गम्भीरता से चुप्पी साधे रहा, और एमील दिखावा कर रहा था कि इस महत्वपूर्ण बात को क्यों इतनी सहजता से नहीं लेना चाहिए, और इस बात की ओर लौट भी नहीं रहा था—सिर्फ़ कभी-कभी ध्यानमग्न और यहां तक कि कठोर मुद्रा बना लेता था।

कॉफ़ी पीने के बाद दोनों मित्र रवाना हो गए—ज़ाहिर है कि पैदल ही—गाउज़ेन की ओर, यह एक छोटा-सा गांव था, जो जंगलों से घिरा था और फ़्रैंकफ़र्ट से कुछ दूर था। सारी टाउनुस पर्वत-शृंखला वहां से बिल्कुल साफ़-साफ़ दिखती थी, मानो हथेली पर रखी हो। मौसम बड़ा सुहाना था; सूरज चमक रहा था, गर्मी दे रहा था, लेकिन झुलसा नहीं रहा था; ताज़ी हवा हरी पत्तियों को तेज़ी से झकझोर रही थी; धरती पर ऊंचे उड़ते गोल-मटोल बादलों की परछाइयां मंथर गति से फिसल रही थीं। दोनों जल्द ही शहर से बाहर निकल आये और उमंग के साथ साफ़-सुथरी सड़क पर चल पड़े। जंगल में पहुंचे—वहां देर तक सैर करते रहे; फिर उन्होंने गांव की एक सराय में भर पेट नाश्ता किया; इसके बाद पहाड़ पर चढ़े, मनोहर दृश्यों का आनंद लेते रहे; वे ऊपर से पत्थर लुढ़काते और उनका खरगोश की तरह विचित्र हास्यास्पद ढंग से उछलना देखकर तालियां पीटते रहे; यह खेल तब तक चला जब तक कि नीचे गुज़रता एक आदमी, जो उन्हें दिखा नहीं था, ऊंची आवाज़ में गालियां नहीं देने लगा; फिर वे पीले-बैंगनी रंग की सूखी मुलायम काई पर लेटे रहे; इसके बाद उन्होंने दूसरी सराय में बियर पी, फिर

वे ढलान पर जा-जा कर दौड़ते, बाज़ी लगाकर छलांग लगाते कि कौन ज़्यादा दूर तक पहुंचता है। उन्होंने गूंजनेवाले एक स्थान की तलाश की, फिर चीख-चीखकर प्रतिध्वनि करते रहे; कभी गाना गाते, तो कभी "आऊ" की चीख निकालते। फिर उन्होंने कुश्ती लड़ी, फ़र्न की टहनियां तोड़-तोड़कर अपने-अपने हैटों में खोंसकर सजा लीं, यहां तक कि नाचे भी। तर्तालिया ने भी जितना हो सकता था और जितना कर सकता था, इन खेलों में हिस्सा लिया: यह सच है कि उसने पत्थर नहीं फेंके, लेकिन वह खुद उनके पीछे पलटनियां खाते हुए लुढ़क पड़ता था, जब दोनों व्यक्ति गाते थे, तो वह सुर में सुर मिलाकर ऊ... ऊ... का राग अलापने लगता था; उसने बियर भी पी, यद्यपि स्पष्ट था कि उसे यह बहुत पसंद नहीं आई: यह कला उसे एक विद्यार्थी ने सिखा दी थी, जो कभी उसका मालिक हुआ करता था। वैसे, वह एमील की बात ठीक से नहीं सुनता था–उसके मालिक पंतालिओने की बात दूसरी थी; और जब एमील उसे "बोलने" या "छींकने" की आज्ञा देता था, तो वह सिर्फ़ दुम हिला देता था और जीभ को नली की तरह मोड़कर बाहर निकालता था।

दोनों बातें भी करते रहे। सैर की शुरुआत में ही सानिन ने उम्र में बड़े और अधिक समझदार होने के नाते बात चला दी थी कि नियति या भाग्य का लेख क्या है, आदमी के जीवन लक्ष्य का अर्थ क्या है, वह कैसा होना चाहिए; लेकिन बातचीत जल्द ही अपेक्षाकृत कम गंभीर दिशा में चल पड़ी। एमील अपने मित्र और अभिभावक से रूस के बारे में पूछने लगा, कि वहां द्वंद्वयुद्ध कैसे लड़ते हैं, वहां की स्त्रियां सुन्दर हैं या नहीं, क्या रूसी जल्दी सीखी जा सकती है, और यह कि जब उस अफ़सर ने उस पर निशाना लगाया था, तब उसने कैसा महसूस किया था। सानिन भी एमील से उसके पिता के बारे में, मां के बारे में, पूरे परिवार के बारे में पूछ लिया करता था, लेकिन हर तरह से यही कोशिश करता था कि जेम्मा का नाम न लिया जाय। सच पूछें तो वह उसके बारे में सोच भी नहीं रहा था–वह सोच रहा था आनेवाले रहस्यमय कल के बारे में, जो उसके लिये अनदेखा, अभूतपूर्व सौभाग्य लानेवाला था! उसकी अंतर्दृष्टि

के सामने हल्के-हल्के लहराता हुआ एक झीना पर्दा लटक रहा था, – और इस परदे के पार वह महसूस कर रहा था महसूस कर रहा था कि एक युवा, निश्चल, दैवी मुखड़े की उपस्थिति को, जिसके होंठों पर प्यारी मुस्कान थी, जिसकी पलकें गंभीरता से, कृत्रिम गंभीरता से झुकी हुई थीं। और यह मुखड़ा, जेम्मा का मुखड़ा नहीं था, खुद सौभाग्य का मुखड़ा था! और अब आखिर उसका वक्त आ गया था, पर्दा उठ रहा था, होंठ खुल रहे थे, पलकें उठ रही थीं – उसकी दिव्य दृष्टि उस पर पड़ी – और फिर प्रखर सूर्य की भांति प्रकाश, और खुशी, और अनंत उमंगें!! वह इसी कल के बारे में सोच रहा था और उसकी अंतरात्मा रह-रहकर स्तंभित हो जाती थी – बार-बार जन्म लेती आशा की स्तब्धकारी टीस के कारण!

और यह आशा, यह टीस किसी भी तरह बाधक नहीं थी। वह उसकी हर गति के साथ थी, लेकिन किसी भी सूरत में उसके लिए बाधक नहीं थी। वह एमील के साथ एक तीसरी सराय में दिन का खाना खाने में भी बाधक नहीं थी। सिर्फ़ रह-रहकर क्षणिक बिजली की तरह एक विचार कौंध उठता था कि काश दुनिया में किसी अन्य को भी इसका पता होता??!! यह टीस भोजन के बाद एमील के साथ "उछल मेंढकी" का खेल खेलने में भी बाधक नहीं हो रही थी। यह खेल लम्बे-चौड़े हरे-भरे मैदान में चल रहा था... सानिन के आश्चर्य और घबराहट का ठिकाना न रहा, जब तर्तालिया की गुस्सैल भौंक के बीच उसकी नज़र अचानक हरे मैदान के पार दो अफ़सरों पर पड़ी, जिन्हें पहचानने में उसे देर नहीं हुई – एक तो कल का प्रतिद्वंद्वी फ़ोन ड्योनगोफ़ था और दूसरा – उसका साक्षी फ़ोन रिख़्टेर। मज़े की बात तो यह थी कि वह उकड़ूं बैठे एमील के पार छलांग लगा रहा था – चुस्ती से टांगें फैलाये, एक चिड़िया की तरह उड़ता हुआ। दोनों ही मोनोक्युलर चश्मे लगाये उसे देखते हुए मंद-मंद मुस्करा रहे थे... सानिन पैरों के बल कूदा, मुड़ा और कोट तेज़ी से पहनकर एमील से कुछ कहा और उसने भी जल्दी-जल्दी अपनी जैकेट पहनी, फिर दोनों तुरन्त वहां से चल पड़े।

फ़्रैंकफ़र्ट वे देर से पहुंचे।

"मुझे डांट पड़ेगी," एमील ने सानिन से विदा लेते समय कहा, "लेकिन इससे क्या होता है! दिन तो बढ़िया बीता, कितना प्यारा!"

होटल लौटने पर सानिन को जेम्मा का एक छोटा-सा पत्र मिला। उसने मिलने का समय निश्चित किया था – अगले दिन, सात बजे सुबह, फ़्रैंकफ़र्ट की एक पार्क में।

उसका हृदय चकित हो उठा! वह कितना खुश था कि उसने निर्विरोध उसकी बात मान ली थी! और, हे भगवान, क्या-क्या आशाएं दिलाई थीं... इस एक अपूर्व दिन ने, निश्चय ही इस कल के दिन ने!

उसकी नज़र जेम्मा का संदेश लानेवाले उस पत्र से हट नहीं रही थी। पत्र के अंत में अंकित उसके नाम के प्रथम वर्ण की लम्बी सुडौल दुम ने उसे उसकी सुन्दर उंगलियों की, उसके नाजुक हाथ की याद दिला दी... उसने सोचा कि इस हाथ का उसने एक बार भी अपने होंठों से स्पर्श नहीं किया था... "इतालवी लड़कियां," उसने सोचा, "तरह-तरह की अफ़वाहों के बावजूद लजालु और संयत होती हैं... और जेम्मा की तो बात ही क्या! महारानी... देवी... अछूती और निष्कलंक संगमरमर..."

लेकिन समय भी आयेगा – वह दूर नहीं है...

उस रात फ़्रैंकफ़र्ट में एक सुखी आदमी था... वह सोया हुआ था, लेकिन वह कवि के शब्दों में अपने बारे में कह सकता था:

"मैं सोया हूं... लेकिन सजग हृदय मेरा नहीं सो रहा..."

और वह धड़क भी रहा था इतनी सहजता से, जैसे गर्मी की धूप से नहाये फूल से सटी हुई तितली अपने पंख फड़फड़ाती है।

27

सानिन पांच बजे सोकर उठा, छह बजे कपड़े पहनकर तैयार हो गया, साढ़े छह बजे से पार्क में चहलकदमी करने लगा, छोटे-से ग्रीष्म-गृह को नज़र में रखते हुए, जिसका ज़िक्र जेम्मा ने अपने पत्र में किया था।

सुबह शांत और तप्त थी, धुंधलका छाया हुआ था। ऐसा लगता था कि बस, अभी ही वर्षा होनेवाली है; आगे की ओर बढ़ी हुई हथेली पर उसका अहसास नहीं हो पा रहा था, और सिर्फ़ कोट की आस्तीन को ध्यान से देखने पर ही नन्हे-नन्हे मनके जैसी बूंदें दिख जाती थीं; लेकिन शीघ्र ही ये झींसियां थम गईं। हवा चलने का नाम तक नहीं ले रही थी। हर ध्वनि हवा के झोंके से उड़ नहीं रही थी, बल्कि हर तरफ़ गूंज रही थी; दूर कहीं सफ़ेद-सी भाप एकत्र हो रही थी। हवा में माइग्नोनेट और कीकर के फूलों की भीनी-भीनी सुगंध फैल रही थी।

दुकानें अभी खुली न थीं, लेकिन राहगीर सड़कों पर दिखने लगे थे; कभी किसी घोड़ागाड़ी के चलने की खड़खड़ाहट सुनाई दे जाती थी... पार्क में कोई नहीं था, माली अपने फ़ावड़े से रास्ते की घास आहिस्ते-आहिस्ते छील रहा था, एक मरियल बुढ़िया बनात का काला अंगरखा पहने उद्यान-पथ पर लंगड़ाते हुए चल रही थी। सानिन पलांश के लिए भी इस जीव को जेम्मा नहीं समझा—लेकिन फिर भी उसका हृदय उछल पड़ा और वह उस काले धब्बे को उस क्षण तक ध्यान से देखता रहा, जब तक कि वह नज़र से ओझल नहीं हो गया।

चर्च-टावर की घड़ी ने सात बजाये।

सानिन ठिठक गया। तो क्या वह नहीं आएगी? एक ठण्डी कंपकंपाहट उसके अंग-अंग में दौड़ गई। पलांश में ही यह कंपकंपाहट फिर उसके जिस्म में महसूस हुई—लेकिन इस बार दूसरी वजह से—सानिन को अपने पीछे की ओर हलके कदमों की आहट और नारी वस्त्रों की धीमी सरसराहट सुनाई दी। उसने मुड़कर देखा—यह जेम्मा थी!

जेम्मा उद्यान-पथ पर उसके पीछे-पीछे चलती रही। वह भूरा

लबादा पहने थी और गहरे रंग का छोटा-सा हैट लगाए थी। उसने सानिन को देखकर चेहरा एक ओर घुमा लिया। और जब उसके बराबर आ गई, तो जल्दी से आगे बढ़ चली।

"जेम्मा," उसने धीरे से पुकारा, आवाज़ बमुश्किल सुनाई दी।

उसने धीरे से सिर हिला दिया और आगे बढ़ती रही। अब वह उसके पीछे-पीछे चल रहा था।

वह ज़ोर-ज़ोर से हांफ रहा था। उसके पैर जवाब दे चुके थे।

जेम्मा ग्रीष्म-गृह को पार करके दाहिनी ओर मुड़ गई और फ़व्वारे के एक छोटे, उथले हौज़ के पास से गुज़री, जिसमें एक गौरेया छपाके लगा रही थी; ऊंची बकाइन की झाड़ियों के पार एक बेंच पर वह बैठ गई। स्थान आरामदायक और आड़ में था। सानिन उसके पास ही बैठ गया।

एक मिनट बीत गया, लेकिन दोनों चुपचाप बैठे रहे। यहां तक कि जेम्मा ने उसे देखा तक नहीं, और वह उसके चेहरे के बजाय उन आबद्ध हाथों को देख रहा था, जिनमें वह एक छोटे-से छाते को दबाए हुए थी। कहने को था ही क्या? ऐसे कौन-से शब्द कहे जा सकते थे, जो इतने अर्थवान होते और उनकी इस तनहा मुलाकात के सामने ठहर पाते, जो परस्पर उन्हें इतनी सुबह, इतने नज़दीक ला रही थी।

"आप... मुझसे नाराज़ तो नहीं हैं?" अन्त में सानिन ने ही मौन तोड़ते हुए कहा।

सानिन के लिए इससे कोई अधिक मूर्खतापूर्ण बात कह पाना मुश्किल था... यह उसने मन ही मन स्वीकार कर लिया था... पर कुछ भी कहें, कम से कम खामोशी तो भंग हुई।

"मैं?" उसने प्रत्युत्तर में कहा। "लेकिन किसलिए? नहीं।"

"आपको मुझ पर विश्वास है न?" उसने बात संभालते हुए कहा।

"वही न, जिसका आपने पत्र में ज़िक्र किया था?"

"हां।"

जेम्मा ने सिर झुका लिया और मौन रही। छाता उसके

हाथों से फिसल पड़ा। उसने गिरने से पहले ही उसे झट से पकड़ लिया।

"ओह, आप मुझ पर यकीन कीजिये, मेरी उस बात पर विश्वास कीजिये, जो मैंने आपको लिखी थी," सानिन ने उल्लसित स्वर में कहा। सहसा उसका सारा संकोच मिट चुका था और वह अब एक जोशीले अन्दाज़ में बोल रहा था "दुनिया में यदि कोई सत्य है, पवित्र और अटल सत्य है, तो वह यही है कि मैं आपको प्यार करता हूं, आपको हृदय से चाहता हूं!"

उसने क्षण भर के लिए उसे तिरछी नज़र से देखा कि उसका छाता फिर गिरते-गिरते बचा।

"मुझ पर विश्वास कीजिये! मुझ पर विश्वास कीजिये, जेम्मा!" वह उसकी ओर बांहें फैलाए विनीत स्वर में कह रहा था, लेकिन उसे छूने का साहस नहीं कर पा रहा था। "मैं आपको कैसे विश्वास दिलाऊं?"

जेम्मा ने फिर से उसे देखा।

"एक बात बताइए, monsieur Dimitri," उसने कहा, "उस दिन जब आप मुझे समझाने के लिए आए थे – उस वक्त शायद आप खुद नहीं जानते थे... न तो महसूस ही करते थे..."

"मैं महसूस तो करता था," सानिन ने बात का रुख पकड़ते हुए कहा, "लेकिन इस ओर सचेत नहीं था। मैं तो उसी क्षण से आपको प्यार करता हूं, जब से मैंने पहली बार आपको देखा था – लेकिन मैं तुरंत यह महसूस न कर सका कि आप मेरे लिए क्या थीं! और यह भी मैंने सुना कि आपकी सगाई हो चुकी है... जहां तक आपकी मां के अनुरोध का प्रश्न है, तो पहली बात यह कि मैं इनकार कैसे कर सकता था? और दूसरी बात यह कि मैंने, लगता है कि उनका आदेश आप तक इस तरह पहुंचाया है कि आप खुद ही अन्दाज़ लगा लें..."

किन्हीं भारी कदमों की आहट सुनाई दी। एक स्थूलकाय साहबनुमा आदमी कन्धे पर सफ़री बैग लटकाए, शायद कोई

विदेशी था, बकायन की झाड़ी के पीछे से बाहर निकला, और उसने बड़ी बेतकल्लुफ़ नज़र से बेंच पर बैठे हुए इस युगल को देखा, ऊंची आवाज़ में खांसा और आगे बढ़ गया।

"आपकी मां ने मुझे बताया था," कदमों की धमधमाहट थमते ही सानिन ने बात का सिलसिला जारी रखते हुए कहा, "कि आपके इनकार करने से बदनामी होगी (जेम्मा ने भौंहें सिकोड़ लीं); कि किसी हद तक इस अप्रिय घटना के लिए मैं खुद ज़िम्मेदार था, और यह कि... नतीजतन... मुझे... आपको समझाने का एक निश्चित दायित्व निभाना ही था कि अपने मंगेतर मिस्टर क्लूबेर से आप रिश्ता न तोड़ें..."

"Monsieur Dimitri," जेम्मा ने अपने बालों पर हाथ फेरते हुए कहा, "कृपया, मिस्टर क्लूबेर को मेरा मंगेतर अब न कहें। वह मेरा पति कभी नहीं बनेगा। मैंने इनकार कर दिया।"

"आपने इनकार कर दिया? लेकिन कब?"

"कल।"

"खुद उन्हें?"

"हां, उन्हें। अपने घर पर ही! वह हमारे यहां आए थे।"

"जेम्मा! यानी कि आप मुझे प्यार करती हैं?"

उसने सानिन की ओर मुड़कर देखा।

"वरना... मैं यहां क्यों आई होती?" उसने फुसफुसाते हुए कहा और उसके दोनों हाथ बेंच पर फिसल पड़े।

सानिन ने उसकी अशक्त पड़ी हथेलियों को उठाया और अपनी आंखों से, अपने होंठों से कसकर लगा लिया... अब वह झीना-सा पर्दा उठा था, जो हाल ही में उसकी कल्पना में दिखा था! यही है सौभाग्य, यही है आलोकमान मुखड़ा उसके सौभाग्य का!

उसने ज़रा-सा सिर उठाया और जेम्मा को देखा—सीधी और निस्संकोच दृष्टि से। उसने भी उसे देखा—कुछ ऊपर से, पलकें झुकाए हुए। उसकी अधखुली आंखें एक झीनी आह्लादक आर्द्रता से झिलमिला सी रही थीं। और चेहरा मुस्करा नहीं रहा था...

नहीं! वह हंस रहा था, एक ध्वनिहीन सही, लेकिन वह भी आह्लादक हंसी से।

उसने अपने सीने की ओर उसे खींचना चाहा, लेकिन वह दूर खिसक गई–उसी तरह ध्वनिहीन हंसी हंसते और इनकार में सिर हिलाते हुए। "ठहरिये ज़रा"–मानो यही उसकी खुशनसीब आंखें कह रही थीं।

"ओह, जेम्मा!" सहसा सानिन के मुंह से निकल पड़ा, "क्या मैं यह सोच सकता था कि तुम (उसका हृदय वीणा के तार की तरह झंकृत हो उठा, जब उसके होंठों ने पहली बार "तुम" कहकर उसे संबोधित किया), कि तुम मुझसे प्यार करोगी!"

"मुझे खुद इसकी उम्मीद नहीं थी," जेम्मा ने मंद स्वर में कहा।

"क्या मैं सोच सकता था," सानिन कहता गया, "फ़्रैंकफ़र्ट आते समय, जहां मुझे सिर्फ़ कुछ घण्टे ठहरना था, क्या मैं सोच सकता था कि यहीं मुझे सारी ज़िन्दगी की अमूल्य निधियां मिल जायेंगी!"

"सारी ज़िन्दगी की? सच?" जेम्मा ने पूछा।

"सारी ज़िन्दगी की, युग-युग की, अनंत काल की!" नये आवेश से सानिन फूट पड़ा।

माली का फ़ावड़ा जिस बेंच पर वे बैठे थे, उससे दो कदम की दूरी पर झनझना रहा था।

"घर चलें," जेम्मा ने फुसफुसाकर कहा। "साथ ही चलते हैं–मन है?"

यदि वह इस क्षण उससे कहती: "समुद्र में कूद जाओ–मन है?"–वह अपना अन्तिम शब्द पूरा भी नहीं कर पाती कि सानिन अथाह समुद्र में छलांग लगा चुका होता।

वे दोनों साथ-साथ पार्क से निकले और घर की ओर चल पड़े, शहर की गलियों से होकर नहीं, उनसे कतरा-कतराकर।

सानिन कभी जेम्मा के साथ कदम मिलाकर चलता, तो कभी कुछ पीछे हो लेता, लेकिन उसकी दृष्टि अनवरत उसी पर टिकी हुई थी और उसका मुस्कराना जारी था। और वह कभी तो जैसे जल्दी-जल्दी चलती थी... और कभी जैसे ठिठक जाती थी। सच पूछिये, तो वे दोनों, एक पूरी तरह विवर्ण और दूसरी घबराहट से एकदम सुर्ख, जैसे मदहोश चले जा रहे थे। जो कुछ उनके बीच हुआ था—एक आत्मा का दूसरी आत्मा को समर्पण—वह इतना प्रचंड था, इतना नवीन और भयाकुल करनेवाला था, इतना हठात उनके जीवन में सब कुछ बदल गया था, उलट-फेर हो गया था कि वे दोनों होश में नहीं आ पा रहे थे, सिर्फ़ यह महसूस कर रहे थे कि एक बवंडर की गिरफ़्त में आ गये है, वैसे ही बवंडर की गिरफ़्त में, जिसने उस रात उन्हें लगभग आलिंगनबद्ध कर दिया था। सानिन चलते-चलते महसूस कर रहा था कि अब वह जेम्मा को एक दूसरी दृष्टि से देख रहा है: उसे एक ही क्षण में उसकी चाल और चेष्टा में कई विशेषताएं नज़र आने लगीं—और हे भगवान! उसके लिए वे कितनी असीम प्रिय थीं! और जेम्मा भी उसकी नज़र को महसूस कर रही थी।

सानिन और वह पहली बार प्रेम-पाश में बंधे थे; प्रथम प्रेम के सभी जादू उन पर चल रहे थे। प्रथम प्रेम—यह वही क्रांति है: जब नपा-तुला एकसुरा जीवन क्षण भर में अव्यवस्थित हो जाता है, यौवन की नाकेबन्दी शुरू हो जाती है, उसका चटक झंडा ऊंचा फहरने लगता है और आगे चाहे जो हो—नव जीवन या मृत्यु—वह सबको खुशी के पैगाम भेजती जाती है।

"अरे? यह तो अपना बूढ़ा लगता है?" सानिन ने लबादे से ढंकी हुई आकृति की ओर इशारा करते हुए कहा, जो तेजी से एक ओर खिसक रही थी कि कहीं उस पर उनकी निगाह न पड़े। खुशियों के अतिरेक में सानिन को जेम्मा से प्यार के नहीं, किसी अन्य चीज़ के बारे में बात करने की आवश्यकता

महसूस हो रही थी—प्यार की बात •तो तय हो चुकी थी, वह पवित्र थी।

"हां, यह पंतालिओने है," खुशी और उल्लास से जेम्मा ने जवाब दिया, "शायद घर से ही मेरा पीछा कर रहा है। सारा दिन मेरी हर कदम पर निगरानी कर रहा था... उसे अनुमान हो गया है!"

"उसे अनुमान हो गया है!" उमंग से सानिन ने भी दोहराया। जेम्मा ऐसी कौन-सी बात कह सकती थी, जिससे वह उमंग में नहीं आता?

फिर उसने जेम्मा से सविस्तार बताने का अनुरोध किया कि कल क्या-क्या हुआ था।

वह मुस्कराती हुई तत्काल बताने लगी, कभी हड़बड़ाती, कभी घटनाओं का क्रम बिगाड़ देती, कभी हल्की उसांसें लेती, बीच-बीच में सानिन के साथ अपनी उल्लसित नज़रें मिला लेती। उसने बताया कि कैसे मां उस बातचीत के बाद तीन दिन से उसे मना रही थी, लेकिन कोई परिणाम न निकला; कैसे वह फ़ाऊ लेनोरे से यह वादा करके छुटकारा पा गई कि वह चौबीस घण्टे में अपना निर्णय बता देगी; कैसे उसने यह अवधि मांगी और कितना यह कठिन काम निकला; कैसे अचानक क्लूबेर महाशय आ गए—पहले से भी अधिक घमंडी और बने-ठने; कैसे उसने अपना गुस्सा प्रगट किया कि इस अनजान रूसी का यह काम—आशय तुम्हारे द्वंद्वयुद्ध से था—कितना बचकाना और उसके लिए अक्षम्य अपमानजनक था (उसने इन्हीं शब्दों में कहा था) और कैसे यह कहने लगा कि उसे हमारे यहां आने की अनुमति न दी जाए। "क्योंकि," उसने कहा,—और यहां जेम्मा कुछ उसकी आवाज़ और चाल की नकल करने लगी, "क्योंकि इससे मेरी इज़्ज़त पर धब्बा लगता है; जैसे मैं अपनी मंगेतर का पक्ष नहीं ले सकता, यदि इसे आवश्यक और उपयोगी समझता! कल सारे फ़्रैंकफ़र्ट में अफ़वाह फैल जाएगी कि मेरी मंगेतर के लिए अफ़सर से एक पराये आदमी ने द्वंद्व किया—बताइये न, यह सब क्या है? इससे मेरी बदनामी हो जाएगी!" मां उसकी बात से सहमत हो रही थी—देखो न!—लेकिन मैंने तभी अचानक कहा

कि वह बेकार ही अपनी इज़्ज़त और अपने नाम के लिए परेशान हो रहा है, बेकार ही अपनी **मंगेतर** से जुड़ी अफ़वाहों को लेकर अपमानित हो रहा है—क्योंकि अब मैं उसकी मंगेतर नहीं हूं और कभी भी उसकी पत्नी नहीं बनूंगी! सच पूछें, तो पहले मैं आपसे... तुमसे बात कर लेना चाहती थी, और तब जाकर ही उसे इनकार करना चाहती थी; लेकिन वह इस बीच आ गया... और मैं खुद को काबू में नहीं रख सकी। मां तो भय से चीख पड़ी थी, और मैं दूसरे कमरे में चली गई, उसकी अंगूठी उठा लाई और उसे वापस कर दी। तुमने ध्यान न दिया था कि मैं उसे दो दिन पहले ही उतार चुकी थी। वह बहुत नाराज़ हो गया; लेकिन चूंकि वह बहुत ही शेखीबाज़ और अहंकारी है इसलिए मुझसे कोई बात उसने नहीं की और चला गया। ज़ाहिर है कि इसके बाद मुझे मां से बहुत कुछ सुनना पड़ा, उसका दुख देखकर मुझे भी बहुत पीड़ा हो रही थी; मैं सोचने लगी कि कहीं जल्दबाज़ी तो नहीं कर दी; लेकिन मेरे पास तुम्हारा पत्र जो था—और मैं उसके बिना भी जानती थी कि..."

"कि मैं तुम्हें प्यार करता हूं," सानिन ने अधूरा वाक्य पूरा कर दिया।

"हां... कि तुम मुझे प्यार करने लगे हो।"

जेम्मा इसी तरह मुस्कराती, बीच-बीच में अटकती बोलती जा रही थी; वह हर बार आवाज़ धीमी कर देती थी या बिल्कुल चुप रह जाती थी, जब सामने से कोई आता दिखाई देता या बगल से गुज़रने लगता। और सानिन स्फुरित होता सब सुनता जा रहा था, उसकी स्वर-सुधा पिये जा रहा था, जैसे उस दिन उसके पत्र की लिखावट पर मुग्ध होता जा रहा था।

"मां बहुत ही दुखी है," जेम्मा फिर बोलने लगी, उसके मुंह से शब्द एक के बाद एक जल्दी-जल्दी निकल रहे थे। "वह किसी भी तरह समझ ही नहीं पा रही थी कि क्लूबेर महाशय से मुझे नफ़रत हो सकती थी, कि मैं प्यार के कारण नहीं उसी के बारंबार अनुरोध के कारण शादी के लिए तैयार हुई थी... मां आप... तुम पर शक करने लगी है; मतलब कि यदि सीधा-सादा

कहा जाय तो उसे पूरा विश्वास है कि मैं तुम्हें प्यार करने लगी हूं। और इस बात से उसे और तकलीफ़ होती है, क्योंकि अभी दो दिन पहले भी ऐसी कोई बात उसके दिमाग में नहीं आई थी, यहां तक कि उसने मुझे मनाने का काम भी तुम्हें ही सौंप दिया था... यह ज़िम्मेदारी भी कितनी विचित्र थी–है न? अब वह तुमको... आपको काइयां और चालबाज़ आदमी कह रही है, कहती है कि आपने उसके साथ विश्वासघात किया है, और भविष्यवाणी करती है कि आप मुझे धोखा देंगे..."

"लेकिन, जेम्मा," सानिन ने आश्चर्य किया, "क्या तुमने उसे बताया नहीं..."

"मैंने कुछ नहीं बताया! और तुमसे बात किये बगैर मुझे इसका क्या अधिकार था?"

सानिन ने हाथ चमका दिये।

"जेम्मा, उम्मीद है कि कम से कम अब तो तुम उसके सामने सब स्वीकार कर लोगी, मुझे उसके पास ले चलोगी... मैं तुम्हारी मां को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि मैं कोई धोखेबाज़ नहीं हूं!"

सानिन का वक्ष उदात्त और जोशीली भावनाओं के उफान से लगातार चढ़-उतर रहा था।

जेम्मा ने उसे आंखें फाड़कर देखा।

"आप क्या सचमुच मेरे साथ मां के पास चलना चाहते है? मां के पास, जो विश्वास दिलाना चाहती है कि... हमारे बीच यह सब बिल्कुल संभव नहीं है और यह इरादा कभी पूरा नहीं होगा?" एक शब्द था, जिसे कहने में जेम्मा हिचक रही थी... वह उसके होंठों को झुलसा रहा था, लेकिन सानिन ने उसे उतने ही चाव से सुना दिया।

"यही न तुमसे शादी करने का, जेम्मा, तुम्हारा पति बनने का–इससे अधिक बड़ा सुख मैं नहीं जानता!"

इस समय उसे लग रहा था कि न उसके प्यार की कोई सीमा है, न उदात्तता की, न ही निश्चयात्मकता की।

ये शब्द सुनकर जेम्मा, जो क्षण भर को ठिठकनेवाली थी,

और भी तेज़ कदम से चल पड़ी... मानो इस असीम, अप्रत्याशित सुख से डरकर भाग जाना चाहती हो!

लेकिन अचानक उसके कदम लड़खड़ा उठे। उससे कुछ ही कदमों की दूरी पर नुक्कड़ के कोने से नया हैट और नया सूट डाटे, तीर की तरह तना और पूडेल की तरह घुंघराले बालोंवाला क्लूबेर आ पहुंचा। उसने जेम्मा को देखा, सानिन को देखा और मानो अंतरात्मा से गुर्राकर इतनी ज़ोर से सीना ताना कि उसका लचीला शरीर पीछे की ओर झुक गया, और पूरी नफ़ासत के साथ उनकी ओर बढ़ चला। सानिन थोड़ा अकबका गया; लेकिन उसकी शक्ल देखकर, जिसे क्लूबेर दंभ और हिकारत भरे आश्चर्य, यहां तक कि तरस की मुद्रा प्रदान करने की भरसक कोशिश कर रहा था,—इस सुर्ख अधम चेहरे को देखकर उसने अनायास ही क्रोध का उफान महसूस किया और आगे बढ़ चला।

जेम्मा ने अपनी संयत दृढ़ता से उसका हाथ पकड़ लिया और सीधे अपने भूतपूर्व मंगेतर के चेहरे को देखा... उसने आंखें सिकोड़ लीं, कुछ सकपकाया और बगल हो गया, फिर होंठों ही होंठों में बुदबुदाकर: "गीत का पुराना अंत!" (Das alte Ende vom Liede!)—उसी नफ़ासत के साथ थोड़ा उचकता हुआ आगे निकल गया।

"क्या कहा उस कमबख्त ने?" सानिन ने पूछा और क्लूबेर की ओर झपटना चाहा लेकिन जेम्मा ने उसे रोक लिया और उसके साथ आगे बढ़ गई, लेकिन अपनी बांह में बंधी उसकी बांह को छोड़कर।

रोज़ेली की कंफ़ेक्शनरी आगे दिखाई दी। जेम्मा रुक गई।

"Dimitri, monsieur Dimitri," उसने कहा, "अभी तो हम घर में नहीं हैं, मां से नहीं मिले हैं... यदि आप थोड़ा और सोचना चाहते हैं, यदि... तो अभी भी वक्त है, आप आज़ाद हैं, द्मीत्री।"

प्रत्युत्तर में सानिन ने उसके हाथ को कसकर अपने सीने से लगा लिया और उसे अपने साथ खींचता हुआ आगे बढ़ गया।

"मां," जेम्मा ने सानिन के साथ कमरे में प्रवेश करते हुए कहा, जहां फ़्राऊ लेनोरे बैठी थी, "मां, मैं अपना असली मंगेतर ले आई हूं!"

29

जेम्मा ने अगर अपनी मां से यह कहा होता कि वह अपने साथ हैज़ा या मौत लाई है, तो फ़्राऊ लेनोरे इस बात पर बमुश्किल इतनी हाय-तोबा करती। वह एकदम दीवार की ओर मुंह करके एक कोने में बैठ गई और आंसू से मुंह धोते हुए रोने लगी, तकरीबन ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रही थी, जैसे रूसी देहातिनें अपने पति या पुत्र के मरने पर ताबूत के पास रोती हैं। जेम्मा इस हद तक घब्रड़ा गई कि मां के करीब ही नहीं गई! वह कमरे के बीचोंबीच मूर्तिवत जड़ हो गई; सानिन एकदम हक्का-बक्का हो गया, जैसे अभी रो पड़ेगा! इस तरह लगातार एक घण्टे तक सांत्वनाहीन विलाप चलता रहा! पंतालिओने ने दुकान के बाहरी दरवाज़े पर ताला लगाना उचित समझा, ताकि कोई अजनबी अन्दर न आ सके—संयोग से अभी सुबह का समय था, अधिक देर नहीं हुई थी। बूढ़ा हैरान था और किसी भी कीमत पर उन्हें ऐसी जल्दबाजी की अनुमति नहीं देता, जो जेम्मा और सानिन कर बैठे थे, फिर भी वह उन पर कोई आक्षेप नहीं लगा सका और ज़रूरत पड़ने पर उन्हें उचित संरक्षण तक देने को तैयार था। वह हेर क्लूबेर को इतना अधिक नापसन्द करता था! एमील अपने दोस्त और बहन के बीच खुद को बिचौलिया मानता था, और इस बात पर उसे थोड़ा गर्व भी था कि सब इतनी खूबसूरती से निपट गया! उसे सिर्फ़ एक ही बात समझ में नहीं आ रही थी कि फ़्राऊ लेनोरे किसलिए इतनी दुखी है, वह तुरन्त इस नतीजे पर पहुंचा कि औरतें चाहे कितनी भी बेहतर क्यों न हों, अक्ल के मामले में कच्ची होती हैं! सानिन का सबसे बुरा हाल था। फ़्राऊ लेनोरे दहाड़ें मारकर रोती और हाथों को झटकने लगती थी, जैसे ही सानिन उसके करीब आने की कोशिश करता था। थोड़ी दूर खड़े रहकर उसने व्यर्थ ही

कई बार ऊंची आवाज़ में कहा था: "आपकी बेटी का हाथ मांगने आया हूं!" फ़ाऊ लेनोरे सबसे ज़्यादा ख़ुद को ही कोस रही थी: कैसे वह इतनी अन्धी हो गई कि उसे कुछ दिखा ही नहीं! "काश, मेरे जवान्नी बत्तीस्ता आज ज़िन्दा होते," डबडबायी आंखों से फ़ाऊ लेनोरे ने कहा, "तो यह सब नहीं होता!"—"हे भगवान, यह सब क्या तमाशा है?" सानिन ने सोचा "आखिर बकवास ही तो है!" उसने न जेम्मा को देखने का साहस जुटाया, न जेम्मा ने ही उसकी ओर देखा! वह धैर्य से अपनी मां को संभालने में जुटी हुई थी, जिसने पहले उसे अपने पास फटकने भी नहीं दिया था...

आखिर तूफ़ान धीरे-धीरे थम ही गया। फ़ाऊ लेनोरे का रोना-धोना खत्म हो चुका था; जेम्मा को इजाज़त मिली कि वह उसे कोने से यानी विलाप स्थल से ले चले, खिड़की के पास बैठा दे और पीने के लिए एक गिलास आरेंज वाटर दे। सानिन को उसके पास जाने की मनाही थी... हां, वह कमरे में रुक सकता था (जबकि पहले उसका कहना था कि वह तुरंत वहां से चला जाय) और अब उसे बोलते समय रोक-टोक नहीं रही थी। सानिन ने तुरन्त इस शांत अवसर का लाभ उठाया और मीठी-मीठी बात करने लगा। वह अपनी आकांक्षाओं और अपनी भावनाओं को खुद जेम्मा के सामने भी इतनी उल्लसित विश्वसनीयता से शायद ही रख पाया होता! ये भावनाएं एकदम निश्छल थीं, आकांक्षाएं अत्यन्त पवित्र, ठीक 'बार्बर ऑफ़ सेवाइल' की अल्माविवा की तरह। वह इन आकांक्षाओं के दोषों को न खुद से छिपा रहा था, न फ़ाऊ लेनोरे से; लेकिन ये दोष सिर्फ़ प्रतीत हो रहे थे! यह सच है कि वह एक विदेशी नागरिक था, वे लोग चन्द रोज़ पहले ही उससे परिचित हुए थे, और निश्चित तौर पर उसके निजी जीवन और उसकी जीवन-वृत्ति के बारे में कतई नहीं जानते थे, लेकिन वह अपने बारे में सभी आवश्यक प्रमाण देने के लिए तैयार था, कि वह एक प्रतिष्ठित आदमी है, कोई फटेहाल नहीं; वह अपने देश बंधुओं से ज़रूरत पड़ने पर उचित प्रमाण प्राप्त कर सकता है। उसने विश्वास व्यक्त किया कि जेम्मा उसके साथ खुश रहेगी, और वह उसके सगे

संबंधियों का विछोह उसे महसूस नहीं होने देगा! विछोह का ज़िक्र आते ही – सिर्फ़ एक शब्द "विछोह" – सारा काम बिगड़ते-बिगड़ते बचा... फ़ाऊ लेनोरे भरपूर कांपने लगी, कुर्सी में छटपटाने लगी... सानिन ने तुरंत बात का रुख बदला और ध्यान दिलाया कि विछोह सिर्फ़ अल्पकालिक होगा और शायद यह होगा ही नहीं!

सानिन की मीठी-मीठी बातें बेकार नहीं गईं। फ़ाऊ लेनोरे अब उसे दुख और उलाहना की दृष्टि से ही सही, लेकिन देखने लगी, उसमें अब पहले जैसी घृणा और क्रोध का भाव रह न गया था, फिर उसने उसे अपने निकट आने और पास बैठने तक की इजाज़त दी (जेम्मा दूसरी तरफ़ बैठी थी); फिर वह उसे उलाहने देने लगी, सिर्फ़ नज़रों से ही नहीं, शब्दों से भी, जिसका अब मतलब था कि उसका हृदय कुछ नर्म पड़ गया है; वह अपनी शिकायतें सुनाने लगी और उसकी शिकायतें धीरे-धीरे शांत और क्षीण होने लगीं; उनमें बीच-बीच में प्रश्न भी उठते थे, कभी सानिन के लिए, तो कभी जेम्मा के लिए; फिर उसने सानिन का – अपने हाथ में उसका हाथ लेने का – विरोध नहीं किया, और उसने अपना हाथ तुरंत ही नहीं खींच लिया... इसके बाद पुनः रो पड़ी – लेकिन अब आंसू बिल्कुल दूसरे थे... फिर वह उदासी से मुस्कराई और उसने अफ़सोस प्रगट किया जवान्नी बत्तीस्ता अब नहीं रहे, लेकिन इसका अर्थ दूसरा था, पहले जैसा नहीं एक क्षण और बीता – और दोनों अपराधी – सानिन और जेम्मा उसके पैरों के पास घुटनों के बल बैठ गए, और वह बारी-बारी से उनके सिर पर अपने हाथ रखती जा रही थी; और दूसरा क्षण आया – जब वे उससे गले मिल रहे थे, उसे चूम रहे थे, और प्रसन्न चेहरेवाला एमील दौड़ता हुआ कमरे में आया और वह भी इस समूह में शामिल हो गया।

पंतालिओने ने कमरे में झांका, मुस्करा दिया और साथ ही साथ उसकी भौहें भी सिकुड़ गईं। वह बाहरी दरवाज़ा खोलकर कंफ़ेक्शनरी में चला गया।

फ़ाऊ लेनोरे जल्द ही निराशा से उदासी और उदासी से विचारों के मंद ऊहापोह में पड़ गई; लेकिन यह मंद ऊहापोह भी तुरंत एक गुप्त संतोष में परिणत हो गया, जो शिष्टाचार के नाते हर तरह से छिपा रहा, संयत रहा। सानिन पहली मुलाकात से ही फ़ाऊ लेनोरे को पसंद आ गया था; इस विचार से समझौता करके कि वही अब दामाद होगा, वह उसमें अब कोई खास बुराई नहीं देख रही थी, यद्यपि वह चेहरे पर कुछ नाराज़गी बनाये रखना अपना कर्तव्य मान रही थी... फिर पिछली घटनाएं ही कुछ ऐसी विचित्र थीं... एक व्यावहारिक औरत और मां होने के नाते वह सानिन से ढेर सारी पूछताछ कर लेना भी अपना कर्तव्य समझ रही थी; और सानिन ने मन में, जब वह सबेरे जेम्मा से मिलने के लिए निकल रहा था, यह ज़रा भी सोचा नहीं था कि उसकी शादी होने को है,—हां, वह कुछ भी सोच नहीं रहा था,—अपने भावावेश में बहा जा रहा था। सानिन पूरी चुस्ती के साथ, और कह सकते हैं कि एक जोश के साथ मंगेतर की भूमिका में आ चुका और उसे निभा रहा था; सभी सवालों का चाव के साथ सविस्तार जवाब दिये जा रहा था। यह विश्वास कर लेने के बाद कि वह दरअसल एक कुलीन घराने का आदमी है, और थोड़ा आश्चर्य करके कि वह कोई काउंट नहीं है, फ़ाऊ लेनोरे ने गंभीर मुद्रा बना ली और "पहले से चेतावनी दे दी" कि उसके साथ बिल्कुल साफ़-साफ़ बात करेगी, क्योंकि यह एक मां का पवित्र कर्तव्य समझती है! इस पर सानिन ने कहा कि उसे और किसी बात की आशा भी नहीं थी और वह उनसे अनुरोध करता है कि उसके साथ कोई रियायत न बरतें!

तब फ़ाऊ लेनोरे ने उसे बताया कि क्लूबेर महाशय (यह नाम लेते समय उसने हल्की-सी उसांस ली, होंठ भिंच गए और थोड़ा अटक-सी गई) क्लूबेर महाशय की, जेम्मा के भूतपूर्व मंगेतर की वर्तमान आमदनी आठ हज़ार गोल्डेन है और यह आय

हर साल बढ़ती ही जायेगी और उसकी, सानिन महाशय की आय क्या है?

"आठ हज़ार गोल्डेन," सानिन ने थोड़ा आवाज़ खींचकर दोहराया, "यह हमारे यहां की मुद्रा में होगा—करीब पन्द्रह हज़ार रूबल... मेरी आय काफ़ी कम है। मेरी एक छोटी-सी जायदाद है तूला गुबेर्निया में... अच्छी तरह से देख-भाल करने पर उससे करीब पांच या छह हज़ार रूबल मिल सकता है, हां, इतना तो मिलेगा ही... फिर यदि नौकरी कर लूं, तो दो हज़ार का वेतन आसानी से मिल जाया करेगा।"

"नौकरी, रूस में?" फ़ाऊ लेनोरे चीख पड़ीं। "तो क्या मुझे जेम्मा से विदा लेना होगा!?"

"वैसे राजनयिक विभाग में भी काम मिल सकता है," सानिन ने तुरंत टोका, "मेरे ऐसे संपर्क हैं... तब नौकरी विदेश में होगी। या एक और काम किया जा सकता है—यह सबसे अच्छा होगा: जायदाद बेचकर प्राप्त पूंजी किसी मुनाफ़े के व्यवसाय में लगायी जा सकती है—जैसे इसी कंफ़ेक्शनरी का काम बढ़ाने में..." सानिन ने महसूस किया कि वह कुछ बेतुकी बात कर रहा है, लेकिन वह एक विचित्र जोश में बोल रहा था! वह जब भी जेम्मा की ओर देखता, जो इस "व्यावहारिक" बातचीत के शुरू होते ही बीच-बीच में उठ जाती, तो कभी कमरे में चहलकदमी करने लगती, फिर आकर बैठ जाती—जेम्मा की ओर जब भी देखता, उसे लगता कि उसके लिए कोई बाधा नहीं है और वह यह सारा इंतज़ाम अभी इसी वक्त करने को तैयार है, और वह भी सबसे अच्छी तरह—बस, वह चिंता न करे!

"कंफ़ेक्शनरी को बढ़ाने के लिए तो क्लूबेर महाशय भी मुझे कुछ पूंजी देना चाहते थे," थोड़ी हिचक के बाद फ़ाऊ लेनोरे ने बताया।

"मां! भगवान के लिये! मां!" जेम्मा इतालवी में चीख पड़ी।

"ये बातें समय रहते ही तय कर लेनी चाहिये, बेटी," फ़ाऊ लेनोरे ने उसी भाषा में जवाब दिया।

वह फिर सानिन की ओर मुखातिब हुई और पूछने लगी कि रूस में विवाह के क्या कानून हैं, प्रशा की तरह कैथोलिकों से शादी करने में वहां कोई अड़चन है या नहीं? (उस समय चालीस के दशक में विधर्मीय विवाहों को लेकर कोलोन के आर्चबिशप के साथ प्रशियन सरकार के झगड़े की बात सारे जर्मनी को याद थी।) जब फ़ाऊ लेनोरे ने यह सुना कि रूसी कुलीन घराने में विवाह करके उसकी बेटी भी कुलीन कुल की बहू बन जायेगी, उसने एक तरह से संतोष प्रगट किया।

"लेकिन पहले तो आपको रूस जाना होगा न?"

"क्यों?"

"क्यों? अपने राजा की स्वीकृति लेने?"

सानिन ने उसे समझाया कि यह बिल्कुल ज़रूरी नहीं है... लेकिन यह संभव है कि शादी से पहले उसे कुछ समय के लिये रूस जाना ही पड़े (उसने ये शब्द कहे और उसका जी भर आया, जेम्मा, जो उसे देख रही थी, समझ गई कि उसका जी भर आया है,–वह सुर्ख़ हो उठी और सोच में डूब गई); वह अपने देश लौटकर जायदाद बेच देगा... और हर हालत में वहां से अपने साथ आवश्यक धनराशि लेता आएगा।

"अच्छा होता कि आप मेरे ओवरकोट के लिये वहां से अस्त्राखान का फ़र भी ले आते," फ़ाऊ लेनोरे बोल पड़ी। "कहते हैं कि वहां बहुत ही उम्दा और सस्ता होता है!"

"ज़रूर, आपके लिए बड़ी ख़ुशी से ले आऊंगा और जेम्मा के लिए भी!" सानिन ने कहा।

"और मेरे लिए मोरक्को के चमड़े की टोपी, जिस पर चांदी के धागे से बेल-बूटे बने होते हैं," बगल के कमरे से झांकते हुए एमील बोल पड़ा।

"अच्छा, तुम्हारे लिये भी ले आऊंगा... और पंतालिओने के लिए जूते।"

"किसलिये? इसकी क्या ज़रूरत है?" फ़ाऊ लेनोरे कहने लगी। "हम अभी गंभीर मुद्दों पर बातें कर रहे हैं। हां, एक बात और," उस व्यवहारकुशल महिला ने कहा। "आप कहते हैं:

जायदाद बेच देंगे। लेकिन यह कैसे करेंगे आप? क्या रैयतों को भी बेच देंगे?"

सानिन को यह बात मानो चुभ गई हो। उसे याद आया कि मैडम रोज़ेली और उसकी बेटी के साथ जब वह भूदास-प्रथा की बात कर रहा था, जिससे उसे बेहद चिढ़ थी, उसने कई बार विश्वास दिलाने की कोशिश की थी कि अपने रैयतों को वह कभी भी नहीं बेचेगा, क्योंकि इस तरह की बिक्री को वह नैतिकता के विरुद्ध मानता था।

"मैं अपनी जायदाद किसी ऐसे आदमी को बेचने की कोशिश करूंगा, जिसे मैं भला समझूंगा," उसने बेहिचक कहा, "या हो सकता है कि खुद रैयत अपना दाम देने को तैयार हो जायें।"

"यह सबसे अच्छा होगा," फ़्राऊ लेनोरे ने सहमति प्रगट की। "वैसे जीते-जागते लोगों को बेचना..."

"Barbari!"* पंतालिओने बड़बड़ाया, जो एमील के पीछे से झांका और अपनी ज़ुल्फ़ें झटकते हुए पुनः ओझल हो गया।

"बुरी बात है!" सानिन ने मन में सोचा और दबी नज़र से जेम्मा की ओर देखा। लगता था कि अंतिम बात उसने नहीं सुनी थी। "खैर, कोई बात नहीं!" उसने फिर से सोचा।

व्यावहारिक बातचीत दोपहर के खाने तक इसी तरह चलती रही। फ़्राऊ लेनोरे अंत में बिल्कुल नम्र हो गई और सानिन को द्मीत्री कहकर संबोधित करने लगी, प्रेम से उंगली नचाकर, धोखा देने पर बदला लेने की चेतावनी देती। उसके "सगे सम्बन्धियों" के बारे में भी विस्तार से पूछती गई, क्योंकि "यह भी बहुत महत्वपूर्ण है"। उसने यह भी कहा कि वह शादी की रस्म बताये, रूसी चर्च में वह कैसे अदा होती है, और पहले से ही श्वेत फ़्राक और सुनहरे मुकुट में जेम्मा की कल्पना करके खुश होने लगी।

"देखो न, वह कितनी सुंदर है, ठीक राजकुमारी की तरह," उसने एक मां के नाते गर्व से कहा, "फिर ऐसी राजकुमारी भी तो दुनिया में नहीं है!"

---

* वहशी! ~~(इतालवी)~~

"दूसरी जेम्मा तो दुनिया में है ही नहीं!" सानिन ने भी हां में हां मिलाई।

"हां, इसीलिये तो उसे जेम्मा कहते हैं!" (इतालवी में जेम्मा का अर्थ है हीरे-जवाहरात।)

जेम्मा मां को चूमने लगी... लगता था कि अब जाकर उसने मुक्ति की सांस ली है—मन को मथनेवाला भार उतर गया था।

और सानिन अचानक खुद को इतना भाग्यशाली महसूस करने लगा, इस विचार से उसका मन एक बाल-सुलभ खुशी से भर गया कि आखिर वे सपने पूरे हो गये उसके, जो चन्द रोज़ पहले उसने उन्हीं कमरों में देखे थे; उसके रोम-रोम में ऐसा आह्लाद छा गया कि वह झटपट कंफ़ेक्शनरी में चला गया; उसकी इच्छा हुई कि वह अभी से दुकानदारी संभाल ले, जैसा कि हाल ही में हुआ था... "अब मेरा पूरा अधिकार है! मैं इस घर का सदस्य हूं!"

और वह सचमुच काउंटर के पास खड़ा होकर सौदा बेचने लगा, यानी दो लड़कियों को, जो एक पौण्ड चाकलेट खरीदने आई थीं, दो पौण्ड तौल गया और दाम सिर्फ़ आधे ही लिए।

खाने की मेज़ पर अब वह मंगेतर के अधिकार से जेम्मा के बगल में बैठा था। फ़ाऊ लेनोरे अपनी व्यावहारिक बातें करती रही। एमील कभी हंसता था सानिन से रूस ले चलने को ज़िद करता था। यह तय हुआ कि सानिन दो सप्ताह बाद चला जायेगा। पंतालिओने ने ज़रा उदास मुद्रा बना ली, यहां तक कि फ़ाऊ लेनोरे ने भी ताने कसे: "और उस पर से साक्षी बने थे!" पंतालिओने सख्त नज़र से देखता रहा।

जेम्मा लगभग पूरे समय खामोश रही, लेकिन उसका चेहरा कभी भी इतना मोहक और उल्लसित नहीं था। खाने के बाद उसने सानिन को क्षण भर के लिए बगीचे में बुलाया और उसी बेंच के निकट रुककर, जहां वह उस दिन चेरियां छांट रही थी, उससे बोली:

"द्मीत्री, मुझसे नाराज़ मत होना; लेकिन एक बार और तुम्हें याद दिलाना चाहती हूं कि खुद को वचनबद्ध मत मानना..."

लेकिन उसने उसे बात पूरी नहीं करने दी...

जेम्मा ने मुंह फेर लिया।

"और वह बात, जो मां ने कही थी—याद है? हमारे धर्म अलग-अलग होने की,—तो देखो!"

उसने गले से झूलते गार्नेट की नन्ही-सी सलीब झटके से खींच दी, धागा टूट गया और सलीब उसे दे दी।

"यदि मैं तुम्हारी हूं, तो तुम्हारा धर्म भी मेरा धर्म है!"

जब जेम्मा के साथ सानिन घर लौटा, तो उसकी आंखें अभी भी नम-सी थीं।

शाम को सब कुछ सामान्य लीक पर चलने लगा। यहां तक कि सबने ताश खेला।

31

सानिन अगले दिन तड़के ही सोकर उठ गया। वह मानवीय सुख के उच्च शिखर पर था, लेकिन उसकी नींद में इससे बाधा नहीं आई। प्रश्न जीवन से संबंधित था और था भी निर्णायक कि कैसे वह अपनी जायदाद को जल्द से जल्द अधिकतम लाभ लेकर बेच सके। यह प्रश्न उसे मानसिक तौर से बेचैन कर रहा था। उसके मस्तिष्क में विभिन्न योजनाओं के ताने-बाने बुनते जा रहे थे। लेकिन समस्या का समाधान अब तक नहीं हो पाया था। वह कमरे से बाहर निकल पड़ा, ताकि खुली हवा में सांस ले सके, तरोताज़ा महसूस कर सके। जेम्मा से वह तैयार मसौदे के साथ ही मिलना चाहता था।

कौन है यह स्थूलकाय, मोटे-मोटे पैरोंवाला आदमी, पर कपड़े तो सलीके से पहने है, थोड़ा अटकता, झूमता हुआ चला जा रहा है? कहां देखे हैं उसने गुद्दी पर झूलते इन सन जैसे बालों को, सिर को, जो ग्रीवाहीन-सा कंधों पर जुड़ा लगता है, मांसल पीठ को और झूलती हुई इन मोटी-मोटी बांहों को? कहीं यह

गोलोज़ोव तो नहीं—स्कूल का पुराना सहपाठी, जिसे उसने पांच वर्षों से देखा ही नहीं था? सानिन इस व्यक्ति की ओर लपका और उससे आगे निकल गया, मुड़कर देखा... चौड़ा-सा पिलछौंह चेहरा, सुअर जैसी नन्ही आंखों पर सफ़ेद बरौनियां और भौंहें, छोटी-सी चपटी नाक, और होंठ, मानो अलग से चिपकाये गए हों, रोमहीन गोलाकार ठुड्डी और समग्र चेहरे पर छलकता असंतोष, अविश्वास और आलस्य का भाव। बिल्कुल ठीक—यह वही है, इप्पोलीत पोलोज़ोव!

"तो क्या फिर बुलन्द है मेरे भाग्य का सितारा?" सानिन के मन में कौंधा।

"पोलोज़ोव! इप्पोलीत सिदोरिच! अरे, तुम?"

व्यक्ति रुक गया, नन्ही-नन्ही आंखें ऊपर उठीं, वह थोड़ी देर चुप रहा, अंत में होंठ खुले और भर्राई-सी आवाज़ सुनाई दी:

"द्मीत्री सानिन, तुम?"

"हां, वही!" सानिन ने चिल्लाकर कहा और पोलोज़ोव से हाथ मिलाया। उसके हाथ महीन चमड़े के कसे हुए भूरे-सुरमई दस्ताने में कैद थे, पहले की ही तरह उसकी थुलथुल जांघों के अगल-बगल निर्जीव-से झूल रहे थे। "क्या बहुत दिन से यहां हो? कहां से आ रहे हो? किस जगह ठहरे हो?"

"मैं कल ही विस्बाडेन से आया था," पोलोज़ोव ने बिना किसी जल्दबाज़ी के कहा। "पत्नी के लिए सामान खरीदने, और आज ही वापस जा रहा हूं।"

"अरे, हां! तुम्हारी शादी तो हो गई है! कहते हैं कि पत्नी बड़ी खूबसूरत है!"

पोलोज़ोव ने नज़रें एक ओर घुमा लीं:

"हां, कहते हैं।"

सानिन हंस पड़ा।

"यार, तुम बिल्कुल वैसे ही हो... भावशून्य, जैसे कभी स्कूल के दिनों में थे।"

"आखिर मैं बदलता भी किसलिये?"

"और यह भी कहते हैं," सानिन ने "कहते हैं" पर विशेष ज़ोर देते हुए कहा, "कि तुम्हारी पत्नी बड़ी अमीर है।"

"यह भी कहते हैं।"

"तो क्या तुम्हें नहीं मालूम, इप्पोलीत सिदोरिच?"

"भाई द्मीत्री... पाव्लोविच? हां, पाव्लोविच! मैं अपनी बीबी के किसी मामले में दखल नहीं देता।"

"दखल नहीं देते? किसी भी मामले में?"

पोलोज़ोव ने फिर अपनी नज़रें घुमा लीं।

"भाई, किसी मामले में नहीं। उसकी अपनी राह है... और मेरी अपनी!"

"इस समय कहां जा रहे हो?" सानिन ने पूछा।

"फ़िलहाल तो कहीं नहीं, सड़क पर खड़ा तुमसे बातें कर रहा हूं; इसके बाद होटल जाऊंगा और नाश्ता करूंगा।"

"क्या मैं भी तुम्हारा साथ दूं?"

"यानी नाश्ते पर?"

"हां।"

"मेहरबानी होगी, भाई, मिलकर खाने का लुत्फ़ ही और है! यार, बकवादी तो नहीं हो न?"

"सोचता तो नहीं।"

"तो फिर चलो।"

पोलोज़ोव आगे बढ़ चला और बगल में सानिन चल रहा था। सानिन सोच रहा था—पोलोज़ोव के होंठ पूर्ववत चिपक गए, वह नाक सुड़सुड़ाता, झूमता हुआ चल रहा था—आखिर किस हिकमत से इस घोंघा-बसंत ने एक खूबसूरत और सम्पन्न महिला से शादी कर ली? जबकि उसके पास न दौलत थी, न कोई शोहरत, न अक्ल। स्कूल में वह सुस्त और मूर्ख छात्र समझा जाता था, पेटूपन और ऊंघने के लिए मशहूर था—सभी लड़के उसे "लबलहका" कहकर पुकारते थे। अजीब पहेली है यह सब!

"और यदि पत्नी उसकी सचमुच इतनी सम्पन्न है—कहते हैं किसी व्यापारी की बेटी है—तो क्या मेरी जायदाद नहीं खरीद लेगी? पर वह तो कहता है कि अपनी पत्नी के किसी मामले में दखल ही नहीं देता, लेकिन इस पर विश्वास नहीं किया जा सकता! और मैं कीमत भी उचित लाभ की तय करूंगा! आखिर

कोशिश क्यों न की जाय? शायद मेरा सितारा बुलन्द हो जाय... तो तय रहा! कोशिश करूंगा!"

पोलोज़ोव सानिन को फ़्रैंकफ़र्ट के एक सबसे अच्छे होटल में ले आया, जहां एक बेहतरीन कमरे में वह ठहरा हुआ था। मेज़ों और कुर्सियों पर दफ़्ती के डिब्बों, पोटियों और पैकेटों की ऊंची-ऊंची कतारें लगी हुई थीं... "भाई, ये सारी खरीदारी मारीया निकोलायेव्ना के लिये हैं!" (पोलोज़ोव की पत्नी का नाम मारीया निकोलायेव्ना था।) पोलोज़ोव आरामकुर्सी पर बैठ गया, टाई खोलने लगा और एक आह भरते हुए बोला: "वाह री गर्मी!" उसने घण्टी बजाकर हेड वेटर को बुलाया और ब्योरेवार भारी-भरकम नाश्ते का आर्डर दिया। "और हां, एक बजे बग्गी तैयार रहे! समझे न, ठीक एक बजे!"

हेड वेटर अदब से झुककर ओझल हो गया।

पोलोज़ोव ने वास्केट का बटन खोल दिया। उसके भौंहें तानने, नाक फुलाने और सिकोड़ने से ही यह स्पष्ट था कि पोलोज़ोव के लिये बातचीत करना एक बोझिल काम है, बल्कि वह बेचैनी से इस इंतज़ार में था कि कहीं सानिन उसे ज़बान हिलाने को बाध्य न कर दे, इसके बजाय वह खुद ही मुंह खोलने की मशक्कत करे।

सानिन ने अपने मित्र का मूड भांप लिया और शायद इसीलिए उसे प्रश्नों से बोझिल नहीं कर रहा था; सिर्फ़ आवश्यक बातों तक ही सीमित रहा; मालूम हुआ कि वह दो साल घुड़सेना में रहा है (मज़े की बात थी उसे सैनिक वरदी में देखना!), शादी के तीन साल हो चुके हैं और पत्नी के साथ दूसरा वर्ष वह विदेश में बिता रहा है, "जो विस्बाडेन में किसी मर्ज़ का इलाज करा रही है", और वहां से पेरिस जानेवाली है। वैसे सानिन ने अपने अतीत और अपनी भावी योजनाओं की चर्चा उससे नहीं छेड़ी। वह सीधे मुख्य मुद्दे पर आ गया, उसने बताया कि वह अपनी जायदाद बेचना चाहता है।

पोलोज़ोव उसकी बात चुपचाप सुन रहा था, सिर्फ़ कभी-कभी दरवाज़े की ओर देख लेता था, जिधर से नाश्ता लाया जाना था। अन्त में नाश्ता आ गया। हेड वेटर अपने दो सहायकों

के साथ कई प्लेटों में नाश्ता लेकर आ गया, जो रजतवर्णी टिकोजियों से ढका हुआ था।

"तो जायदाद तूला गुबेर्निया में है?" पोलोज़ोव ने मेज़ के पास बैठते और कमीज़ की कालर में नेपकिन को ठूंसते हुए कहा।

"हां, तूला में।"

"येफ़ेमोव ज़िले में... जानता हूं।"

"तुम मेरी अलेक्सेयेवका को जानते हों?" सानिन ने मेज़ के नज़दीक बैठते हुए कहा।

"बेशक जानता हूं," पोलोज़ोव ने आमलेट के साथ मशरूम मुंह में ठूंसते हुए कहा। "मारीया निकोलायेवना–मेरी बीबी–की पड़ोस में जायदाद है... वेटर, बोतल खोलो! भाई, जमीन तो ठीक-ठाक है, लेकिन तुम्हारे किसानों ने सारा जंगल ही काट डाला है। पर उसे बेचना क्यों चाहते हो?"

"भाई, मुझे धन चाहिए। मैं उसे सस्ते दाम पर बेच सकता हूं। वैसे तुम क्यों नहीं खरीद लेते?"

पोलोज़ोव शराब की पूरी गिलास गटक गया, होंठ उसने नेपकिन से पोंछ लिए और फिर खाने में जुट गया–आहिस्ते, चभड़-चभड़ करते हुए।

"हुंह," उसने अन्त में कहा। "मैं जायदादें नहीं खरीदता: पूंजी कहां से लाऊंगा। मक्खन बढ़ाओ इधर। हां, मेरी बीबी ज़रूर खरीद सकती है। तुम उससे ही बात करो। अगर ऊंची कीमत नहीं मांगते, तो उसे एतराज़ नहीं होगा... कितने गधे हैं ये जर्मन! मछली तक उबालना नहीं जानते। आखिर इससे आसान क्या होगा? और उस पर बकवास करते हैं: "फ़ादरलैंड एक होना चाहिए"। वेटर, इस बेहूदी चीज़ को वापस ले जाओ!"

"भाई, क्या तुम्हारी बीबी ही सब इंतज़ाम देखती है?" सानिन ने पूछा।

"हां, खुद ही। कटलेट बढ़िया हैं। खाकर देखिये। यार, मैंने कहा न, द्मीत्री पाव्लोविच, मैं अपनी बीबी के किसी मामले में दखल नहीं देता, और यही मैं फिर तुमसे कह रहा हूं।"

पोलोज़ोव मुंह चलाता हुआ फिर चभड़-चभड़ करने लगा।

"हुंह... लेकिन उससे बात कैसे हो, इप्पोलीत सिदोरिच?"

"बहुत आसान है, द्मीत्री पाव्लोविच। विस्बाडेन चलो। यहां से कोई खास दूर नहीं है। वेटर, इंग्लिश मस्टर्ड है? नहीं? सूअर! सिर्फ़ वक्त न खराब करना। मैं आज ही वापस जा रहा हूं। लो, गिलास भर दूं: शराब तो शराब है–सिरका नहीं।"

पोलोज़ोव के चेहरे पर रौनक आ गई और वह सुर्ख हो उठा; उस पर रौनक तभी आती थी, जब वह पेट पूजा करता था... या पीने का दौर चालू रहता था।

"सच कहूं, तो मुझे यह भी नहीं मालूम कि क्या करूं?"

"आखिर ऐसी भी क्या जल्दी है?"

"भाई, जल्दी तो है।"

"और बड़ी रकम चाहिये?"

"हां। मैं... कैसे कहूं? इरादा... शादी का है।"

पोलोज़ोव ने गिलास मेज़ पर रख दी, जिसे होंठों पर लगाने जा रहा था।

"शादी!" उसने भारी-भरकम आवाज़ में कहा, जो आश्चर्य से भरी हुई थी, उसने फूले हुए हाथ अपने पेट पर बांध लिये। "तो इतनी जल्दी है?"

"हां... शीघ्र ही।"

"मंगेतर रूस में है?"

"नहीं, नहीं, वह रूस में नहीं है।"

"तब कहां है?"

"यहीं, फ़्रैंकफ़र्ट में।"

"लेकिन है कौन?"

"जर्मन लड़की है; यानी इतालवी मूल की। यहीं की रहनेवाली है।"

"अमीर है?"

"नहीं।"

"तो प्यार बहुत गहरा है?"

"अजीब कार्टून हो! प्यार तो गहरा है ही।"

"और इसीलिए तुम्हें धन चाहिये?"

"हां, हां... बेशक।"

पोलोज़ोव शराब पी चुका था, उसने हाथ-मुंह धोया और नेपकिन से उन्हें अच्छी तरह पोंछ लिया, सिगार निकाला और धुआं उगलने लगा। सानिन चुपचाप उसे देख रहा था।

"सिर्फ़ एक ही रास्ता है," पोलोज़ोव ने सिर पीछे करते हुए जैसे रंभाकर कहा और धुंवें की एक पतली लकीर उगल दी। "मेरी बीबी से बात कर लो। अगर वह चाह लेगी, तो तुम्हारी सारी परेशानी दूर हो जायेगी।"

"तुम्हारी पत्नी से मिलूं कैसे? तुम कहते हो कि आज ही जा रहे हो।"

पोलोज़ोव ने आंखें मूंद लीं।

"देखो, मैं तो तुम्हें यही सलाह दूंगा," उसने मुंह में दबा सिगार होंठों पर घुमाते और आह भरते हुए कहा। "जाओ, जल्दी से तैयारी कर लो, और यहां आ जाओ। मैं यहां से एक बजे जाऊंगा। मेरी बग्गी काफ़ी बड़ी है, तुम्हें अपने साथ ले चलूंगा। यही बेहतर है। फ़िलहाल झपकी मार लूं। भाई, खाने के बाद मैं सोता ज़रूर हूं। क्या कहूं, स्वभाव ही ऐसा है और मैं इसका कायल हूं। मेहरबानी करो, मेरी नींद में खलल न डालो।"

सानिन थोड़ी देर के लिए सोच में पड़ गया। सहसा उसने सिर उठाया, वह निर्णय ले चुका था!

"ठीक! मैं सहमत हूं और तुम्हारे प्रति कृतज्ञ भी। साढ़े बारह बजे मैं यहीं आ जाऊंगा। दोनों साथ-साथ विस्बाडेन चलेंगे। उम्मीद है कि तुम्हारी पत्नी नाराज नहीं होगी..."

लेकिन पोलोज़ोव तो खर्राटे ले रहा था। उसने मिनमिनाते हुए कहा: "यार, खलल न डालो!", पैर बेचैनी से हिले और वह एक नन्हे बच्चे की तरह सो गया।

सानिन ने उसकी भारी-भरकम आकृति को, उसके सिर, कन्धों और ऊंची उठी हुई सेब जैसी गोल-गोल ठुड्डी को एक बार फिर सरसरी नज़र से देखा और होटल से निकलकर रोज़ेली कंफ़ेक्शनरी की ओर फुर्ती से चल पड़ा। जेम्मा को यह सब बताना ज़रूरी था।

जेम्मा और उसकी मां कंफ़ेक्शनरी में उसे मिली। फ़्राऊ लेनोरे झुककर खिड़कियों के बीच की दूरी एक गज़ से नाप रही थी। सानिन को देखकर वह सीधी खड़ी हो गई और उसने खुशी-खुशी उसका स्वागत किया। हां, थोड़ा घबड़ा अवश्य गई थी।

"आपकी कलवाली बातों से," वह कहने लगी, "मेरे दिमाग में एक ही बात घूम रही है—अपनी दुकान को बेहतर कैसे बनाया जाय। यहां पर सोचती हूं कि दो अलमारियां लगवा दूं, आईने के रैकोंवाली। आप तो जानते ही हैं, आजकल इसी का फ़ैशन है। और फिर..."

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा," सानिन ने बीच में ही उसकी बात काटते हुए कहा, "यह सब तो सोचना पड़ेगा। लेकिन फ़िलहाल आइये और देखिये कि मैं क्या खबर लाया हूं।" वह फ़्राऊ लेनोरे और जेम्मा की बांहों में बांहें डालकर उन्हें दूसरे कमरे में ले आया। फ़्राऊ लेनोरे चिंतित हो उठी, गज़ उसके हाथ से छूटकर गिर गया। जेम्मा भी घबड़ाने ही वाली थी, लेकिन सानिन को गौर से देखते ही शांत हो गई। सानिन का चेहरा चिंतित तो अवश्य था, लेकिन उस पर जीवंत ताज़गी और दृढ़संकल्प के भाव थे।

उसने दोनों महिलाओं को बैठने के लिए कहा और खुद उनके सामने खड़ा हो गया और हाथ हिला-हिलाकर, जुल्फ़ें झटक-झटककर सारी खबर सुनाने लगा: पोलोज़ोव से मुलाकात, विस्बाडेन जाने की योजना, जायदाद बेचने की संभावना।

"अब आप मेरे सौभाग्य की कल्पना कीजिये," अंत में वह उल्लसित स्वर में बोल उठा, "बात ऐसी बन गई है कि शायद रूस जाने की ज़रूरत ही न पड़े! और शादी भी काफ़ी पहले ही निपट जाएगी!"

"कब आपको जाना है?" जेम्मा ने पूछा।

"बस, आज ही—एक घंटे के बाद; मेरे दोस्त ने बग्गी किराये पर तय कर ली है, उसी के साथ जा रहा हूं।"

"वहां का हाल तो लिखेंगे न?"

"फ़ौरन! जैसे ही इस महिला से बात तय कर लूंगा, वैसे ही लिखूंगा।"

"यह महिला, आप कहते हैं कि बहुत धनी है?" व्यवहारकुशल फ़ाऊ लेनोरे ने पूछा।

"बहुत! उसके पिता करोड़पति थे और सब उसी के नाम छोड़ गए।"

"सब अकेले उसी के नाम? चलिये, यह तो आपका भाग्य है! ध्यान रखियेगा, अपनी जायदाद सस्ते में मत बेच दीजियेगा! समझदारी और दृढ़ता से काम लीजियेगा। किसी चक्कर में न पड़ियेगा! मैं आपकी इच्छा को समझ रही हूं कि आप जल्द से जल्द जेम्मा से शादी करना चाहते हैं... लेकिन सावधानी सबसे ज़रूरी है! यह न भूलियेगा कि जितनी ही महंगी अपनी जायदाद बेचेंगे, आप दोनों और आपके बच्चों के लिए उतना ही अधिक बचेगा।"

जेम्मा दूसरी ओर मुड़ गई और सानिन फिर हाथ हिला-हिलाकर बोलने लगा।

"मेरी सावधानी पर शंका न करें, फ़ाऊ लेनोरे! मैं तो मोल-तोल भी नहीं करूंगा। उसे असली दाम बताऊंगा, देगी, तो ठीक है; नहीं तो छोड़ दूंगा।"

"आप परिचित हैं... इस महिला से?" जेम्मा ने पूछा।

"मैंने कभी उसे देखा तक नहीं है।"

"और लौटेंगे कब?"

"अगर काम पूरा नहीं हुआ तो परसों; अगर काम बन गया, तो शायद एक-दो दिन और ठहरना पड़े। हर हालत में देर कतई नहीं करूंगा। आखिर अपनी आत्मा तो यहीं छोड़कर जा रहा हूं न! खैर, यहां तो मैं बातों में लग गया, जाने से पहले मुझे घर भी जाना है... शकुन के लिए ज़रा अपना हाथ बढ़ाइये, फ़ाऊ लेनोरे, हमारे यहां रूस में हमेशा ऐसे ही करते हैं।"

"दायां या बायां?"

"बायां—हृदय के करीब। परसों आ जाऊंगा—विजयी या पराजित! मेरा मन कह रहा है कि मैं विजयी होकर लौटूंगा! विदा, मेरे प्रियजनो..."

उसने फ़ाऊ लेनोरे से गले मिलकर उसे चूमा और जेम्मा को उसके साथ कमरे में चलने को कहा—क्षण भर के लिए—क्योंकि उसे कोई ज़रूरी बात कहनी थी....बात इतनी ही थी कि उससे वह एकांत में विदा लेना चाहता था। फ़ाऊ लेनोरे यह समझ गई और उसने यह जानने की उत्सुकता नहीं दिखाई कि कौन सी ज़रूरी बात थी...

सानिन पहले कभी जेम्मा के कमरे में नहीं गया था। जैसे ही उसने अभीष्ट चौखट को पार किया, प्यार की सारी तन्मयता, उसकी सारी आग, हर्षावेश और मधुर भय—सब एक साथ भड़क उठे उसमें, उसकी आत्मा को झंझोड़ गए... उसने आसपास एक प्यार भरी दृष्टि दौड़ाई और प्रिय युवती के समक्ष घुटनों के बल बैठ गया और चेहरा उसकी देह से सटा लिया...

"तुम मेरे ही हो न?" जेम्मा ने फुसफुसाकर कहा, "जल्दी लौट आओगे न?"

"मैं तुम्हारा हूं... सिर्फ़ तुम्हारा... मैं शीघ्र ही लौटूंगा," वह बार-बार यही कहता रहा। उसका दम घुटा जा रहा था।

"मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगी, प्रिय!"

कुछ ही क्षणों बाद सानिन अपने होटल की ओर दौड़ता नज़र आया। उसने बिल्कुल ध्यान नहीं दिया कि उसके पीछे-पीछे पूर्ण अस्तव्यस्त पंतालिओने भी कंफ़ेक्शनरी के बाहर आया—कुछ चिल्लाकर बोला, फिर गरजता रहा हाथ उठा-उठाकर, मानो कोई धमकी दे रहा हो।

ठीक पौने एक बजे सानिन पोलोज़ोव के पास पहुंचा। होटल के गेट पर चार घोड़ों से जुती बग्गी पहले से तैयार खड़ी थी। सानिन को देखकर पोलोज़ोव ने सिर्फ़ इतना ही कहा: "तो तय कर लिया न?" वह हैट, रेनकोट, रबड़ के बूट पहने और कानों

में रूई ठूंसे हुए था, यद्यपि बात गर्मियों की थी, सायबान में निकल आया। बटलरों ने उसके कहने के मुताबिक उसके ढेर सारे खरीदे हुए सामान को बग्गी में ठूंस दिया, उसकी सीट पर सिल्क की गद्दियों, थैलों, पैकेटों आदि को रख दिया गया, खाने का सामान, सूटकेस वगैरह कोचवान की सीट के पीछे बांध दिया गया। पोलोज़ोव ने उदारता से उन्हें पैसे दिये। फिर भी पोलोज़ोव को खुशामदी कारिन्दे पीछे से सहारा दे रहे थे, वह आह-ऊंह करता हुआ बग्गी में घुसा और अपनी सीट पर पसरकर बैठ गया, फिर उसने सिगार सुलगाया, और तब सानिन की ओर उंगली से इशारा किया,–"भाई, अब तुम आ जाओ!" सानिन बगल में बैठ गया। पोलोज़ोव ने दरबान से कोचवान को कहलाया कि यात्रियों को ठीक-ठीक ले जाए, अगर बख़्शीश उसे पाना है; दरवाज़े बन्द हुए और बग्गी चल पड़ी।

33

इन दिनों फ्रैंकफ़र्ट से विस्बाडेन का सफ़र ट्रेन से तय करने में घंटे भर से कम समय लगता है; लेकिन उन दिनों एक्सप्रेस-डाक से यात्रा करने में तीन घंटे लगते थे। घोड़े करीब पांच बार बदलने पड़ते थे। पोलोज़ोव दांतों तले सिगार दबाये या तो ऊंघ रहा था, या इसी लहजे मे हिल-डुल रहा था, बीच-बीच में कभी-कभार कुछ बोल देता था। उसने खिड़की के बाहर एक बार भी झांककर नहीं देखा, प्रकृति के मोहक दृश्यों में उसे कोई रुचि नहीं थी, यहां तक कि उसने कहा भी: "प्रकृति उसके लिये ज़हर है!" सानिन खुद भी चुप था और प्राकृतिक दृश्य का कोई रस नहीं ले रहा था–उसके सोचने के लिये दूसरी बातें थीं। वह विचारों और स्मृतियों में खोया हुआ था। पोलोज़ोव हरेक डाक-चौकी पर ठीक-ठीक भुगतान करता था, घड़ी में समय देखता था और कोचवानों के काम के मुताबिक कम या ज़्यादा बख़्शीश देता था। आधा रास्ता तय करने के बाद उसने खाने के सामान की टोकरी में से दो संतरे निकाले और बढ़िया खुद के लिए

रखकर दूसरा सानिन की ओर बढ़ा दिया। सानिन अपने सहयात्री को एकटक निहार रहा था, कि अचानक ठहाके लगाकर हंस पड़ा।

"क्यों?" पोलोज़ोव ने अपने छोटे सफ़ेद नाखूनों से संतरे को छीलते हुए कहा।

"क्यों?" सानिन ने दोहराया, "तुम्हारे साथ अपनी इस यात्रा पर हंसी आ रही है।"

"आखिर क्यों?" पोलोज़ोव ने संतरे की एक बड़ी सी फांक मुंह में रखते हुए पूछा।

"बड़ी अजीब है यह यात्रा! कल मैंने तुम्हारे बारे में उतना ही सोचा था, जितना कि चीनी सम्राट के बारे में। और आज मैं तुम्हारे साथ यात्रा कर रहा हूं, अपनी जायदाद बेचने तुम्हारी पत्नी के पास जा रहा हूं, जिससे मेरा कोई परिचय नहीं है।"

"दुनिया में, सब कुछ मुमकिन है," पोलोज़ोव ने प्रत्युत्तर में कहा। "थोड़ा और जिओ—क्या-क्या नहीं देखोगे। मसलन, क्या तुम सोच सकते हो कि मैं घुड़सवार अर्दली बना चिट्ठियां पहुंचाया करता था, और मैं यह काम करता था: एक बार महान प्रिंस मिखाईल पाव्लोविच ने हुक्म दिया: "ज़रा सरपट दौड़ाओ मोटे को! सरपट!"

सानिन ने अपना कान खुजलाया।

"एक बात बताओ, इप्पोलीत सिदोरिच, तुम्हारी पत्नी कैसी है? उसका स्वभाव कैसा है? आखिर उसके बारे में कुछ तो मुझे जानना ही चाहिए।"

"अजी, उन्हें हुक्म देने में मज़ा आ रहा था: 'सरपट दौड़ाओ!'" पोलोज़ोव अचानक फट पड़ा। "और मुझे क्या? इसीलिए मैंने सोचा: 'भाड़ में जाएं आपके ओहदे और झब्बे! रख लीजिये इन्हें!' हां... तुम मेरी बीबी के बारे में पूछ रहे थे? क्या कहूं? इनसान ही है, जैसे सब होते हैं। सिर्फ़ उसके रास्ते में न आओ—यह उसे नापसंद है। सबसे बड़ी बात है कि उसके सामने ज़्यादा बोलते रहो... ताकि उसे हंसने का मसाला मिलता रहे। अपने प्रेम के बारे में बताओ... लेकिन बातें चटपटेदार हों, समझते हो न?"

"चटपटेदार कैसी ?"

"अरे, वैसी ही! तुमने बताया था न, कि प्रेम में पागल हो, शादी का इरादा है। बस, यही सब बताओ उसे।"

सानिन को बुरा लगा।

"तो इसमें चटपटेदार क्या है ?"

पोलोज़ोव ने सिर्फ़ नज़रें घुमा लीं। संतरे का रस उसकी ठोड़ी पर बह रहा था।

"फ्रैंकफ़र्ट खरीदारी के लिए तुम्हें पत्नी ने ही भेजा था ?" थोड़ी देर बाद सानिन ने पूछा।

"हां, उसने ही।"

"और सामान क्या-क्या खरीद लाए ?"

"खिलौने, तुम्हें नहीं मालूम !"

"खिलौने ? तुम्हारे बच्चे भी हैं ?"

पोलोज़ोव ने लहजा बदलते हुए कहा :

"ये लो! बच्चे कहां से आयेंगे ? अजी, औरतों के साज-सिंगार की चीज़ें हैं।"

"क्या इनकी परख है तुम्हें ?"

"बेशक।"

"लेकिन तुमने तो कहा था कि बीबी के मामले में कोई दखल ही नहीं देते ?"

"दूसरे मामलों में। और यह तो... बस, बोरियत से बचने के लिए करते हैं, और बीबी को मेरी पसंद का भगेगा है। मैं मोल-भाव करने में उस्ताद भी हूं !"

पोलोज़ोव अटक-अटककर बोलने लगा था ; वह शायद थक चुका था।

"तुम्हारी पत्नी बहुत अमीर है ?"

"अमीर तो है ! सिर्फ़ अपने लिए।"

"शायद तुम्हारी कोई सुनता नहीं है ?"

"लो, पति जो हूं। मौका क्यों छोड़ूं ? मुझसे उसे सुविधा ही सुविधा है। मैं लायक आदमी हूं !"

पोलोज़ोव ने रेशमी रूमाल से मुंह पोंछा और मुंह से एक फूंक निकाली, मानो कह रहा हो : "तरस खाओ, यार ! अब

और कुछ बोलने को मजबूर न करो। देख ही रहे हो, कितना तंग हो रहा हूं।"

सानिन ने उसे तंग करना छोड़ दिया और फिर गहरे सोच में डूब गया।

विस्बाडेन होटल एक महल जैसा था। बग्गी होटल के सामने रुकी। सहसा अन्दर दूर-दूर तक घंटियां बजने लगीं, शोर-शराबा और दौड़-भाग शुरू हो गई। काले फ़ॉककोट पहने हुए सलीकेदार लोग होटल के मुख्य द्वार पर मंडराने लगे। सुनहरी, चमचमाती पोशाकवाले दरबान ने अदब के साथ बग्गी का दरवाज़ा खोला।

पोलोज़ोव एक विजेता नायक की तरह बग्गी से उतरा और कालीन बिछी, खुशबू बिखेरती सीढ़ी से ऊपर चढ़ने लगा। एक आदमी उसकी ओर लपकते हुए बढ़ रहा था, वेश-भूषा भी बेहद सलीकेदार थी, लेकिन चेहरे से रूसी लग रहा था—यह जनाब पोलोज़ोव का निजी सेवक था। पोलोज़ोव उसे बता रहा था कि भविष्य में उसे भी वह अपने साथ ले चलेगा, फ़्रैंकफ़र्ट के होटल में कल उसे बिना गर्म पानी के रात बितानी पड़ी—होटलवालों की मेहरबानी थी सब! सेवक के चेहरे पर खौफ़ का भाव उभरा, और उसने मालिक के पैर के जूते फुर्ती से झुककर उतार दिये।

"मारीया निकोलायेवना अन्दर हैं न?" पोलोज़ोव ने पूछा।

"जी, हुज़ूर, मैडम कपड़े बदल रही हैं, काउंटेस लासुंस्काया के साथ डिनर पर जानेवाली हैं।"

"ओह, उसके साथ! ठहरो ज़रा! वहां बग्गी में कुछ सामान रखा है, तुम खुद उन्हें निकालो और यहां ले आओ! और तुम, द्मीत्री पाव्लोविच, अपना कमरा तय कर लो और पौन घण्टे में मेरे पास आ जाओ। डिनर हम साथ ही लेंगे।"

पोलोज़ोव मंथर गति से बढ़ चला। सानिन ने होटल में एक कमरा किफ़ायती दर पर ले लिया, जहां उसने मुंह-हाथ धोया, कपड़े बदले और थोड़ा आराम करने के बाद साहबे आलम (Durschlaucht) प्रिंस फ़ोन पोलोज़ोव के लम्बे-चौड़े अपार्टमेंट की ओर चल पड़ा।

सानिन ने इस "प्रिंस" को एक शानदार कमरे के मध्य मखमली आरामकुर्सी पर रोब से बैठे हुए देखा। सानिन का यह सुस्त दोस्त इस बीच नहा-धोकर तैयार हो चुका था और बेशकीमती सिल्क का गाउन पहने, सिर पर लाल तुर्की टोपी लगाये हुए था। उसके पास खड़ा सानिन थोड़ी देर तक उसे गौर से देखता रहा। पोलोज़ोव मूर्ति की तरह निश्चल बैठा था; यहां तक कि सानिन की ओर उसने मुड़कर देखा भी नहीं, भौंहें भी नहीं उठीं, न मुंह से उसके आवाज़ ही निकली। सच कहा जाय तो एक शानदार दृश्य था! दो-एक मिनट उसे मुग्ध भाव से देखने के बाद वह बोलना ही चाहता था, इस पवित्र शान्ति को भंग करना ही चाहता था, कि अचानक बगल के कमरे का दरवाज़ा खुला, और दहलीज़ पर एक जवान, सुंदर महिला श्वेत सिल्क के परिधान में दिखाई दी, जिस पर काले लेस लगे थे, हाथों और गले में हीरे के आभूषण दमक रहे थे—यही थी मारीया निकोलायेवना पोलोज़ोवा। उसके सघन, सुनहरे केश चेहरे के दोनों ओर झूल रहे थे—चोटी की तरह गुंथे हुए लटक रहे थे।

34

"ओह, माफ़ कीजियेगा!" वह कुछ घबड़ाते, कुछ उपहास से मुस्कराते हुए बोल पड़ी; हाथ में अपनी लट का एक सिरा पकड़े और बड़ी-बड़ी, भूरी आलोकित आंखों से सानिन को एकटक देख रही थी।

"ओहो, मुझे तो पता ही नहीं चला कि आप आ गये हैं।"

"सानिन, द्मीत्री पाव्लोविच, मेरे बचपन का दोस्त है," पोलोज़ोव ने पहले की तरह बैठे ही बैठे, बिना उसकी ओर मुड़े, लेकिन उंगली से उसकी ओर इशारा करते हुए कहा।

"हां... मैं जानती हूं... तुमने मुझे बताया था। बहुत खुशी हुई आपसे मिलकर। लेकिन मैं तुमसे अनुरोध करना चाहती थी,

इप्पोलीत सिदोरिच... मेरी नौकरानी की आज अक्ल ही गुम है..."

"क्या तुम्हारे बाल संवारने हैं?"

"हां, हां, कृपया। माफ़ कीजियेगा," मारीया निकोलायेवना ने पहले की तरह मुस्कराते हुए दोहराया, उसने सानिन की ओर सिर हिलाया, फुर्ती से मुड़ी और दरवाज़े के पार ओझल हो गई, कमरे में अपनी खूबसूरत गर्दन, अनोखे कंधों और अद्भुत ठवन की छाप छोड़ गई।

पोलोज़ोव उठा और भारी ढुलमुल चाल से उसी दरवाज़े से भीतर चला गया।

सानिन को पलांश के लिए भी यह सन्देह नहीं था कि "प्रिंस पोलोज़ोव" के अपार्टमेंट में उसकी उपस्थिति का ज्ञान मालकिन को अच्छी तरह था; सारा नाटक इसी बात का था कि वह अपने बाल दिखाये, जो सचमुच बहुत खूबसूरत थे। मैडम पोलोज़ोवा की इस चाल से सानिन मन ही मन खुश भी हुआ: यदि मुझ पर तीर ही मारने की इच्छा थी, स्वयं को दिखाने की इच्छा थी, तो कौन जानता है? जायदाद की कीमत भी ऊंची मिल जाय। उसकी आत्मा जेम्मा से ओतप्रोत थी और सभी अन्य औरतें उसके लिए कोई महत्व नहीं रखती थीं: वह शायद ही उनकी ओर ध्यान देता था; और इस बार मन ही मन इस बात तक ही सीमित रहा: "हां, ठीक ही मुझे बताया गया था: रानी जी बहुत सुंदर हैं!"

लेकिन यदि इस वक्त वह ऐसी विशेष मनःस्थिति में न होता, तो शायद कुछ और ही कहता: मारीया निकोलायेवना पोलोज़ोवा बहुत ही निराली महिला थी। यह बात नहीं कि वह बहुत सुंदर थी, यहां तक कि उसकी चाल-ढाल में उसके साधारण परिवार की छाप स्पष्ट दिखाई दे रही थी। उसका ललाट नीचा था, नाक कुछ मोटी और ऊपर उठी हुई थी; वह न अपने हाथों के सौंदर्य पर इठला सकती थी, न अपने नाज़ुक पैरों पर इतरा सकती थी, और त्वचा की कोमलता उसमें थी ही नहीं—लेकिन इन सब की क्या ज़रूरत थी? पुश्किन के शब्दों में कहा जाय, तो जो भी उससे मिलता, "सौन्दर्य की देवी"

के सामने तो नहीं, लेकिन एक सशक्त, एक रूसी या बंजारिन के खिलते नारी शरीर के सामने... और अनचाहे ही—अवश्य ठिठक जाता!

लेकिन सानिन की रक्षा जेम्मा की छवि कर रही थी, तिहरे कवच की भांति, जिसका बखान कवि लोग करते हैं।

कोई दसेक मिनट बाद मारीया निकोलायेवना पुन: अपने पति के साथ दिखाई दी। वह सानिन के निकट आई... उसकी चाल ऐसी थी कि मन चले, अफ़सोस कि वह समय बीत गया, सिर्फ़ इस चाल पर ही दीवाने हो जाते। "यह रमणी जब तुम्हारे निकट आती है, तो मानो तुम्हारी ज़िंदगी की सारी खुशियां ही तुम्हें अर्पित करने आती है"—यह उनमें से एक कहा करता था। वह सानिन के नज़दीक आई, उसकी ओर हाथ बढ़ाकर रूसी में अपने रससिक्त, मानो संयत स्वर में बोली: "आप मेरे लिए थोड़ा ठहरेंगे न? मैं जल्द ही लौटूंगी।"

सानिन शिष्टतावश झुका, मारीया निकोलायेवना ने परदे के पार ओझल होते हुए मुड़कर देखा। वह एक बार फिर मुस्करा दी, एक बार फिर कमरे में वही सुडौल छाप छोड़कर ओझल हो गई।

जब वह मुस्कराती थी, तो दोनों गालों पर एक-दो नहीं, पूरे तीन-तीन गड्ढे पड़ जाते और होंठों के बजाय, उसके सुर्ख, लम्बे रससिक्त होंठों के बजाय, जिनकी बायीं ओर दो नन्हे तिल भी थे, उसकी आंखें अधिक मुस्कराती थीं।

पोलोज़ोव कमरे में आ धमका और आरामकुर्सी पर पसर गया। वह पहले की तरह ही चुप्पी साधे रहा; लेकिन उसकी विचित्र मंद मुस्कान रह-रहकर उसके विवर्ण, झुर्रीदार गालों पर बिखर जाया करती थी।

वह अपनी उम्र से बड़ा लगता था, यद्यपि सानिन से सिर्फ़ तीन वर्ष बड़ा था।

भोजन, जिससे वह अपने अतिथि का सत्कार कर रहा था, निस्संदेह खाने के शौकीन से शौकीन आदमी को संतुष्ट कर देता, लेकिन सानिन को वह अन्तहीन और असह्य लग रहा था! पोलोज़ोव धीरे-धीरे खा रहा था, रसास्वादन और समझ के साथ,

रुक-रुककर, ध्यानपूर्वक प्लेट पर झुकते हुए, हर कौर को प्रायः सूंघते हुए; इसके बाद पहले शराब से गला तर करता, फिर होंठ चलाता... लेकिन तन्दूरी मुर्गे पर जब आया, तो अचानक बातें करने लगा—लेकिन किस बारे में? भेड़ों के बारे में, जिनके पूरे झुंड को खरीदनेवाला था—और बात वह इतने विस्तार से कर रहा था, इतने मीठे लहजे में कर रहा था, कि हर शब्द मानो चाशनी में डुबो रहा हो। तेज़ गर्म काफ़ी का एक कप पीकर (वह वेटर को कई बार रुआंसे-खीझे स्वर में याद दिला चुका था कि उसे कल ठण्डी काफ़ी पेश की गई थी!) और हवाना सिगार का सिरा अपने पीले, टेढ़े दांतों से कुतरकर अपनी आदत के मुताबिक ऊंघने लगा, जिससे सानिन को खुशी ही हुई; वह अब आहिस्ते-आहिस्ते मुलायम कालीन पर चहलकदमी करने लगा था और सपने देख रहा था कि जेम्मा के साथ जीवन कैसे गुज़रेगा और कौन सी खबर लेकर उसके पास लौटेगा। लेकिन पोलोज़ोव जग गया, उसकी अपनी ही टिप्पणी के अनुसार अक्सर जितना सोता था, उससे पहले,—वह सिर्फ़ डेढ़ घंटा ही सोया था—और बर्फ़ के साथ एक गिलास मिनरल वाटर पीकर जैम, शुद्ध रूसी जैम के आठ चम्मच चट कर गया, जिसे उसका निजी सेवक गाढ़ी हरी, असली "कीयेव" की बोतल में लाया था, और जिसके बिना, उसी के शब्दों के अनुसार, वह जी नहीं सकता था; फिर उसने अपनी फूली आंखें सानिन पर टिका दीं और उससे पूछा कि ताश खेलने का इरादा है? सानिन खुशी से तैयार हो गया; वह डर रहा था कि पोलोज़ोव कहीं फिर अपने भेड़ों, मेमनों और दुंबों का राग न अलापने लगे। मेज़बान और मेहमान दोनों मेहमानखाने में पहुंचे, वेटर ताश लाया और खेल शुरू हो गया, ज़ाहिर है कि बिना पैसों के।

इस सीधे-सादे खेल के दौरान मारीया निकोलायेवना काउंटेस लासुंस्काया के यहां से लौट आई।

जैसे ही वह कमरे में पहुंची, मेज़ पर बिखरे ताश के पत्तों को उसने देखा, वह खिलखिलाकर हंस पड़ी। सानिन अपनी जगह से उछल पड़ा, लेकिन वह बोली:

"बैठे रहिये, खेलिये। मैं अभी कपड़े बदलकर आती हूं," और फिर कपड़े सरसराती, दस्ताने उतारती गायब हो गई।

वह सचमुच बहुत जल्दी लौट आई। अपने खूबसूरत कपड़े बदलकर अब उसने बैंगनी रंग का ढीला गाउन पहन लिया, जिसकी आस्तीनें ढीली-ढाली सी थीं; उसकी कमर पर एक मोटा, बटा हुआ कमरबंद बंधा हुआ था। वह पति के पास बैठ गई और उसके हार जाने पर उससे बोली: "अच्छा, मोटू, अब बहुत हो गया! ("मोटू" शब्द सुनकर सानिन ने उसे आश्चर्य से देखा—और वह उसकी नज़र का जवाब अपनी नजर से देती हुई उल्लास से मुस्करा दी, जिससे उसके गालों के सारे गड्ढे झलक उठे)। बहुत हो गया; मैं देख रही हूं कि अब तुम सोना चाहते हो; मेरा हाथ चूमो और जाओ; हम मिस्टर सानिन के साथ अकेले में कुछ बातें करेंगे।"

"मैं सोना नहीं चाहता," आरामकुर्सी से बोझिल सा उठता हुआ पोलोज़ोव बोला, "लेकिन जाने को तो मैं चला जाऊंगा और हाथ भी चूमूंगा।" मारीया निकोलायेवना ने पहले की ही तरह मुस्कराते और सानिन को देखते हुए अपनी हथेली पति की ओर बढ़ा दी।

पोलोज़ोव ने भी सानिन को देखा और बिना विदा लिये चल दिया।

"अच्छा, सुनाइये अब, सुनाइये," चंचलता के साथ मारीया निकोलायेवना बोल उठी और एक ही साथ दोनों खुली कोहनियां मेज़ पर टिकाए अधीरता से अपने नाखूनों को परस्पर टकटकाने लगी। "क्या यह सच है कि आप शादी करने जा रहे हैं?"

इन शब्दों के साथ-साथ मारीया निकोलायेवना ने सिर भी बगल की ओर झुका दिया, ताकि और भी गहराई से सानिन की आंखों को अपनी पैनी नज़र से बेध सके।

35

मैडम पोलोज़ोवा के बेतकल्लुफ़ बर्ताव से शुरू में शायद सानिन संकोच कर बैठता – यद्यपि उसके लिये यह कोई नई बात नहीं थी और वह लोगों से व्यवहार भी करना जानता था – यदि उसे इसमें अपने काम के लिये फ़ायदा नज़र नहीं आया होता। "इस अमीर महिला के नखरों के साथ ताल मिलायेंगे और क्या," उसने मन में निश्चय किया और उसी तरह बेतकल्लुफ़ होकर जैसे वह पूछती थी, खुद भी जवाब देने लगा।

"हां, शादी का इरादा है।"

"किससे? विदेशी से?"

"हां।"

"तो क्या परिचय हाल ही में हुआ है? फ़्रैंकफ़र्ट में?"

"बेशक।"

"और कौन है वह? क्या मैं जान सकती हूं?"

"हां, वह कंफ़ेक्शनर की बेटी है।"

मारीया निकोलायेवना की आंखें खुलीं, भौंहें ऊपर चढ़ गईं।

"यह तो बहुत ही अच्छी बात है," वह मंद स्वर में बोली, "यह बहुत अच्छा है! मैं समझ रही थी कि आप जैसे युवक तो दुनिया में अब नहीं मिलते। कंफ़ेक्शनर की बेटी है!"

"आपको आश्चर्य हो रहा है," सानिन ने गरिमा के साथ कहा, "लेकिन पहली बात यह कि मैं दकियानूस नहीं हूं..."

"पहली बात यह कि मुझे कोई आश्चर्य नहीं हो रहा है," मारीया निकोलायेवना ने टोक दिया, "और दकियानूस मैं भी नहीं हूं! मैं खुद एक किसान की बेटी हूं। समझे? मुझे आश्चर्य हो रहा है और खुशी भी कि आखिर एक ऐसा आदमी है, जो प्रेम करने से नहीं डरता। आप उससे प्रेम करते हैं?"

"हां।"

"क्या वह बहुत सुंदर है?"

सानिन इस अंतिम प्रश्न से थोड़ा झिझका लेकिन अब पीछे हटने का रास्ता नहीं था।

"आप जानती हैं, मारीया निकोलायेवना," वह कहने लगा, "हर आदमी को उसकी प्रेमिका का चेहरा सबसे अच्छा लगता है, लेकिन मेरी मंगेतर सचमुच सुंदर है।"

"सचमुच? किस शैली में? इतालवी? प्राचीन यूनानी?"

"हां, उसका नाक-नक्शा बड़ा नपा-तुला हैं।"

"आपके पास उसका कोई चित्र नहीं है?"

"नहीं।" (उस ज़माने में फ़ोटोग्राफ़ी नहीं थी। डागेर पद्धति का प्रचार अभी शुरू ही हुआ था।)

"क्या नाम है उसका?"

"जेम्मा।"

"और आपका?"

"द्मीत्री।"

"और पितृनाम?"

"पाव्लोविच।"

"देखिये," मारीया निकोलायेवना वैसे ही मंद स्वर में बोली, "आप मुझे बहुत पसंद आये, द्मीत्री पाव्लोविच। आप अवश्य ही एक अच्छे आदमी हैं। आइये, हाथ बढ़ाइये। अब हम मित्र हो गये।"

उसने सानिन का हाथ अपनी ख़ूबसूरत, गोरी सशक्त उंगलियों से कसकर दबा दिया। उसके हाथ सानिन के हाथ से थोड़ा ही छोटे थे, लेकिन कहीं अधिक चिकने, मुलायम और जीवंत थे।

"लेकिन आप जानते हैं, मैं क्या सोच रही हूं?"

"क्या?"

"आप नाराज़ तो नहीं होंगे? आप कहते हैं कि वह आपकी मंगेतर है। लेकिन क्या... क्या यह सचमुच बहुत ज़रूरी था?"

सानिन के नाक-भौं सिकुड़ गये।

"मैं आपकी बात समझा नहीं, मारीया निकोलायेवना।"

मारीया निकोलायेवना धीमे से हंस पड़ी, उसने सिर झटका और गालों पर झूलती लटों को पीछे कर दिया।

"बेशक यह निराला आदमी है," वह ख़ुद से बोली, मानो

सोच में डूब गया हो, या अन्यमनस्क हो उठा हो। "बाँका है! अब उनका क्या विश्वास किया जाए, जो कहते हैं कि आदर्शवादी लोग दुनिया से उठ चुके हैं!"

मारीया निकोलायेवना पूरे समय रूसी ही बोलती रही, आश्चर्यजनक रूप से शुद्ध, बिल्कुल मास्को की रूसी में—दरबारी नफ़ासत के साथ नहीं, आम आदमी की भाषा में।

"शायद आपका लालन-पालन पुराने, धार्मिक विचारोंवाले परिवार में हुआ है?" उसने पूछा। "किस इलाके के हैं आप?"

"तूला गुबेर्नियां के।"

"तो हम एक-जवारी हैं। मेरे पिता... आप तो जानते ही हैं, कौन थे मेरे पिता?"

"हां, जानता हूं।"

"उनका जन्म तूला में हुआ था... वे भी तूला के ही थे। अच्छा, खैर... (यह "खैर" मारीया निकोलायेवना ने बड़े आम लहजे में कहा था), अब काम की बात शुरू करें।"

"काम की बात? आप कहना क्या चाहती हैं?"

मारीया निकोलायेवना ने आंखें सिकोड़ लीं।

"आप यहां आये किसलिये हैं? (जब वह आंखें सिकोड़ती थी, तो उनमें एक स्नेह और हंसी का भाव झलकने लगता था; उन्हें पूरी तरह खोलती थी, तो उनकी आलोकित और प्रायः ठंडी चमक में क्रूरता का... एक खतरे का आभास होने लगता था। उसकी भौंहें आंखों को विशेष मोहक बना रही थीं, जो थोड़ा तनी हुई थीं—सघन, कजरारी और रेशम-सी मुलायम थीं।) आप चाहते हैं कि मैं आपकी जायदाद खरीद लूं, है न? आपको शादी के लिए धन की आवश्यकता है, ठीक कह रही हूं न?"

"हां, आवश्यकता तो है।"

"और बहुत ज्यादे की आवश्यकता है क्या?"

"शुरू-शुरू में तो मैं कुछेक हजार फ़्रैंक से ही संतोष कर लेता। आपके पति को मेरी जायदाद का हाल मालूम है। आप उनसे सलाह ले सकती हैं, मैं ज़्यादा महंगी कीमत नहीं लूंगा।"

मारीया निकोलायेवना ने एक खास लहजे में सिर हिलाया।

"पहली बात यह कि," उसने रुक-रुककर कहना शुरू किया,

सानिन के जैकेट के कफ़ पर अपनी उंगली [illegible] हुए, "मुझे पति से सलाह लेने की आदत नहीं है, साज सिंगार की बातों को छोड़कर – इसमें वह माहिर है; दूसरे, आप यह क्या कहते हैं कि महंगी कीमत नहीं मांगेंगे? मैं आपके प्रेमपाश का कोई नाजायज फ़ायदा नहीं चाहती, जबकि आप हर तरह की कुर्बानी के लिए तैयार हैं... मुझे कुर्बानी नहीं चाहिये। यह कैसे हो सकता है? आपकी... कैसे कहूं? एक उदात्त भावना को प्रोत्साहित करने के बजाय क्या मैं आपकी खाल उधेड़ना शुरू कर दूं? मैं इसकी आदी नहीं। जब ज़रूरी होता है, मैं लोगों पर रहम नहीं करती – लेकिन इस तरह से नहीं।"

सानिन को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वह उसका मज़ाक उड़ा रही है या गंभीरता से कह रही है? वह सिर्फ़ मन ही मन सोच रहा था: "ज़रा संभलकर रहना!"

नौकर एक रूसी समोवार, चाय की क्राकरी, दूध, रस्क वगैरह एक बड़ी-सी ट्रे में रखकर ले आया और ये सारी चीज़ें सानिन और मैडम पोलोज़ोवा के सामने करीने से रखकर चला गया।

उसने कप में चाय पेश की।

"नाक तो नहीं सिकोड़ेंगे इससे?" उसने उंगलियों से चीनी का गुटका उठाकर उसके कप में डालते हुए पूछा... यद्यपि उसे उठाने के लिये चिमटी पास में ही रखी हुई थी।

"क्या कहती हैं! इतने सुंदर हाथों से..."

सानिन अपनी बात खत्म भी न कर पाया और चाय की चुस्की ले भी न पाया और वह बेबाक नज़र से उसे देखे जा रही थी।

"मैंने सस्ती कीमत के बारे में इसलिए कहा था," उसने बात आगे बढ़ायी, "कि फ़िलहाल आप विदेश में हैं, इसलिए मैं सोच नहीं सकता था कि आपके पास अतिरिक्त पैसे बहुत अधिक होंगे, और इसके अलावा, मैं खुद महसूस करता हूं कि ऐसी परिस्थितियों में जायदाद की बिक्री... या खरीद की बात कुछ असामान्य-सी लगती है, और ये बातें तो ध्यान में रखनी ही चाहिए।"

सानिन अपनी बातों में गड़बड़ाने लगा, बीच-बीच में अटक जाता था, मारीया निकोलायेवना हौले से आरामकुर्सी की टेक लेकर बैठने लगी। उसकी बांहें सीने पर बंधी हुई थीं, वह सानिन को उसी बेबाक नज़र से देखे जा रही थी। अंत में वह चुप हो गया।

"कोई बात नहीं, आप कहते जाइये," उसने अनुरोध के स्वर में कहा, मानो बोलने में उसकी मदद कर रही हो, "मैं सुन रही हूं, मुझे आपकी बातें सुनने में अच्छा लग रहा है; बोलते जाइये।"

सानिन अपनी जायदाद के बारे में बताने लगा कि कितनी ज़मीन है, कहां वह स्थित है, खेती लायक उसमें कितनी जगह है और उससे क्या आमदनी हो सकती है... हवेली के मनोरम स्थान के बारे में भी उसने बताया; और मारीया निकोलायेवना उसे देखे जा रही थी – और भी बेबाक नज़र से, आंख में आंख गड़ाये, उसके होंठ रह-रहकर हिल उठते थे, बिना मुस्कान के: वह उन्हें काट लिया करती थी। अंत में वह सकुचा गया और पुनः चुप हो गया।

"द्मीत्री पाव्लोविच," मारीया निकोलायेवना कुछ सोचते हुए कहने लगी... "द्मीत्री पाव्लोविच," उसने दोहराते हुए संबोधित किया, "आप जानते हैं, मुझे पूरा विश्वास है कि आपकी जायदाद की खरीद मेरे लिये बहुत फ़ायदेमंद है और हम बात तय कर लेंगे; लेकिन आप मुझे दो दिन का समय अवश्य दें... हां, दो दिन का। दो दिन तो आप अपनी मंगेतर का विछोह सह सकते हैं न? मैं आपको ज़बर्दस्ती अधिक समय तक नहीं रोकूंगी – यह वचन देती हूं। और यदि आपको पांच-छह हज़ार फ़्रैंक की अभी ही ज़रूरत है, तो बहुत खुशी से कर्ज़ दे सकती हूं, फिर बाद में हमारा हिसाब होता रहेगा।"

सानिन उठ खड़ा हुआ।

"मैं आपका कृतज्ञ हूं, मारीया निकोलायेवना, कि आप दयापूर्वक सहर्ष एक ऐसे आदमी की सहायता करने को तैयार हो गयी हैं, जिसे आप ज़रा भी नहीं जानतीं... लेकिन यदि आपके लिये यह बहुत ज़रूरी है, तो मैं जायदाद खरीदने के बारे

में आपके निर्णय का अवश्य ही इंतज़ार करना बेहतर समझूंगा और यहां दो दिन रुक लूंगा।"

"हां, मेरे लिये यह बहुत ज़रूरी है, द्मीत्री पाव्लोविच। और आपके लिये क्या यह बहुत मुश्किल होगा? बहुत? बताइये न।"

"मैं अपनी मंगेतर को प्यार करता हूं, मारीया निकोलायेवना, और उसका विछोह मेरे लिये आसान नहीं है।"

"ओह, आप सचमुच फ़रिश्ते हैं!" एक उसांस लेते हुए मारीया निकोलायेवना बोल पड़ी। "मैं वादा करती हूं कि आपको बहुत परेशान नहीं करूंगी। आप जा रहे हैं?"

"हां, देर हो चुकी है," सानिन ने कहा।

"और आपको आराम करना है, सफ़र के बाद, फिर मेरे पति के साथ ताश खेलने के बाद। एक बात बताइये, क्या आप मेरे पति इप्पोलीत सिदोरिच के बहुत अच्छे मित्र हैं?"

"हमने एक ही स्कूल में शिक्षा पाई है।"

"क्या वह उस समय भी ऐसा ही था?"

"मतलब?"

मारीया निकोलायेवना सहसा हंस पड़ी, हंसते-हंसते उसका चेहरा लाल हो गया, उसने होंठों पर रूमाल ढक लिया, आरामकुर्सी से उठ खड़ी हुई, जैसे थकी सी, लड़खड़ाती हुई सानिन के करीब आई और अपना हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया।

सानिन ने झुककर अभिवादन किया और दरवाज़े की तरफ़ बढ़ चला।

"सुनिये, सुबह ज़रा जल्दी आ जाइयेगा!" उसने पीछे से पुकारकर कहा। सानिन ने कमरे से निकलते वक्त मुड़कर देखा कि वह पुनः आरामकुर्सी पर बैठ गई है और दोनों हाथ सिर के पीछे टिके हुए है। गाउन की ढीली-ढाली आस्तीनें एकदम कंधों तक खिसक आई थीं और यह महसूस किये बगैर नहीं रहा जा सकता था कि हाथों की मुद्रा, यह संपूर्ण आकृति बहुत ही सुंदर और लुभावनी थी।

आधी रात के बाद देर तक सानिन के कमरे का लैम्प जलता रहा। वह मेज़ के सामने बैठा "अपनी जेम्मा" को पत्र लिख रहा था। उसने ब्योरेवार सभी बातें पत्र में लिखीं; पोलोज़ोव दम्पती के बारे में भी लिखा, लेकिन अधिकांश बातें उसकी निजी भावनाओं तक सीमित रहीं, और अंत में यह भी लिखा कि वह तीन दिन के अन्दर ही पहुंच रहा है!!! (वाक्य के अंत में तीन विस्मय-बोधक चिन्ह थे।) अगले दिन सबेरे-सबेरे पत्र डाक के हवाले करने के बाद वह कुरहाउस बाग की ओर घूमने चल पड़ा, जहां पहले से ही बैण्ड बज रहा था। भीड़-भाड़ अभी कम थी। वह बैण्ड-स्टैण्ड के सामने ठहर गया और "Robert le Diable" की धुन सुनने लगा—और कॉफ़ी पीने के बाद पास ही एकान्त उद्यान-पथ की एक बेंच पर बैठकर सोचने लगा।

सहसा उसके कन्धे पर छाते के हैण्डिल की एक फुर्तीली और पर्याप्त चुस्त टकटकाहट हुई। वह चौंक उठा... उसके सामने हरे-भूरे रंग का महीन वस्त्र पहने, सफ़ेद टूल का हैट लगाये, और स्वेड चमड़े के दस्ताने पहने मारीया निकोलायेवना खड़ी थी; वह ग्रीष्म की खुशनुमा सुबह की तरह तरोताज़ा और गुलाबी दिख रही थी, लेकिन चाल-ढाल और नज़र में अभी भी मीठी नींद की खुमारी झलक रही थी।

"गुड मार्निंग," उसने कहा, "मैंने सुबह आपके लिए एक आदमी भेजा था, लेकिन आप पहले ही निकल चुके थे। मैंने ज़रा देर पहले ही मिनरल वाटर का दूसरा गिलास पिया है, लेकिन जानते हैं, मुझे यहां इसे पीने के लिए मजबूर किया जाता है। राम जाने किसलिए... क्या मैं स्वस्थ नहीं हूं? और मुझे घण्टे भर ज़रूर टहलना चाहिये। क्या आप मेरा साथ देंगे? लौटकर हम लोग काफ़ी पियेंगे।"

"मैं पी चुका हूं," सानिन ने उठते हुए कहा, "आपके साथ घूमने में मुझे बहुत खुशी होगी।"

"तो अपना हाथ दीजिये... डरिये नहीं, आपकी मंगेतर यहां नहीं है–वह आपको देखेगी नहीं।"

सानिन के चेहरे पर एक मजबूर मुस्कान तैर गई। उसे हर बार एक अप्रिय अनुभूति होती थी, जब भी मारीया निकोलायेवना जेम्मा का ज़िक्र छेड़ बैठती थी। लेकिन वह पलक झपकते ही झुक गया... मारीया निकोलायेवना का हाथ आहिस्ते-आहिस्ते उसके हाथ पर मृदुता से खिसक रहा था, उस पर फिसला, मानो लिपट गया हो।

"आइये, इधर चलते हैं," मारीया निकोलायेवना ने अपने छाते को कंधे के पीछे करते हुए सानिन से कहा। "इस बगीचे में मुझे एकदम घर जैसा लगता है। मैं आपको यहां के मोहक स्थलों को दिखाऊंगी। जानते हैं (ये दो शब्द उसके तकियाकलाम थे), फ़िलहाल हम खरीद-फ़रोख्त की चर्चा नहीं करेंगे; इस मुद्दे पर नाश्ते के बाद ठीक से बातचीत कर लेंगे; आप सिर्फ़ अपने बारे में बतायेंगे... ताकि मैं जान सकूं कि सौदा किसके साथ होना है। और इसके बाद, अगर आप चाहेंगे, तो मैं भी अपने बारे में बताऊंगी। ठीक है न?"

"लेकिन, मारीया निकोलायेवना, आखिर इसमें आपकी रुचि क्या हो सकती है?"

"रुकिये, रुकिये। आप मुझे गलत समझ रहे हैं। मैं आपको नखरे नहीं दिखा रही हूं," मारीया निकोलायेवना ने कंधे उचका दिये। "नखरे उसे दिखाऊं, जिसकी मंगेतर खुद एक प्राचीन प्रतिमा जैसी सुंदर हो! लेकिन यह न भूलियेगा, आप सौदागर हैं और मैं आपके सौदे के बारे में जानना चाहती हूं। हां, तो लाइये, दिखाइये मुझे कैसा है वह? मैं सिर्फ़ सौदे की जानकारी नहीं चाहती, बल्कि यह भी जानना चाहती हूं कि उसे किससे खरीद रही हूं। यह मेरे पिता जी का वसूल था। हां, अपनी बात शुरू कीजिये... वैसे बचपन की बातें आप छोड़ सकते हैं... यह बतायें कि विदेश में आप कब से हैं? इससे पहले किस जगह थे? हां, ज़रा आहिस्ते चलिये, हमें कोई जल्दी नहीं है।"

"मैं फ़िलहाल इटली से लौटा हूं, जहां कुछेक महीने मैंने बिताये थे।"

"ऐसा लगता है कि आपका रुझान भी इतालवियों की तरफ़ है? अजीब बात है, वहां कोई अपना आशियाना नहीं मिला। आपको कला में रुचि है? पेंटिंग्स में? या संगीत ज़्यादा पसंद है?"

"कला में मुझे रुचि है... सब कुछ जो सुंदर है, मुझे पसंद है।"

"संगीत भी?"

"हां, संगीत भी।"

"और मैं उसे कतई पसंद नहीं करती। मुझे सिर्फ़ रूसी गीत अच्छे लगते हैं, और वह भी सिर्फ़ गांवों में, वसंत के दिनों में—नृत्यों के साथ-साथ... लाल रेशम, माथे पर झूलती मोती की लड़ियां, चरागाहों की नरम-नरम घास, धुवें की गंध... यह सब मुझे मोह लेता है! लेकिन प्रैंश्न मेरी पसंद का नहीं है। हां, तो कहिये, अपने बारे में सुनाइये।"

मारीया निकोलायेवना आगे बढ़ती रही, सानिन की ओर अविराम देखती रही। वह लम्बे कद की थी—उसका चेहरा प्रायः सानिन के चेहरे की ऊंचाई के बराबर था।

वह अपने जीवन के बारे में बताने लगा—पहले अनचाहे, अनगढ़ भाव से बोलता रहा, लेकिन बाद में जोश-खरोश से बोलने लगा, यहां तक कि दिल खोलकर बतियाने लगा। मारीया निकोलायेवना बुद्धिमानी से सुनती रही; फिर वह खुद इतनी स्पष्ट-भाषी प्रतीत होती थी, कि अनचाहे ही दूसरों को स्पष्ट बोलने के लिए प्रेरित करती थी। वह उस विशेष "सहजता" की स्वामिनी थी जिसे कार्डिनल रेट्ज़ le terrible don de la familiarité कहते थे। सानिन अपनी यात्राओं, पीटर्सबर्ग में बीते जीवन और अपनी युवावस्था के बारे में बता रहा था... यदि मारीया निकोलायेवना परिष्कृत आचरण की कोई भद्र महिला होती, तो सानिन कभी भी इतना खुलकर नहीं बोलता; लेकिन उसने खुद को एक निष्कपट इनसान बताया था, जो किसी भी प्रकार की औपचारिकता को भी सहन नहीं करता; उसने सानिन के समक्ष अपना यही परिचय दिया था। लेकिन साथ ही यह "निष्कपट इनसान" उसके साथ बिल्ली की चाल में चल रहा

था, वह आहिस्ते से उसकी ओर झुक-झुक जाता, उसकी आंखों में झांकता रहता; और वह चल रहा था एक [illegible] [illegible] भोग्य का रूप धारण किए हुए, जिससे मन मोह लेनेवाला, आकुल कर देनेवाला इतना शांत और दहकता हुआ प्रलोभन फूट रहा था, जो हम पापी, दुर्बल पुरुषों को एकदम बहका देने की शक्ति रखता है, और जो अकेले—वह भी कतिपय और वह भी शुद्ध नहीं, बल्कि कुछ मिश्रण के साथ—स्लाव स्वभाव का ही कमाल था।

सानिन और मारीया निकोलायेवना एक घण्टे से अधिक समय तक टहलते हुए बतियाते रहे। और एक बार भी वे कहीं रुके नहीं थे—देर तक उद्यान-पथों पर चलते रहे, कभी टीलों पर चढ़ते रहे, तो कभी प्राकृतिक दृश्यों का रस लेते रहे, कभी टीलों से नीचे उतरते रहे, वृक्षों की अभेद्य छाया में ओझल होते रहे, और पूरे समय बांह में बांह डाले रहे। रह-रहकर सानिन का हृदय कसक उठता था, वह ठिठक जाया करता था: जेम्मा के साथ, अपनी प्रिय जेम्मा के साथ वह कभी इतनी देर तक नहीं घूमा था... और यहां इस महिला ने लुभा लिया है—और बस!

"आप थकीं नहीं?" सानिन उससे कई बार यह पूछ चुका था।

"मैं कभी थकती नहीं," वह प्रत्युत्तर में यही कहा करती थी।

कभी-कभी प्रातः भ्रमण करते हुए लोग उन्हें मिल जाते थे, प्रायः सभी उसे झुककर अभिवादन करते थे—कोई विनम्रता से, कोई चापलूसी से। उनमें से एक खूबसूरत, श्यामल केशी, बांके युवक को उसने दूर से पुकारकर पेरिस के नफीस फ़्रांसीसी लहजे में कहा: "Comte, vous savez, il ne faut pas venir me voir—ni aujourd'hui, ni demain"।* उसने हैट उतारा और अभिवादन की मुद्रा में अदब से झुक गया।

"वह कौन है?" सानिन ने कहा। सभी रूसियों की तरह पूछताछ करने की उसकी भी बुरी आदत थी।

---

* जानते हैं, काउंट, मेरे यहां मत आइये—न आज, न कल।

"वह? एक फ़्रांसीसी है। वे लोग यहां घूमने आया करते हैं... वह भी मेरे गिर्द मंडराया करता है। आइये, कॉफ़ी पीने का वक्त हो चुका है। वापस घर चलते हैं, शायद आपको भूख लग रही हो। और मेरा भलामानस, शायद अब तक अपने नैन झरोखे खोल चुका हो।"

"भलामानस! नैन झरोखे!! और बोलती भी इतनी बढ़िया फ़्रांसीसी है... क्या विचित्र जीव है!" सानिन ने मन में कहा।

मारीया निकोलायेवना ने गलत नहीं सोचा था। जब वह सानिन के साथ होटल लौटी—"भलामानस" या "मोटू" वही तुर्की टोपी लगाये नाश्ते की मेज़ पर बैठ चुका था।

"मैं बड़ी देर से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था!" वह मुंह बनाते हुए चिल्लाया। "मैं तो अकेले ही काफ़ी पीने जा रहा था।"

"ठीक है, ठीक है!" मारीया निकोलायेवना ने चहकते हुए कहा। "तुम नाराज़ हो रहे थे? तुम्हारी सेहत के लिये यह अच्छा है: नहीं तो ठंड से बिल्कुल अकड़ जाओगे। लो, अपने साथ मेहमान को ले आई हूं। तुरंत घंटी बजाओ! आइये, काफ़ी पियें, दुनिया की सबसे बेहतरीन काफ़ी—उजले मेज़पोश पर शाही प्यालों से चुस्कियां लें!"

उसने अपने दस्ताने और हैट उतार फेंके, और तालियां बजाने लगी।

पोलोज़ोव उसे भौंहें तानकर देख रहा था।

"आज आप इतनी खुश क्यों हैं, मारीया निकोलायेवना?" उसने धीरे से पूछा।

"अपने काम से काम रखिये, इप्पोलीत सिदोरिच! हां, घंटी बजाओ! बैठिये, द्मीत्री पाव्लोविच, और दोबारा कॉफ़ी पीजिये! ओह, हुक्म चलाना मुझे कितना अच्छा लगता है! दुनिया में इससे बड़ा सुख नहीं है।"

"हां, जब कोई हुक्म बजानेवाला हो," पति ने बड़बड़ाते हुए कहा।

"ख़ूब, जब कोई हुक्म बजानेवाला हो! इसी बात से मैं इतनी खुश हूं। खासकर तुमसे। क्या यह सच नहीं है, मोटू? यह लो, कॉफ़ी आ गई।"

बड़ी सी ट्रे में, जिसे वेटर लेकर आया था, थियेटर प्रोग्राम का चार्ट भी थी, मारीया निकोलायेवना ने उसे झट से उठा लिया।

"ड्रामा!" उसने असंतुष्ट स्वर में कहा। "जर्मन ड्रामा। खैर, चलेगा, जर्मन कामेडी से बेहतर है।" उसने वेटर की ओर मुड़कर देखा। "मेरे लिये थियेटर में एक बाक्स बुक करो–स्टेज बाक्स होना चाहिये या ठहरो... बेहतर हो Fremden-Loge*," उसने वेटर से कहा, "सुन रहे हो न, हर सूरत में Fremden-Loge ही चाहिये!"

"लेकिन... Fremden-Loge महामहिम नगर प्रमुख (seine Excellenz der Herr Stadt-Director) के नाम पहले से बुक हुआ तो..." वेटर ने हिम्मत जुटाकर कहा।

"तो महामहिम को दस टालेर दे दो–लेकिन बाक्स मेरे नाम बुक होना चाहिये! समझे!"

वेटर ने सखेद, विनीत भाव से सिर झुका दिया।

"क्या थियेटर चलेंगे, द्मीत्री पाव्लोविच? वैसे जर्मन अभिनेता होते खौफ़नाक हैं, पर आप चलेंगे... हां? बेशक! आप कितने अच्छे हैं! और मोटू, तुम नहीं चलोगे?"

"जैसा आप कहें," पोलोज़ोव ने कॉफ़ी के प्याले की ओट से कहा, जिसे उसने होंठ से लगाया ही था।

"जानते हो: यहीं रुक जाओ। तुम हमेशा थियेटर में सोते हो, न तो जर्मन ही अच्छी तरह समझ पाते हो। अच्छा, तुम एक काम करो: मैनेजर को जवाब लिख दो–याद है न, हमारी चक्की के बाबत... किसानों का अनाज पीसने का कोई ज़िक्र आया था। साफ़-साफ़ लिख दो उसे, मेरा कोई इरादा नहीं है, नहीं

---

* विदेशियों का बाक्स।

है, नहीं है! हां, तो शाम भर के लिये यह काम काफ़ी रहेगा ..."

"ठीक है," पोलोज़ोव ने कहा।

"यह तो बहुत अच्छी बात है। तुम मेरे समझदार पति हो। और अब, महाशयो, जब से हम मैनेजर के बारे में बातें करते रहे, अब हम अपने खास मुद्दे पर आते हैं। वेटर नाश्ते की मेज़ साफ़ कर दे, उसके बाद अपनी पूरी जायदाद का मसला आप निबटा लीजियेगा। हरेक बात स्पष्ट होनी चाहिये – कीमत क्या लेंगे, बयाना कितना देना होगा, – संक्षेप में सब कुछ जो ज़रूरी है। ("आखिरकार," सानिन ने सोचा, "शुक्र है भगवान का!") आपने कुछ बातें मुझे पहले बतायी थीं – बगीचे का बढ़िया ज़िक्र चला था, लेकिन मोटू वहां नहीं था ... बेहतर हो वह भी सुन ले – शायद कुछ बक जाए! खुशी है कि मैं आपकी शादी में मददगार बन सकती हूं – और हां, मैंने तो वादा किया था कि नाश्ते के बाद आपसे बात करूंगी, और मैं हमेशा अपने वादे निभाती रही हूं। सच है न, इप्पोलीत सिदोरिच?"

पोलोज़ोव ने अपना चेहरा हथेली से पोंछ लिया।

"जो सच है, वह सच है – आप किसी को धोखा नहीं देतीं।"

"कभी नहीं! किसी को कभी भी धोखा नहीं दूंगी। आइये, द्मीत्री पाव्लोविच, काम की बात शुरू करें, जैसे सीनेट में बोलते हैं।"

37

सानिन अपना काम बताने लगा, मतलब कि फिर से अपनी जायदाद का वर्णन करने लगा, लेकिन इस बार प्राकृतिक सुंदरता को स्पर्श किये बगैर, सिर्फ़ बीच-बीच में पोलोज़ोव को साक्षी बना लेता था ताकि वह "तथ्यों और आंकड़ों" का समर्थन कर सके। लेकिन पोलोज़ोव सिर्फ़ "हुंह" कहकर सिर हिला देता था – लेकिन "हां" या "ना" में – यह शायद शैतान ही बता सकता था। वैसे,

मारीया निकोलायेवना को उसकी मदद की आवश्यकता भी नहीं थी। वह व्यापार और प्रशासन की ऐसी क्षमता प्रदर्शित कर रही थी कि आश्चर्य ही होता था। अपनी पूरी मिल्कियत की एक-एक बात वह जानती थी; वह हर चीज़ के बारे में बिल्कुल सही प्रश्न करती थी, हर चीज़ को अच्छी तरह समझ लेने की कोशिश करती थी; उसका हर शब्द लक्ष्यपूर्ण होता था। सानिन ने ऐसी परीक्षा की आशा नहीं की थी: वह इसके लिए तैयार नहीं था। यह परीक्षा पूरे डेढ़ घंटे तक चली। सानिन महसूस कर रहा था, मानो वह अपराधियों के कटघरे में सख्त और सूक्ष्मदर्शी न्यायाधीश के सामने बैठा हो। "यह तो पूरी जिरह हो गयी!" वह मन ही मन बेचैनी से कह रहा था। मारीया निकोलायेवना हर समय हंसती रही, मानो दिल्लगी कर रही हो, लेकिन सानिन को इससे कोई सुकून नहीं मिल रहा था; और जब "जिरह" के समय वह "जोत" और "ऊसर" जैसे शब्दों के अर्थ को ठीक-ठीक नहीं समझ पाया, तो यहां तक कि उसे पसीना आने लगा...

"खैर, ठीक है!" अंत में मारीया निकोलायेवना ने निष्कर्ष दिया। "अब आपकी ज़मीन-जायदाद के बारे में मैं अच्छी तरह जानती हूं... आपसे कम तो नहीं ही। एक कृषि-दास की कितनी कीमत लीजियेगा?" (उस ज़माने में जायदाद की कीमत प्रति कृषि-दास के हिसाब से आंकी जाती थी।)

"जी... मैं सोचता हूं... पांच सौ रूबल से कम तो नहीं..." सानिन बमुश्किल बोल सका। (आह, पंतालिओने, पंतालिओने, कहां हो तुम? अभी होते, तो ज़रूर बोल पड़ते: Barbari!)

मारीया निकोलायेवना ने आंखें ऊपर उठा लीं, मानो सोचने लगी हो।

"चलिये!" अंत में उसने कहा। "यह कीमत कोई भारी नहीं लग रही है। लेकिन मैंने दो दिन की मोहलत मांगी थी, इसलिए आप कल तक ज़रूर रुकें। लगता है कि मामला तय हो जाएगा – फिर बयाने की बात करेंगे। और अब basta cosi*!"

---

* बस, काम खत्म!

सानिन के आपत्ति उठाने का उपक्रम देखकर वह बोल पड़ी। "इस पतित पैसे-कौड़ी की बात बहुत हो गयी... à demain les affaires!* जानते हैं: अब मैं आपको छोड़ देती हूं (उसने इनेमल घड़ी देखी, जो उसकी कमर पर बंधी थी)... तीन बजे तक... आपको आराम करने दिया जाय। जाइये, रुलेट खेलिये।"

"मैं जुआ कभी नहीं खेलता," सानिन ने कहा।

"सचमुच? आप तो आदर्श व्यक्ति हैं। वैसे, मैं भी नहीं खेलती। पैसे फेंकना मूर्खता ही है, और क्या। तो खेल-कक्ष में चले जाइये, लोगों के चेहरे ही देखिये। दिलचस्प होते हैं। वहां मूंछोंवाली बुढ़िया है, उसके माथे पर हीरे-जवाहरत की लड़ियां झूलती हैं—लेकिन है पूरी अजूबा! वहां हमारा एक प्रिंस भी है—वह भी मज़ेदार है। देखने में तो भव्य है, नाक गरुण की तरह है, और दांव एक टालेर् का लगाता है और वास्कट के नीचे चोरी-छिपे क्रास बनाने लगता है। या फिर पत्रिकाएं पढ़िये, थोड़ा घूमिये—मतलब कि जो जी चाहे, कीजिये.. तीन बजे मैं आपकी प्रतीक्षा करूंगी... de pied ferme**... थोड़ा पहले भोजन करना होगा। थियेटर का शो इन बकलोल जर्मनों के यहां साढ़े छह बजे शुरू हो जाता है।" उसने हाथ बढ़ा दिया। "Sans rancune, n'est-ce pas?"***

"क्या कहती हैं, मारीया निकोलायेवना, मैं भला क्यों आपसे नाराज़ होने लगूं?"

"इसलिये कि मैंने आज आपको बहुत तंग किया है। देखते जाइये, अभी तो और भी तंग करूंगी," उसने आंखें सिकोड़कर कहा, जिससे उसके सुर्ख होते गालों पर सभी गड्ढे एकसाथ दिखाई देने लगे। "फिर मिलेंगे!"

सानिन ने झुककर अभिवादन किया और चला गया। पीछे से एक चहकती खिलखिलाहट सुनायी दी और आईने में, जिसके पास से वह गुज़र रहा था, इस क्षण एक दृश्य झलका: मारीया

* अब यह कल का काम है!

** बिल्कुल ठीक-ठीक।

*** पुराने मनमुटाव भूल जायें, क्यों?

निकोलायेवना ने पति की तुर्की टोपी खींचकर उसकी आंखों को ढक दिया और बेचारा बेबस होकर दोनों हाथ फटकारने लगा।

38

सानिन ने कितनी गहन खुशी की सांस ली, जब वह अपने कमरे में आया! मारीया निकोलायेवना ने ठीक ही कहा था कि उसे विश्राम करना चाहिये – विश्राम इन नये परिचयों से, नये टकरावों से, बातचीत से, इस परेशानी से, जो उसके सिर पर चढ़ आई है, इस पराई औरत के अनचाहे, आकस्मिक सामीप्य से भी! और यह सब शुरू भी कब हुआ? जिस दिन उसे पता चला कि जेम्मा उसे प्यार करती है और वह उसका मंगेतर है, ठीक अगले ही दिन से न? लेकिन यह तो पाप है! हज़ारों बार उसने मन ही मन अपनी निष्पाप, पवित्र प्रियतमा से माफ़ी मांगी होगी, यद्यपि वह स्वयं को कोई दोष नहीं दे सका, हज़ारों बार उसने जेम्मा के दिये हुए क्रास को चूमा होगा। यदि उसे अपना काम सही-सलामत पूरा करने की आशा नहीं होती, जिसके लिये वह विस्बाडेन आया था, वह सब छोड़-छाड़कर लौट गया होता – अपने प्रिय फ़्रैंकफ़र्ट को, उस प्रिय नीड़ को, जो अब उसका अपना हो चुका था, अपनी प्रियतमा के क़दमों पर गिरने के लिए... लेकिन कोई चारा नहीं था! प्याला तो अब खाली करना ही था, कपड़े बदलने थे, भोजन के लिये जाना था – फिर वहां से थियेटर को... कम से कम कल वह जल्दी से निपटारा कर देती!

एक और बात से वह व्यथित हो रहा था, क्रोधित हो रहा था: वह इतने प्यार से, इतनी आतुरता से, इतने कृतज्ञ उल्लास से जेम्मा के बारे में सोचता था, उसके साथ घर बसाने के सुखमय सपने देखता था, और यह विचित्र औरत, यह मैडम पोलोज़ोवा हर समय उसकी आंखों पर छायी रहती थी... नहीं, छायी नहीं रहती थी, चिपकी ही रहती थी, सानिन ने मन ही मन एक विशेष कुटिलता से कहा – उसके साये से वह बच नहीं

पा रहा था, उसकी आवाज़ और उसकी बातों को याद करके बच नहीं पा रहा था, उसकी पीली कुमुदनी जैसी विशेष सूक्ष्म और ताज़ा खुशबू से पीछा नहीं छुड़ा पा रहा था, जो उसके वस्त्रों से उड़ती रहती थी। यह महारानी सचमुच उसे बेवकूफ़ बनाने में लगी है, हर तरह से फंदे डाल रही है... किसलिये? उसे चाहिये क्या? क्या यह एक शोख रईस और शायद व्यभिचारिणी औरत के चोंचले भर हैं? और यह पति?! यह भी क्या जीव है? उसके साथ उसका संबंध क्या है? और उसके, सानिन के दिमाग में ये सब प्रश्न क्यों उठ रहे हैं, जिसे सच पूछें तो मिस्टर पोलोज़ोव और उसकी पत्नी से मतलब ही क्या है? वह इस चिपकी हुई छवि से छुटकारा क्यों नहीं ले पाता, उस समय भी, जब वह कहीं अधिक निर्मल और दिवालोकित छवि को हृदय से याद करता है? कैसे उस पवित्र छवि को बेधकर यह अन्दर आ जाती है? और वह आती ही नहीं है, धृष्टता से कटाक्ष भी करती है। ये भूरी-भूरी हिंसक आंखें, ये गालों पर बनते-बिगड़ते गड्ढे, ये नागिन जैसी लटें—क्या सचमुच ये सब उससे इस तरह चिपक गए हैं कि वह झटकार कर उन्हें दूर नहीं कर सकता?

बकवास है यह सब! कल सारी माया खत्म हो जायेगी... तो क्या वह कल उसे मुक्त कर देगी?

हां... ये सारे प्रश्न वह स्वयं से पूछ रहा था, तब तक तीन बज गये, उसने काला फ़ाक-कोट पहना, थोड़ी देर पार्क में घूमा और पोलोज़ोव दंपति से मिलने चल पड़ा।

उनके अतिथि-कक्ष में दूतावास का सचिव दिख गया—लंबा, श्वेतकेशी, घुड़मुंहा और मांग पीछे से ऊपर तक काढ़े हुए था (उस ज़माने में यह नया-नया फ़ैशन चला था) और... आश्चर्य! साथ में कौन था? फ़ोन ड्योनगोफ़, वही, जिसके साथ कुछ दिन पहले उसने द्वंद्वयुद्ध किया था! उसे यहां इस मुलाकात

की तनिक भी आशा नहीं थी—वह अनचाहे ही चकरा गया, लेकिन झुककर उसका अभिवादन किया।

"आप परिचित हैं क्या?" मारीया निकोलायेवना ने पूछा, जिसकी पैनी नज़र से सानिन की घबराहट छिपी न रह सकी।

"हां... मुझे इसका सौभाग्य प्राप्त हुआ था," ड्योनगोफ़ ने कहा और मारीया निकोलायेवना की ओर थोड़ा सा झुककर मुस्कराते हुए मंद स्वर में बोला, "यह वही है... आपका देशवासी... रूसी..."

"असंभव!" वह भी मंद स्वर में ही चीख पड़ी और उंगली के संकेत से धमकाते हुए उसी क्षण उन्हें विदा करने लगी—उसे और लम्बे सचिव को भी, जो सभी लक्षणों के अनुसार प्यार में दीवाना लगता था, क्योंकि जब भी मारीया निकोलायेवना की ओर देखता था, तो उसका मुंह खुला का खुला रह जाता था। ड्योनगोफ़ तुरंत चला गया आज्ञाकारी की तरह, जैसे परिवार का मित्र हो, जो एक ही बार में समझ जाता है कि उससे क्या अपेक्षा की जा रही है; सचिव हठ दिखाना चाहता था, लेकिन मारीया निकोलायेवना उसे बेमुरौवत होकर विदा करने लगी।

"जाइये, अपनी अमीरन के पास!" (उस समय विस्बाडेन में कोई Principessa di Monaco रह रही थी, जो तीसरे दर्जे की रूपजीवा प्रतीत होती थी), "यहां आप मुझ जैसी मामूली औरत के साथ बैठकर क्या कीजियेगा?"

"यह आप क्या कह रही हैं, मैडम," बेचारा सचिव गिड़गिड़ाने लगा, "दुनिया की सारी Principesse..."

लेकिन मारीया निकोलायेवना निर्मम थी, सचिव अपनी विचित्र केश-रचना झलकाता हुआ चला गया।

मारीया निकोलायेवना उस दिन खूब "सिंगार-पटार" किये थी, जैसा कि हमारी नानी-दादियां अपने लहजे में कहती हैं, खूब सजी-संवरी थी। वह महीन सिल्क का गुलाबी फ़्रॉक पहने थी, जिसकी आस्तीनें à la Fontanges* की स्टाइल में थीं, और

---

* फ़ान्टेंज की तरह (फ़्रांसीसी)। फ़ान्टेंज एक कुलीन परिवार की एक महिला थी, जो लुई चतुर्दश की प्रेयसी थी।

दोनों कानों में बड़े आकार के एक-एक हीरे झूल रहे थे। लेकिन उसकी आंखें उन हीरों से कम नही चमक रही थीं: उसका हृदय प्रफुल्ल और मन खिला हुआ था।

उसने सानिन को अपने पास बैठा लिया और उसे पेरिस के बारे में बताने लगी, जहां वह कुछ ही दिनों में रवाना होनेवाली थी, और यह कि जर्मनों से वह तंग आ चुकी है, कि वे होशियार होने का दावा करते हुए बेवकूफ़ होते हैं और जब बेवकूफ़ी करते हैं, तो अकारण अपनी होशियारी का दिखावा करते हैं; फिर अचानक, जैसा कि कहा जाता है, सीधा सामने से—à brule pourpoint—निशाना लगा बैठी और पूछा: क्या यह सच है कि यहां जो अफ़सर बैठा था, उससे एक महिला के लिये सानिन ने द्वंद्वयुद्ध किया था?

"आपको कैसे मालूम हुआ?" सानिन ने आश्चर्य से पूछा।

"पूरी दुनिया अफ़वाहों से भरी है, द्मीत्री पाव्लोविच; वैसे मैं जानती हूं कि आप सही थे, हज़ार बार सही थे, आपने एक बहादुराना काम किया था। पर यह तो बताइये, क्या यही महिला आपकी मंगेतर थी?"

सानिन की भौंहें हलकी सी सिकुड़ गईं...

"अच्छा, अच्छा, अब नहीं पूछूंगी," हड़बड़ाते हुए मारीया निकोलायेवना ने कहा। "शायद आपको यह अच्छा नहीं लगा, माफ़ कीजियेगा, अब नहीं पूछूंगी! नाराज़ न होइयेगा!" बगल के कमरे से हाथ में अखबार लिये हुए पोलोज़ोव दिखाई दिया। "क्या बात है? खाना तैयार है, क्यों?"

"खाना अभी लगा रहे हैं; ज़रा देखो तो, 'सेवेर्नाया प्चेला' में मैंने एक खबर पढ़ी है... प्रिंस ग्रोमोबोई का देहांत हो गया।"

मारीया निकोलायेवना ने सिर ऊपर उठाया।

"आह! भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे! वह हर साल," उसने सानिन की ओर मुड़कर कहा, "फ़रवरी के महीने में मेरे जन्मदिन पर सभी कमरों को कैमेलिया के फूलों से सजवाते थे। लेकिन इतनी सी बात के लिये

जाड़ों में पीटर्सबर्ग में बैठे रहना कोई मायने नहीं रखता। उनके सत्तर वर्ष तो पूरे हो ही चुके थे, क्यों?" उसने पति से पूछा।

"हां, हो चुके थे। अखबार में उनकी अंत्येष्टि की खबर छपी है। सारा शाही दरबार वहां उपस्थित था। प्रिंस कोव्रीज्किन की एक कविता भी छपी है।"

"बहुत अच्छी बात है।"

"पढ़कर सुनाऊं? प्रिंस ने उसे एक गणपति कहकर संबोधित किया है।"

"नहीं, नहीं, रहने दो! और वे गणपति क्या थे, सिर्फ़ तात्याना यूरियेव्ना के पति थे। चलिये, खाना खाने चलें। ज़िंदा आदमी ज़िंदादिली की बात करता है। द्मीत्री पाव्लोविच, अपना हाथ दीजिये।"

खाना कल जैसा ही लज़ीज़ था, और खाने का दौर हंसते, बतियाते हुए चलता रहा। मारीया निकोलायेवना किस्से सुनाने में माहिर थी... यह स्त्रियों के लिये एक दुर्लभ वरदान है और वह भी एक रूसी स्त्री के लिये! वह कुछ कहने में हिचकती भी नहीं थी, उसकी विशेष लक्ष्य थीं उसी की देशवासिनी स्त्रियां। सानिन उसकी तेज़-तर्रार बातों पर अनेक बार ठहाके मारकर हंसा। मारीया निकोलायेवना को बड़ी-बड़ी बातें, पाखण्ड और झूठ कतई बर्दाश्त न थे... जबकि उसे प्रायः हर जगह यही सब नज़र आता था। वह एक तरह से उस परिवेश की बढ़ा-चढ़ाकर प्रशंसा किये जा रही थी, जिसमें उसका जीवन आरंभ हुआ था, वह अपने ही सगे-संबंधियों के बारे में अपने बचपन के विचित्र से चुटकुले सुनाये जा रही थी; वह स्वयं को नतालिया किरीलोव्ना नारीश्किना* से कम गंवार नहीं बताती थी।

---

* ज़ार पीटर प्रथम की मां, जो कुलीन घराने की नहीं थी।

सानिन के लिए स्पष्ट हो गया कि उसने अपनी हमउम्र महिलाओं की अपेक्षा अपने जीवन में कहीं अधिक देखा और भुगता है।

पोलोज़ोव सोच-सोचकर खा रहा था, ध्यानमग्न हो जाम पर जाम पी रहा था और बीच-बीच में कभी पत्नी पर, तो कभी सानिन पर अपनी सफ़ेद, देखने में अंधी सी, लेकिन वास्तविकता में बहुत तीव्र निगाहें डाल लिया करता था।

"तुम कितने समझदार हो!" मारीया निकोलायेवना ने चहककर पति से कहा, "फ़्रैंकफ़र्ट में मेरा सारा काम तुमने कितनी अच्छी तरह निपटा दिया! इसके लिए तो मैं तुम्हारा माथा चूम लेती, पर तुम इसी के लिए तो मेरा आगा-पीछा नहीं करते रहते हो।"

"नहीं करता," पोलोज़ोव ने प्रत्युत्तर में कहा और चांदी के चाकू से अनानास काट लिया।

मारीया निकोलायेवना ने उसे देखकर उंगलियों से मेज़ को टकटकाया।

"तो हमारी बाज़ी रही न?" उसने अर्थपूर्ण लहजे में पूछा।

"रही।"

"ठीक है, तुम हार जाओगे।"

पोलोज़ोव ने ठुड्डी आगे बढ़ा दी।

"इस बार तुम ज़्यादा उम्मीद न करना, मारीया निकोलायेवना, मैं सोचता हूं कि हारना तो तुम्हीं को है।"

"कौन सी बाज़ी लगी है? क्या मैं जान सकता हूं?" सानिन ने पूछा।

"नहीं... अभी नहीं," मारीया निकोलायेवना ने जवाब दिया और हंस पड़ी।

घड़ी ने सात बजाये। वेटर ने खबर दी कि बग्गी तैयार है। पोलोज़ोव पत्नी को दरवाज़े तक छोड़ आया और फिर अपनी आरामकुर्सी पर आकर बैठ गया।

"देखना, मैनेजर को पत्र लिखना मत भूल जाना!" मारीया निकोलायेवना ने बाहर के कमरे से चिल्लाकर कहा।

"लिख दूंगा, चिंता न करो। मैं कायदे का आदमी हूं।"

39

1840 में विस्बाडेन का थियेटर बाहर से तो खराब ही था, लेकिन उसकी नाट्य-मंडली भी संवादों और ओछे छिछलेपन के कारण, दकियानूस प्रस्तुति के कारण उस स्तर से लेशमात्र भी ऊंची नहीं थी, जिसे जर्मनी के सभी थियेटरों के लिये आज भी सामान्य माना जाता है। मिस्टर डेव्रिएंट के "ख्यातिलब्ध" निदेशन में कार्लस्रूए की नाट्य-मंडली इसी का एक जीता-जागता उदाहरण थी। "महामान्या मैडम फ़ोन पोलोज़ोव" के लिये आरक्षित बाक्स के पीछे (पता नहीं वेटर किस हिकमत से इसका टिकट ले आया था, नगर प्रमुख को उसने घूस थोड़े ही दी होगी!) एक छोटा सा कमरा था, जो सोफ़ों से सज्जित था; उसमें प्रविष्ट होने से पहले मारीया निकोलायेवना ने बाक्स और थियेटर के बीच पर्दा खिसका देने का अनुरोध किया।

"मैं नहीं चाहती कि लोग मुझे देखें," उसने कहा, "नहीं तो अभी रेंगकर आ जायेंगे।"

उसने सानिन को अपने पास इस तरह बैठा लिया कि उसकी पीठ हाल की तरफ़ थी; इससे बाक्स खाली-खाली लग रहा था।

आर्केस्ट्रा ने 'फ़िगारो की शादी' का आमुख-वाद्य बजाया पर्दा उठा और नाटक शुरू हुआ। यह बहुसंख्य घिसी-पिटी कृतियों में से एक था, जिसमें प्रतिभाहीन लेखक चुनिंदा लेकिन बेजान भाषा में परिश्रम के बावजूद लचर लहजे में कोई "गंभीर" या "नाज़ुक" विचार को उभारा करते हैं। वे तथाकथित त्रासदिक द्वंद्व का मंचन करते थे और दर्शकों को बोर किया करते थे... एशियाई हैज़े की तरह। मारीया निकोलायेवना ने अंक का पूर्वार्ध बड़े धैर्य के साथ देखा, लेकिन जब प्रथम प्रेमी को अपनी प्रेमिका की बेवफ़ाई का पता चला (वह मखमली कॉलर और पफ़दार आस्तीनोंवाला फ़ाक-कोट, गुलाबी सीप के बटनोंवाला धारीदार वास्केट, चमकदार चमड़े की पट्टियोंवाली हरी पतलून और सफ़ेद स्वेड चमड़े के दस्ताने पहने हुए था), जब इस प्रेमी ने दोनों

मुट्ठियां छाती से टिकाकर कोहनियों को न्यून कोण पर फैलाये ठीक कुत्ते की तरह रोना शुरू कर दिया—मारीया निकोलायेवना और बर्दाश्त नहीं कर सकी।

"फ़्रांस के सबसे मामूली कस्बे का सबसे गया-गुज़रा अभिनेता भी जर्मनी के किसी विख्यात अभिनेता की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छी और स्वाभाविक भूमिका निभाता है," उसने चिढ़ते हुए कहा और बाक्स के पिछले कमरे में जाकर बैठ गई। "यहीं आ जाइये," उसने सोफ़े पर हाथ थपथपाते हुए कहा। "बातें ही कर लेंगे।"

सानिन ने बात मान ली।

मारीया निकोलायेवना ने उसकी ओर देखकर कहा:

"मैं देखती हूं कि आप तो बड़े विनम्र हैं! आपकी पत्नी को आसान रहेगा। यह जोकर," उसने पंखे की नोक से कलपते हुए अभिनेता की ओर इशारा करते हुए कहा, जो एक गृह-शिक्षक का अभिनय कर रहा था, "मुझे अपनी जवानी की याद दिलाता है: मैं भी शिक्षक से प्रेम करती थी। यह मेरा प्रथम... नहीं, दूसरा प्रेम था। पहली बार मैं दोन्स्कोई मठ के एक पादरी से प्रेम करने लगी थी। तब मैं बारह वर्ष की थी। मैं उसे सिर्फ़ इतवार के इतवार देखा करती थी। वह मखमल का चोगा पहनता था, लैवेंडर की खुशबू बिखेरता रहता था, धूपदानी लिये भीड़ में चलता हुआ औरतों से फ़्रांसीसी में कहता था: 'pardon, excusez'—और आंखें हमेशा नीची किये रहता था और उसकी बरौनियां इत्ती बड़ी थीं!" मारीया निकोलायेवना ने अंगूठे के नाखून से कानी उंगली का आधा हिस्सा सानिन को दिखा दिया। "मेरे शिक्षक को लोग monsieur Gaston कहा करते थे। आपको बता दूं कि वह स्विट्ज़रलैंड का एक बहुत ही विद्वान और सख्त स्वभाव का आदमी था और उसका चेहरा कितना तेजवान था! गलमुच्छे उसकी अलकतरे की तरह काली थीं, पार्श्व से गठन ग्रीसवासियों जैसा था और होंठ जैसे ढलवां लोहे के बने थे! मैं उससे डरती थी! मेरे जीवन में यही एक आदमी मिला था, जिससे मैं डरती थी। वह मेरे भाई का शिक्षक था, जो बाद में मर गया... डूब गया था। एक बंजारिन

ने भविष्यवाणी की थी कि मेरी भी अकाल मृत्यु ही होगी – लेकिन यह सब बकवास है। मैं इन बातों का विश्वास नहीं करती। क्या इप्पोलीत सिदोरिच की एक खंजर के साथ कल्पना कर सकते हैं?!"

"ज़रूरी है कि कोई खंजर से ही मरें?" सानिन ने कहा।

"यह सब बकवास है! क्या आप अंधविश्वासी हैं? मैं तो बिल्कुल ही नहीं हूं। होनी तो होकर रहेगी। Monsieur Gaston हमारे ही घर में रहते थे, ठीक मेरे कमरे के ऊपर। कभी-कभी रात में नींद खुल जाती थी, तो उनके कदमों की आहट सुनाई देती थी, वह काफ़ी देर से सोते थे – प्रेम विह्वलता... या किसी अन्य भावना से मेरा दिल बेचैनी से छटपटाने लगता था। मेरे पिता बमुश्किल साक्षर थे, लेकिन हम लोगों को उन्होंने अच्छी शिक्षा दिलायी। क्या आप जानते हैं कि मैं लातीनी भी जानती हूं?"

"आप? लातीनी!"

"जी हां – मैं। मुझे monsieur Gaston ने सिखाया था। उसके साथ मैं 'एनेइद'* पढ़ गयी थी। बहुत ही बोर चीज़ थी, लेकिन उसमें कुछ अच्छे प्रसंग भी हैं। याद है, जब दिदोन जंगल में एनेइ के साथ..."

"हां, हां, याद है," सानिन ने हड़बड़ाते हुए कहा। खुद तो वह कब का लातीनी भूल चुका और 'एनेइद' के बारे में कुछ सुनी-सुनाई बातें ही जानता था।

मारीया निकोलायेवना ने आदत के मुताबिक बगल से आंखें तिरछी ऊपर करके उसकी ओर देखा।

"लेकिन यह न सोचियेगा कि मैं बड़ी विदुषी हूं। बिल्कुल नहीं, मुझमें कोई भी प्रतिभा नहीं है। लिखना भी बमुश्किल आता है... सचमुच; ज़ोर से पढ़ नहीं पाती; न तो पियानो बजाना आता है, न पेंटिंग करना, न सिलाई-कढ़ाई ही – कुछ भी नहीं! ऐसी ही हूं मैं – और क्या!"

---

* प्राचीन यूनानी कवि वेर्जीली (ई० पू० प्रथम शती) की एक कृति।

उसने हाथ फैला दिये।

"मैं आपको यह सब बता रही हूं," वह आगे कहती गई, "पहले तो इसलिए कि इन मूर्खों का संवाद न सुनायी दे (उसने मंच की ओर इशारा किया, जहां अब अभिनेता की जगह अभिनेत्री गला फाड़ रही थी) और दूसरे कि मैं आपकी ऋणी हूं: कल आपने अपने बारे में बताया था।"

"लेकिन वह तो आप जानना चाहती थीं," सानिन ने कहा।

मारीया निकोलायेवना अचानक उसकी ओर मुड़ गयी।

"और आप क्या जानना नहीं चाहते कि मैं कैसी औरत हूं? वैसे इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है," उसने सोफ़े की गद्दियां टेकते हुए कहा, "आदमी, जिसकी शादी अभी होने जा रही है, वह भी प्रेम के वशीभूत होकर, और वह भी द्वंद्वयुद्ध के बाद... उसे भला किसी दूसरी चीज़ का खयाल क्या आयेगा?"

मारीया निकोलायेवना कुछ सोचने सी लगी और पंखे के हत्थे को अपने बड़े-बड़े दूध जैसे सफ़ेद, सुडौल दांतों से कुतरने लगी।

सानिन को लगा कि उसके मस्तिष्क में वही सम्मोहन उठने लगा है, जिससे वह आज दो दिनों से छुटकारा नहीं पा सका था।

उसके और मारीया निकोलायेवना के बीच बातचीत धीमे स्वर में हो रही थी, लगभग फुसफुसाते हुए—यह उसे और भी खिझा रही थी, बेचैन कर रही थी...

आखिर यह सब कब खत्म होगा?

कमज़ोर व्यक्तित्व के लोग खुद किसी चीज़ का अंत नहीं करते, वे अंत की प्रतीक्षा करते हैं।

मंच पर किसी ने छींक मार दी; यह छींक लेखक द्वारा नाटक में "हास्योत्पादक क्षण" या "तत्त्व" के रूप में जान-बूझकर रखा गया था; दूसरा कोई हास्योत्पादक तत्त्व निस्संदेह उसमें नहीं था: और दर्शक इस क्षण से संतुष्ट होकर हंस पड़े।

यह हंसी भी सानिन को खिझा रही थी।

ऐसे भी क्षण आते थे, जब वह बिल्कुल नहीं समझ पाता कि

वह नाराज़ है या खुश, उदास है या उल्लसित। ओह, जेम्मा उसे अगर इस स्थिति में देख पाती!

"सचमुच कितनी विचित्र बात है," अचानक मारीया निकोलायेवना कहने लगी। "आदमी ऐसे शांत स्वर में घोषित करता है: 'मैं शादी करने जा रहा हूं', लेकिन कोई भी शांत स्वर में यह नहीं कहेगा कि 'मैं पानी में छलांग लगाने जा रहा हूं'। लेकिन दोनों में फ़र्क ही क्या है? विचित्र है न?"

सानिन थोड़ा खीझ उठा।

"फ़र्क बहुत बड़ा है, मारीया निकोलायेवना! किसी-किसी को पानी में छलांग लगाते हुए डर नहीं लगता है, क्योंकि उसे तैरना आता है; और इसके अलावा... जहां तक शादी की विचित्रता का सवाल है... तो..."

वह अचानक चुप हो गया, होंठ भिंच गये।

मारीया निकोलायेवना ने पंखे से अपनी हथेली पर चोट की।

"कहिये भी, द्मीत्री पाव्लोविच, चुप क्यों हो गये—मैं जानती हूं कि आप क्या कहना चाहते हैं—'तो, महामान्या मारीया निकोलायेवना पोलोज़ोवा, आपकी शादी से अधिक विचित्र और किसी चीज़ की कल्पना नहीं की जा सकती... मैं आपके पति को अच्छी तरह से जानता हूं, बचपन से ही!' यही कहना चाहते थे न आप, तैराक उस्ताद!"

"सुनिये तो," सानिन ने कहना चाहा...

"क्या यह सच नहीं है? क्या यह सच नहीं है?" मारीया निकोलायेवना ज़िद पकड़ते हुए कहने लगी। "आप सीधे मुंह पर क्यों नहीं कहते कि मैंने गलत कहा था!"

सानिन के लिये आंख चुराना भी मुश्किल हो गया था।

"अच्छा, चलिये: सच है, यदि आप यही चाहती हैं," अंत में वह बोला।

मारीया निकोलायेवना ने सिर हिला दी।

"हां... अब रास्ते पर आये... लेकिन आप, उस्ताद तैराक,

कभी यह खुद से पूछते हैं कि इस विचित्र... कदम का कारण क्या है, और वह भी ऐसी औरत की ओर से जो न गरीब है... न बेवकूफ़ है... न कोई बदसूरत है? शायद यह जानने में आपको कोई रुचि नहीं है; लेकिन कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मैं आपको कारण बताऊंगी, लेकिन अभी नहीं, मध्यान्तर के बाद। मैं घबड़ाती हूं कि कहीं कोई आ न जाए।"

मारीया निकोलायेवना इतना कह भी नहीं पाई कि सचमुच बाहरी दरवाज़ा आधा खुल गया और बाक्स में किसी का सिर अंदर झांकता दिखाई दिया—चेहरा लाल, तेलिया और पसीने से चिपचिपा था, व्यक्ति बूढ़ा नहीं था, फिर भी मुंह पोपला था, बाल सीधे सपाट थे, नाक लटकी हुई थी, कान चमगादड़ की तरह बड़े-बड़े थे, जिज्ञासु, छोटी-छोटी कुंद आंखों पर सोने के फ़ेमवाला चश्मा था, जिसपर पिन्से-नेज़ भी लगा हुआ था। व्यक्ति ने चारों ओर निगाह दौड़ाई, मारीया निकोलायेवना को देखा और भद्दी तरह से हंस दिया सिर झुका-झुकाकर... उसकी उभरी नसोंवाली गरदन तनी हुई थी...

मारीया निकोलायेवना रूमाल हिलाते हुए उसे मना करने लगी।

"मैं घर पर नहीं हूं! Ich bin nicht zu Hause, Herr P...! Ich bin nicht zu Hause... छि-छि!"

व्यक्ति को आश्चर्य हुआ, एक जबरन हंसी हंसकर उसने लिस्ट* की तरह, जिसके कदमों पर उसे कभी झुकना पड़ा था, सिसकती आवाज़ में कहा: "Sehr gut! Sehr gut!"** और ओझल हो गया।

"यह कौन था?" सानिन ने पूछा।

"यह? विस्बाडेन का आलोचक है। 'लिख्खाड़' या भाड़े का टट्टू, जो कह लीजिये उसे। यहांवालों ने उसे खरीद रखा है, इसीलिए उसे हर चीज़ की तारीफ़ ही तारीफ़ करनी है, जबकि खुद का तो पित्त खौलता रहता है, जिसे वह बाहर करना

* एक विख्यात जर्मन संगीतज्ञ।

** बहुत अच्छा! बहुत अच्छा!

भी नहीं जानता। डरती हूं: अफ़वाह उड़ाने में वह बड़ा तेज़ है, अभी सब को बता देगा कि मैं यहां थियेटर में हूं। खैर, कोई बात नहीं।"

आर्केस्ट्रा ने वाल्स बजाना शुरू कर दिया, पर्दा फिर से सरसराया... और मंच पर फिर वही इठलाना-इतराना शुरू हो गया।

"हां, तो," मारीया निकोलायेवना ने फिर से सोफ़े पर बैठते हुए बोलना शुरू किया, "अब चूंकि आप फंस चुके हैं, अपनी मंगेतर के साहचर्य का सुख उठाने के बजाय मेरे साथ बैठने को विवश हैं... आंखें मत नचाइये और नाराज़ मत होइये – मैं आपके मन की बात समझती हूं और वादा कर चुकी हूं कि आपको छोड़ दूंगी, फिर जहां मर्ज़ी आये, चले जाइयेगा... अब मेरी आत्म-स्वीकृति सुनिये। क्या आप जानना चाहेंगे कि सबसे अधिक मुझे क्या प्रिय है?"

"स्वतंत्रता," सानिन ने बताया।

मारीया निकोलायेवना ने उसके हाथ पर हाथ रखते हुए कहा:

"हां, द्मीत्री पाव्लोविच," उसने कहा और उसकी आवाज़ में एक खास खुलापन और गंभीरता आ गई, "सबसे पहले और सबसे अधिक स्वतंत्रता ही। यह न सोचिये कि इसकी डींग हांक रही हूं, इसमें डींग की कोई बात नहीं है, लेकिन मेरे लिए यही है और हमेशा यही रहेगा, मरने तक! बचपन में मैंने काफ़ी गुलामी भुगत ली है और सब कुछ सहा है। लेकिन monsieur Gaston, मेरे शिक्षक ने मेरी आंखें खोल दीं। अब आप शायद समझ रहे होंगे कि मैंने इप्पोलीत सिदोरिच से क्यों शादी की; उसके साथ रहकर मैं स्वतंत्र हूं, बिल्कुल स्वतंत्र और उन्मुक्त हूं, हवा की तरह... और यह मैं शादी के पहले से जानती थी, मैं जानती थी कि मैं अपनी मलिका रहूंगी!"

मारीया निकोलायेवना चुप हो गई और उसने पंखे को एक ओर फेंक दिया।

"एक बात और कहूंगी आपसे: मैं मनन-चिंतन के विरुद्ध नहीं हूं... दिल खुश होता है, फिर बुद्धि आदमी को इसीलिये तो दी

गई है; लेकिन जो कुछ मैं करती हूं, उसके परिणामों के बारे में मैं कभी नहीं सोचती और जब मौका आयेगा, तो खुद पर रहम भी नहीं करती—इत्ती सी भी नहीं: इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। मैं इस पर यकीन करती हूं कि "Cela ne tire pas à conséquence"*। पता नहीं, इसका मायने रूसी में क्या होगा। जी हां, बिल्कुल tire á conséquence? आखिर यहां, इस धरती पर तो मुझसे कोई लेखा-जोखा तो नहीं मांगता न; और वहां (उसने उंगली से ऊपर इशारा किया), वहां जो चाहें करें। जब वहां मुझे दंडित करेंगे, तो मैं, खुद मैं नहीं होऊंगी। आप मेरी बात सुन रहे हैं? आप बोर तो नहीं हो रहे हैं न?"

सानिन झुककर बैठा हुआ था। उसने सिर उठाया।

"मैं बिल्कुल बोर नहीं हो रहा हूं, मारीया निकोलायेवना, और आपको बड़ी उत्सुकता से सुन भी रहा हूं। लेकिन मैं... मैं खुद से यह पूछ रहा हूं कि आखिर आप यह सब मुझे क्यों बता रही हैं?"

मारीया निकोलायेवना सोफ़े पर थोड़ा पास खिसक आई।

"खुद से पूछ रहे हैं... क्या आप इतने नासमझ हैं? या आप इतने विनम्र हैं?"

सानिन ने सिर कुछ ऊपर उठा लिया।

"मैं आपको यह सब बता रही हूं," मारीया निकोलायेवना ने शांत स्वर में कहना जारी रखा, जो दरअसल उसके चेहरे के भावों के अनुरूप नहीं था, "क्योंकि आप मुझे बहुत पसंद हैं; जी हां, आश्चर्य मत कीजिये, मैं कोई मज़ाक नहीं कर रही हूं; क्योंकि मैं नहीं चाहती कि मुझसे मिलने के बाद आप मेरे बारे में बुरा सोचें... या बुरा ही सोचें, इससे मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, लेकिन गलत न सोचें। इसीलिये तो मैं आपको यहां खींच ले आई, और आपके सामने अकेले में बैठकर सब कुछ साफ़-साफ़ कह रही हूं... जी हां, साफ़-साफ़। मैं झूठ नहीं बोलती। और यह भी देखिये, द्मीत्री पाव्लोविच, मैं जानती हूं कि आप खुद किसी से प्रेम करते हैं, उससे शादी करने जा रहे हैं... तो फिर

---

* यह परिणामहीन है

मेरी निस्स्वार्थता के साथ भी तो कुछ न्याय कीजिये! वैसे, अब आपके सामने मौका है यह कहने का: "cela ne tire pas á conséquence!"

वह हंस पड़ी, लेकिन बीच में ही रुक गई—और वह निश्चल बैठी रही, मानो वह खुद अपने ही शब्दों से चकरा गई हो, और उसकी आंखों में, जो सामान्यतः इतनी उल्लसित और निर्भय होती थीं, अचानक कुछ दब्बूपन सा, कुछ उदासी सा छलक उठा।

"नागिन! अरे, यह तो नागिन है!" इस बीच सानिन सोच रहा था, "लेकिन कितनी खूबसूरत नागिन है!"

"ज़रा मेरा दूरबीन दीजिये तो," अचानक मारीया निकोलायेवना बोल पड़ी। "मैं देखना चाहती हूं क्या सचमुच यह jeune première इतनी भद्दी है। वैसे, लगता है कि उसे सरकार ने यहां नैतिकता का पाठ पढ़ाने के लिये नियुक्त कर रखा है, ताकि युवक लड़कियों के पीछे भागा न करें।"

सानिन ने उसे दूरबीन थमा दी और उसने उसे संभालते वक्त शीघ्रता से सानिन के हाथ को अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया।

"इतने गंभीर मत बनिये," वह मुस्कराती हुई फुसफुसाकर बोली। "जानते हैं, मुझे ज़ंजीरों में बांधकर नहीं रखा जा सकता, लेकिन मैं भी तो किसी को ज़ंजीर में नहीं बांधती। मैं स्वतंत्रता को प्यार करती हूं और कर्त्तव्यों को कोई मान्यता नहीं देती—सिर्फ़ अपने लिये ही नहीं। अच्छा, अब ज़रा दूर खिसक लीजिये, थोड़ा नाटक भी देख लें।"

मारीया निकोलायेवना ने दूरबीन मंच की ओर निर्दिष्ट कर दी, और सानिन भी उसके बगल में बैठा हुआ उधर ही देखने लगा। वह हल्के अंधेरे बाक्स में उसके खूबसूरत जिस्म की गर्मी और खुशबू के झोंके में अनचाहे ही सांस ले रहा था और अनचाहे ही अपने मस्तिष्क में शाम को कही हुई उसकी सभी बातों का मंथन कर रहा था, खासकर उन बातों का, जो अन्तिम क्षणों में कही गई थीं।

नाटक एक घंटे तक और चला, लेकिन मारीया निकोलायेवना और सानिन ने जल्द ही मंच की ओर देखना बंद कर दिया। उनके बीच फिर बातचीत शुरू हो गई और बातें धीरे-धीरे उसी रास्ते पर आने लगीं, जिन पर पहले चली थीं; लेकिन इस बार सानिन कम चुप रहा। अन्दर ही अन्दर वह अपने पर और मारीया निकोलायेवना पर नाराज़ हो रहा था; वह उसके "सिद्धांत" की आधारहीनता सिद्ध करने की कोशिश कर रहा था, जैसे कि मारीया निकोलायेवना को सिद्धांतों से कोई मतलब था! वह उससे विवाद करने लगा, जिससे वह मन ही मन बहुत खुश होने लगी: जब वह बहस करने लगा है तो उसका मतलब है कि हार मान रहा है या मान ही लेगा। अब दाना चुगने लगा है, झुक रहा है, ज़िद छोड़ रहा है! वह आपत्तियां उठाती थी, हंसती थी, कभी मान लेती थी, कभी सोचने लगती थी, कभी आक्रामक हो उठती थी... इस बीच दोनों के चेहरे निकट आ गए, अब सानिन उससे आंखें नहीं चुरा रहा था... मारीया निकोलायेवना की नज़रें मानो भटक रही थीं, सानिन की सूरत पर घूम रही थीं, वह उत्तर में मुस्करा दिया करता था, औपचारिकता से ही, लेकिन मुस्करा दिया करता था। अब यह भी मारीया निकोलायेवना के ही पक्ष में था कि वह अमूर्त्त बातों में लग गया, पारस्परिक संबंधों में ईमानदारी की बात करने लगा, कर्त्तव्य की, प्रेम और विवाह की पवित्रता की बातें करने लगा... ये अमूर्त्त बातें शुरू के लिये ठीक-ठाक हैं... प्रस्थान-बिंदु के रूप में...

मारीया निकोलायेवना को अच्छी तरह जाननेवाले लोग कहते थे कि जब उसके पूरे सशक्त और सबल अस्तित्व से स्नेहमय और नम्र सी, प्रायः बालासुलभ लज्जा सी उद्भासित होने लगती थी – यद्यपि उसमें ऐसी चीज़ आयेगी कहां से?.. तब... जी हां, तब समझिये कोई खतरनाक बात होने जा रही है।

यहां भी शायद सानिन के लिये वही कुछ खतरनाक बात होने जा रही थी... अपने प्रति हिकारत वह महसूस कर लेता, यदि

पलांश भी. उसे स्वयं को संयत करने का अवसर मिल पाता; लेकिन वह संयत न हो पा रहा था, न अपनी भर्त्सना ही कर पा रहा था।

जबकि वह सुयोग हाथ से जाने नहीं दे रही थी। और ऐसा हो इसलिये रहा था कि सानिन एक ख़ूबसूरत नौजवान था! जाने-अनजाने यही मुंह से निकलता था: "क्या पता कहां भगवान देता है, कहां छीन लेता है?"

नाटक ख़त्म हुआ। मारीया निकोलायेवना ने सानिन से अनुरोध किया कि उसे शाल ओढ़ा दे और ख़ुद तब तक निश्चल खड़ी रही, जब तक सानिन मुलायम शाल से उसके सचमुच महारानी जैसे कंधों को ढकता रहा। फिर वह सानिन की बांह अपनी बांह में लिये गलियारे में निकल आई—और उसके मुंह से एक चीख़ निकलती-निकलती रह गई: ठीक बाक्स के दरवाज़े पर किसी भूत की तरह ड्योनगोफ़ खड़ा था; उसके पीछे से विस्बाडेन के आलोचक की भद्दी आकृति दिख रही थी। "लिख्खाड़" का तैलिक चेहरा कुटिल मुस्कान से चमक रहा था।

"आज्ञा दें, मैडम, मैं आपकी बग्गी ढूंढ़ दूं?" युवा अफ़सर ने कांपते स्वर में बमुश्किल संयत क्रोध की कर्कशता के साथ मारीया निकोलायेवना से पूछा।

"नहीं, धन्यवाद," उसने उत्तर दिया, "मेरा नौकर उसे ढूंढ़ लेगा। यहीं रहिये!" उसने फुसफुसाकर आदेशात्मक लहजे में कहा और सानिन को घसीटते हुए तेज़ी से आगे बढ़ गई।

"जहन्नुम में जाइये! आप मेरे पीछे क्यों पड़े हैं?" अचानक ड्योनगोफ़ लिख्खाड़ पर बरस पड़ा। किसी पर तो गुस्सा उतारना ही था उसे!

"Sehr gut! Sehr gut!"* लिख्खाड़ भुनभुनाया और सहम गया।

ड्योढ़ी पर प्रतीक्षा कर रहे मारीया निकोलायेवना के नौकर

---

* बहुत अच्छा! बहुत अच्छा!

ने पलक झपकते ही बग्गी तलाश ली, वह फ़ुर्ती से उसमें बैठ गई, उसके बाद सानिन भी बैठ गया। दरवाज़े बंद हो गये—और मारीया निकोलायेवना यकायक खिलखिलाकर हंसने लगी।

"आप हंस क्यों रही हैं?" सानिन ने पूछा।

"माफ़ कीजियेगा, कृपया... मेरे मन में अचानक आया कि यदि ड्योनगोफ़ फिर आपसे द्वंद्वयुद्ध ठान ले... इस बार मेरे कारण, कमाल हो जाता, क्यों?"

"क्या आपका उससे घनिष्ठ परिचय है?" सानिन ने पूछा।

"उससे? इस छोकरे से? यह तो मेरा नौकर सा है। आप फ़िक्र न करें!"

"मुझे कतई फ़िक्र नहीं है।"

मारीया निकोलायेवना ने उसांस ली।

"हां, यह मैं जानती हूं कि आपको कतई फ़िक्र नहीं है। लेकिन एक बात कहूं: आप इतने अच्छे हैं, मेरा एक अंतिम अनुरोध न ठुकराइयेगा। यह न भूलियेगा कि तीन दिन बाद मैं पेरिस जा रही हूं और आप फ़्रैंकफ़र्ट... फिर न जाने कब मुलाकात हो?"

"लेकिन अनुरोध क्या है?"

"आपको घुड़सवारी का शौक तो होगा ही?"

"बेशक।"

"यह हुई न बात, कल सुबह मैं आपको अपने साथ ले जाऊंगी—हम साथ-साथ शहर के बाहर सैर करने चलेंगे। घोड़े बेहतरीन होंगे। फिर लौटेंगे, काम खत्म करेंगे—और बस! आश्चर्य न कीजिये, यह मत कहियेगा कि ये सब मेरे नखरे हैं, कि मैं पगली हूं। यह सब हो सकता है, लेकिन आप सिर्फ़ इतना ही कह दीजिये—मैं तैयार हूं!"

मारीया निकोलायेवना ने उसकी ओर अपना चेहरा घुमा लिया। बग्गी में अंधेरा था, लेकिन उसकी आंखें इस अंधेरे में भी चमक उठीं।

"चलिये, मैं तैयार हूं," सानिन ने एक उसांस भरते हुए कहा।

"आह! आप उसांस ले रहे है!" मारीया निकोलायेवना

ने चिढ़ाते हुए कहा। "रास थाम ली है, तो अब यह न कहिये कि सवारी नहीं करते। नहीं, नहीं... आप बहुत अच्छे हैं--मैं भी अपना वादा निभाऊंगी। यह रहा मेरा हाथ, बिना दस्ताने का, दाहिना कामकाजू। मुझसे हाथ मिलाइये और इस पर विश्वास कीजिये। मैं कैसी औरत हूं, यह तो नहीं जानती, लेकिन आदमी मैं ईमानदार हूं—मेरे साथ बात पक्की की जा सकती है।"

यह जाने बिना कि वह क्या कर रहा है, सानिन ने उसका हाथ अपने होंठों से लगा लिया। मारीया निकोलायेवना ने आहिस्ते से अपना हाथ खींच लिया और अचानक चुप हो गई—तब तक चुप रही जब तक कि बग्गी रुकी नहीं।

वह बग्गी से उतरने लगी... यह क्या? सानिन को सिर्फ़ प्रतीत हुआ या उसने सचमुच महसूस किया कि गाल पर कोई त्वरित दहकता हुआ स्पर्श हुआ है?

"कल मिलेंगे!" मारीया निकोलायेवना सीढ़ियों पर फुसफुसाकर उससे बोली, जहां चार मोमबत्तियों का प्रकाश हो रहा था; वे कैंडिल-स्टैंड पर जल रही थीं, जिसे उनके आने पर सुनहरी पोशाकवाले दरबान ने अपने हाथ में उठा लिया था। वह आंखें नीची किये रही। "कल मिलेंगे!"

कमरे में सानिन को मेज़ पर जेम्मा का पत्र मिला। वह पलांश में... भयभीत हो उठा और तुरंत खुश भी, ताकि अपना भय खुद अपने से छिपा सके। पत्र कुछेक पंक्तियों में था। उसने खुशी व्यक्त की थी कि "काम की शुरूआत" अच्छी हुई है, सलाह दी थी कि वह धीरज रखे, यह भी लिखा था कि घर में सभी स्वस्थ हैं और उसकी वापसी का खुशी से इंतज़ार कर रहे हैं। सानिन को पत्र काफ़ी नीरस लगा, लेकिन फिर भी उसने कलम, कागज़ हाथ में उठा ही लिया... लेकिन फिर इरादा ही बदल गया। "लिखना क्या है?! कल तो लौट ही जाऊंगा... समय भी हो गया है!"

वह बिस्तर में तुरंत लेट गया और कोशिश करता रहा कि जल्द से जल्द नींद आ जाये। यदि जगा रहता तो शायद जेम्मा के बारे में सोचता रहता—और उसे नामालूम क्यों... जेम्मा

के बारे में सोचने में शर्म आ रही थी। उसकी अंतरात्मा कचोट रही थी। लेकिन उसने मन को शांत किया कि कल सब कुछ हमेशा के लिए समाप्त हो जायेगा और इस नखरेबाज़ महारानी से हमेशा के लिए विदा हो लेगा—और इस सारे बकवास को भूल जाएगा!

कमज़ोर प्रकृति के लोग ख़ुद से बातें करते वक्त ही स्फूर्तिदायक शब्दों का इस्तेमाल करते हैं।

Et puis... cela ne tire pas à conséquence!

41

सोते समय सानिन ने यही सोचा था; लेकिन अगले दिन उसने क्या सोचा, जब मारीया निकोलायेवना अधैर्य से, मूंगिया रंग के चाबुक के हत्थे से उसका दरवाज़ा खटखटाया, जब उसने अपने कमरे की दहलीज़ पर उसे देखा—घुड़सवारी की गाढ़ी नीली पोशाक का ज़मीन पर घिसटता सिरा बांह में लपेटे हुए, घुंघराले बालों के बड़े से जूड़े पर मर्दाना हैट लगाए, चेहरे का झीना नकाब कन्धे पर खिसकाये, आंखों में, होंठों पर, सारे चेहरे पर चुनौती भरी मुस्कराहट लिए—क्या सोचा था उसने तब, इस बारे में इतिहास खामोश है।

"क्यों? तैयार हैं न?" एक उल्लसित स्वर गूंजा।

सानिन ने जैकेट का बटन लगाया और चुपचाप हैट उठा लिया। मारीया निकोलायेवना ने उस पर एक प्रसन्न दृष्टि डाली, सिर हिलाकर अनुमोदन किया और फुर्ती से सीढ़ी उतरने लगी। वह भी उसके पीछे दौड़ चला।

घोड़े सड़क पर पोर्च के पास पहले से तैयार खड़े थे। उनकी संख्या तीन थी: सुनहरी ललछौंह नस्लदार घोड़ी, शुष्क थूथनी, झलकते हुए दांत, उभरी-उभरी काली आंखें, हिरनी सी टांगें, कुछ हड़ीली लेकिन ख़ूबसूरत और आग की तरह लहलहाती हुई—यह मारीया निकोलायेवना के लिये थी; दूसरा शक्तिशाली, कुछ भारी घोड़ा, गाढ़ा कत्थई, बिना किसी निशानवाला—सानिन

के लिए; तीसरा घोड़ा सईस का था। मारीया निकोलायेवना चुस्ती के साथ अपनी घोड़ी पर सवार हो गई... वह पैर पटकते हुए पूंछ उठाये, पुट्ठे सिकोड़े चौतरफ़ा घूमने लगी, लेकिन मारीया निकोलायेवना (जो बहुत अच्छी घुड़सवार थी) उसे अपनी जगह पर रोके रही: पोलोज़ोव से विदा लेना था, जो अपनी सदाबहार तुर्की टोपी पहने, गाउन का बटन खोले बालकोनी पर खड़ा रेशमी रूमाल हिला रहा था; वैसे, मुस्कराते हुए नहीं, नाक-भौं सिकोड़े हुए। सानिन भी अपने घोड़े पर सवार हो गया; मारीया निकोलायेवना ने चाबुक उठाकर पोलोज़ोव से विदा ली फिर उसे घोड़ी की मुड़ी हुई चपटी गर्दन पर फटकार दी: घोड़ी पिछले पैरों पर खड़ी हुई, आगे की ओर छलांग मारकर तेज़ सरपट चाल से दौड़ पड़ी। उसकी सारी नसें फूल गई थीं, वह रह-रहकर दांत काटने की कोशिश करती थी, फूत्कारती थी। सानिन पीछे-पीछे चल रहा था, उसकी नज़रें मारीया निकोलायेवना पर जमी थीं: करीनेदार चुस्त चोली में उसका छरहरा, लचीला जिस्म, निर्भय, चुस्त और सुडौल, आहिस्ते-आहिस्ते हिल रहा था। उसने पीछे मुड़कर सिर्फ़ आंख के इशारे से उसे अपने पास बुलाया। वह बराबर हो लिया।

"देखते हैं, कितना सुहाना दृश्य है," उसने कहा। "मैं आपसे विदा लेने से पहले कह रही हूं: आप बहुत अच्छे हैं–और आपको बाद में कोई पश्चात्ताप नहीं करना पड़ेगा।"

ये अंतिम शब्द कहकर उसने सिर कुछेक बार नीचे-ऊपर किया, मानो उनकी पुष्टि करना चाह रही हो, सानिन को उनका अर्थ समझने का अवसर दे रही हो।

वह इतनी खुश लग रही थी कि सानिन को आश्चर्य हो रहा था; उसके चेहरे पर ऐसे बड़प्पन का भाव छा गया, जैसा कि बच्चों में होता है, जब वे बहुत संतुष्ट होते हैं।

दुलकी चाल से वे थोड़ी दूर स्थित नगर-द्वार पर पहुंचे और वहां से सरपट दौड़ने लगे। मौसम बड़ा सुहाना था, बिल्कुल गर्मियों जैसा; हवा चेहरे पर ठीक सामने से थपेड़े मार रही थी, कानों में सीत्कार रही थी। वे प्रसन्न थे: युवा और स्वस्थ जीवन

की चेतना और उन्मुक्त तीव्र गति का रंग दोनों पर चढ़ा हुआ था और वह कदम-दर-कदम गहराता जा रहा था।

मारीया निकोलायेवना ने घोड़े की चाल धीमी की और फिर दुलकी चाल से चलने लगी। सानिन ने भी उसका अनुसरण किया।

"बस," वह गहरी, उल्लसित उसांस भरती हुई कहने लगी, "सिर्फ़ इसी के लिये तो जीना चाहिए। जो चाहते थे, जो असंभव लगता था, यदि पूरा कर लिया – तो बस, उसका उपयोग करो, कि हृदय खुशी से लबालब भर जाए! तब खुद को कितना खुश महसूस करता है आदमी! देखो, अभी मैं... कितनी खुश हूं! लगता है कि सारी दुनिया को बांहों में समेट लूंगी। नहीं, सारी दुनिया को नहीं! इसे तो नहीं ही," उसने किनारे-किनारे घिसटते चल रहे एक फटेहाल बूढ़े की ओर चाबुक से इशारा किया। "लेकिन उसे खुश करने को मैं तैयार हूं। यह लीजिये, यह आपके लिये है," उसने जर्मन में चिल्लाकर कहा और उसके पैरों की ओर पैसों का बटुआ फेंक दिया। भारी बटुआ (उस ज़माने में पर्स रखने का चलन नहीं था) सड़क पर खट से गिरा। राहगीर अचंभित होकर ठिठक गया, मारीया निकोलायेवना ठठाकर हंस पड़ी और घोड़े को सरपट दौड़ाने लगी।

"क्या घुड़सवारी में आपको इतना मज़ा आता है?" सानिन ने उसके बराबर घोड़ा दौड़ाते हुए पूछा।

मारीया निकोलायेवना ने पुनः घोड़ी को एकबारगी रोक दिया: वह सिर्फ़ इसी तरीक़े से लगाम लगाती थी।

"मैं तो सिर्फ़ उसके धन्यवाद से बचकर भाग निकली थी। जो मुझे धन्यवाद देता है – वह मेरा मज़ा किरकिरा कर देता है। मैंने उसके लिए थोड़े ही दान दिया था, अपने लिये दिया था। मुझे धन्यवाद देने का उसे हक कहां है? मैंने सुना नहीं, शायद आप मुझसे कुछ पूछ रहे थे।"

"मैं पूछ रहा था... मैं जानना चाहता था कि आप आज इतनी खुश क्यों हैं?"

"जानते हैं," मारीया निकोलायेवना ने कहा, उसने फिर सानिन की बात नहीं सुनी या उसने प्रश्न का उत्तर देना ही

ज़रूरी नहीं समझा। "मैं इस सईस से आजिज़ आ गई हूं, जो हमारे पीछे-पीछे लगातार चला आ रहा है और बेशक एक ही बात सोच रहा है कि ये साहबान आखिर घर कब लौटेंगे। उससे छुटकारा कैसे पाया जाये?" उसने बड़ी सफ़ाई के साथ जेब से डायरी निकाल ली। "उसे शहर पत्र पहुंचाने के लिए कहा जाय क्या? नहीं... यह नहीं चलेगा। हां, यह अच्छा रहेगा! सामने देखिये, क्या है? सराय?"

सानिन ने उस ओर देखा, जिधर वह इशारा कर रही थी।

"हां, सराय ही लगती है।"

"बहुत अच्छा। उसे इसी सराय में रुकने के लिए कहती हूं–बियर पिये, जब तक हम लोग लौट आते हैं।"

"क्या सोचेगा वह?"

"हमें इससे क्या? और सोचेगा थोड़े ही: वह तो बियर पियेगा–बस। तो सानिन, (उसने पहली बार उसे कुलनाम से संबोधित किया था), आगे बढ़िये, सरपट!"

सराय के पास आकर मारीया निकोलायेवना ने सईस को बुलाया और बताया कि उसे क्या करना है। सईस अंग्रेज़ मूल और अंग्रेज़ मिज़ाज का आदमी था; उसने चुपचाप हैट के छज्जे के पास हाथ लाकर सलाम किया, घोड़े से उतरा और लगाम उसने हाथ में थाम ली।

"अब हम आज़ाद हैं चिड़ियों की तरह!" मारीया निकोलायेवना बोल पड़ी। "कहां चलें–उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम? देखते हैं, मैं हंगेरियन राजा की तरह हूं, राज्याभिषेक के समय (उसने चाबुक के सिरे से चारों दिशाओं की ओर इशारा किया)। सब हमारा है! नहीं, जानते हैं, वह देखिये, वहां कितने प्यारे पर्वत हैं–और कैसा जंगल है! वहीं चलते हैं, पर्वतों की ओर, पर्वतों की गोद में!

In die Berge, wo die Freiheit thront!*

वह सड़क से मुड़कर संकरे, सुनसान रास्ते पर घोड़ी दौड़ाने

* पर्वतों की गोद में, जहां स्वच्छंदता का राज है।

लगी, जो लगता था कि सचमुच पहाड़ों की ओर बढ़ी जा रही थी। सानिन ने भी उसके पीछे घोड़े को एड़ लगा दी।

42

यह रास्ता जल्द ही पगडंडी में बदल गया, फिर नाला पार करके बिल्कुल ही गायब हो गया। सानिन ने लौटने की सलाह दी, लेकिन मारीया निकोलायेवना बोली, "नहीं! मैं पहाड़ों पर जाना चाहती हूं! बिल्कुल सीधे, जैसे चिड़ियां उड़ती हैं!" उसकी घोड़ी नाला पार कर गयी। सानिन भी छलांग मार गया। नाले के पार चरागाह शुरू होता था, पहले सूखा, फिर नम और उसके बाद बिल्कुल दलदली: हर जगह पानी रिस-रिसकर जमा हो रहा था, डबरे बन गये थे। मारीया निकोलायेवना जान-बूझकर इन्हीं डबरों पर घोड़ी दौड़ा रही थी, ठहाके मारकर दोहरा रही थी: "आइये, बच्चों की तरह शरारत करें!"

"जानते हैं," उसने सानिन से पूछा, "डबरों में शिकार खेलना किसे कहते हैं?"

"जानता हूं," सानिन ने प्रत्युत्तर में कहा।

"मेरे चाचा कुत्तों के साथ शिकार खेलने जाया करते थे," वह आगे बोलती रही। "मैं भी उनके साथ जाया करती थी–वसंत ऋतु में। कितना सुहाना होता था! देखिये, अब हम भी डबरों में घोड़े दौड़ा-दौड़ाकर शिकार खेल रहे हैं, छपाके उड़ा रहे हैं। लेकिन एक बात कहूं: आप रूसी हैं और इतालवी लड़की से शादी करना चाहते हैं। खैर, यह आपका सिरदर्द है। अरे, यह क्या? फिर नाला आ गया? हप्प!"

घोड़ी उसे फांद गयी–लेकिन हैट मारीया निकोलायेवना के सिर से गिर पड़ा और उसकी ज़ुल्फ़ें कन्धों पर बिखर गईं। सानिन घोड़े से उतरकर हैट उठाने ही वाला था कि वह चिल्लाकर बोली, "न, मैं खुद उठा लूंगी," ज़ीन से नीचे झुकी, चाबुक का हत्था नकाब में फंसाया और बिल्कुल ठीक: हैट उसने ज़मीन से उठाया और पहन लिया, लेकिन बिखरे बाल समेटे

बिना फिर घोड़ी दौड़ाने लगी, उसके मुंह से हुंकारने की आवाज़ भी निकल पड़ी। सानिन उसके साथ-साथ घोड़ा दौड़ाता रहा, उसी के साथ गड्ढे, सोते, घेरे आदि छलांगता रहा, कभी टीलों से नीचे दौड़ाता, तो कभी ऊपर, और उसके चेहरे को अविराम एकटक निहारता रहा। चेहरा क्या था—मानो कोई फूल खिला हो। आंखें खुली हुई थीं, अभिलषित, आलोकित, कुछ वहशी सी; होंठ, नथुने भी खुले हुए थे, स्वच्छ हवा को लोभी की तरह खींच रहे थे: देख रही थी वह बिल्कुल सीधे, सामने और जो कुछ भी देख रही थी—धरती, आकाश, सूरज और स्वयं हवा, सबको मानो समेट लेना चाहती थी, अपने अधीन कर लेना चाहती थी यह आत्मा, और सिर्फ़ एक बात का अफ़सोस था उसे: खतरों का अभाव है, वह सबको पार कर जाती! "सानिन!" वह पुकारती है, "यह तो ब्योर्गेर की लेनोरे की वीरगाथा जैसा लगता है! एक ही अंतर है कि आप मृत नहीं हैं, क्यों? मृत नहीं है न? मैं जीवित हूं!" वह एक अकथनीय शक्ति से अभिभूत हो उठी। अब यह अमाज़ोन नारी* नहीं थी, जो घोड़े को सरपट दौड़ाती थी, यह युवा नारी-सेंटावर** थी—अर्द्धपशु और अर्द्धदेवता—और शांत इलाका निश्चय ही इस विकट धमाचौकड़ी पर आश्चर्य कर रहा था!

मारीया निकोलायेवना ने आखिर अपनी घोड़ी की लगाम खींच ली, जो डबरों के छपाकों से नहायी हुई थी और मुंह से झाग छोड़ती जा रही थी। वह लड़खड़ा रही थी और सानिन के भारी-भरकम, मज़बूत घोड़े की सांस भी ऊपर-नीचे हो रही थी।

"क्यों? प्यारा है न?" मारीया निकोलायेवना ने एक अद्भुत स्वर में फुसफुसाते हुए पूछा।

"प्यारा है!" सानिन ने विस्मित होकर जवाब दिया। और उसकी धमनियों में रक्त उफन आया।

---

* ग्रीक मिथक में शौर्य के लिए विख्यात अश्वारोही वीरांगना।

** ग्रीक मिथक में सेंटावर नामक एक प्राणी, जिसका शरीर घोड़े का था और गर्दन और सिर आदमी का।

"ठहरिये जरा, अभी तो और भी क्या-क्या होगा!" उसने हाथ बढ़ा दिया। दस्ताना फट गया था।

"मैंने कहा था न कि आपको जंगल की छांह में ले जाऊंगी, पर्वतों की गोद में... ये रहे पहाड़!" सचमुच: ऊंचे-ऊंचे वृक्षों से ढके हुए पर्वत उस जगह से कोई दो सौ कदम दूर थे, जहां बांके घुड़सवार उड़कर पहुंचे थे। "देखिये: वहां रास्ता भी है। थोड़ा सुस्ता लें, फिर आगे बढ़ेंगे। लेकिन सिर्फ़ दुलकी चाल से। घोड़ों को भी दम मारने दिया जाये।"

वे चल पड़े। हाथ के एक मज़बूत झटके से मारीया निकोलायेवना ने अपने बालों को पीछे कर दिया। फिर अपने दस्तानों को देखा, और उन्हें उतार दिया।

"हाथों से चमड़े की बू आएगी," उसने कहा, "लेकिन आपको इससे कोई परेशानी तो नहीं होगी न?"

मारीया निकोलायेवना मुस्करा रही थी और सानिन भी मुस्करा रहा था। इस वहशी घुड़दौड़ ने दोनों को बिल्कुल निकट लाकर मित्र बना दिया था।

"आपकी उम्र कितनी है?" वह अचानक पूछ बैठी।

"बाईस।"

"अच्छा? मैं भी बाईस की हूं। यह बेहतरीन उम्र है। दोनों को जोड़ भी दिया जाय, तो भी बुढ़ापा पास नहीं फटकेगा। लेकिन गर्मी काफ़ी है। मेरा चेहरा सुर्ख़ तो नहीं हो रहा है?"

"पोस्ते के फूल की तरह!"

मारीया निकोलायेवना ने रूमाल से मुंह पोंछा।

"किसी तरह जंगल तक तो पहुंच जायें, फिर वहां ठंड होगी। इतना पुराना जंगल है–ठीक पुराने मित्र की तरह। आपके मित्र हैं?"

सानिन सोच में पड़ गया।

"हैं... लेकिन बहुत कम। अभिन्न मित्र नहीं हैं।"

"मेरे मित्र हैं, अभिन्न–लेकिन पुराने नहीं। यह भी तो मित्र ही है–घोड़ा। कितनी सावधानी से आपको ढोता है! हां, यहां तो बहुत ही अच्छा है! क्या सचमुच मैं परसों पेरिस चली जाऊंगी?"

"हां ... सचमुच ? " सानिन चौंक पड़ा।

"और आप फ़्रैंकफ़र्ट ? "

"मैं तो अवश्य ही फ़्रैंकफ़र्ट जाऊंगा।"

"ठीक है—भगवान भला करे! लेकिन आज का दिन हमारा, सिर्फ़ अपना है ... अपना ... अपना ! "

घोड़े जंगल के किनारे तक पहुंचे, अन्दर की ओर बढ़ने लगे। विस्तृत और कोमल छाया सब ओर से उन्हें ढके हुए थी।

"ओह, यहां तो बिल्कुल स्वर्ग है ! " मारीया निकोलायेवना के मुंह से निकला। "आइये, और घनी छाया में चलते हैं, सानिन ! "

घोड़े गहन, नीरव छाया में चलने लगे, आहिस्ते-आहिस्ते झूमते हुए, घर्र-घर्र करते हुए। जिस रास्ते पर वे जा रहे थे, वह अचानक एक ओर को मुड़कर तंग दर्रे में प्रविष्ट हो गया। उसमें हीथेर, पर्णांग, सनोबर वृक्षों के राल की, पिछले साल की सड़ी, नम पत्तियों की मिली-जुली तीखी गंध फैली हुई थी। बड़े-बड़े, भूरे पत्थरों के बीच से ताज़ी हवा के तीव्र झोंके आ रहे थे। रास्ते के दोनों तरफ़ गोल-गोल टीले उभरे हुए थे, जिन पर हरी काई जमी हुई थी।

"ठहरिये ! " मारीया निकोलायेवना ने चिल्लाकर कहा। "मैं इस मखमली जगह पर आराम करना चाहती हूं। ज़रा उतरने में मेरी मदद कीजिये तो।"

सानिन घोड़े से उतर पड़ा और उसकी ओर भागा, वह उसके कंधों का सहारा लेती हुई क्षण-भर में ज़मीन पर कूद गई और काई से ढके एक टीले पर बैठ गई। और वह दोनों घोड़ों की रासें थामे हुए सामने खड़ा रहा।

उसने सानिन पर निगाह उठाई ...

"सानिन, क्या आप भूलना जानते हैं ? "

सानिन को कल बग्गी की बात याद हो आई।

"यह प्रश्न है ... या उलाहना ? "

"उलाहने मैंने जीवन में किसी को नहीं दिये हैं। आप टोने में विश्वास करते हैं?"

"क्या?"

"टोने में—जानते हैं, हमारे यहां गीतों में जिसके बारे में गाया जाता है। रूसी लोक-गीतों में?"

"अच्छा, यह बात है!" सानिन ने शब्दों को खींचते हुए कहा।

"हां, इसी के बारे में। मैं तो विश्वास करती हूं... और आप भी करने लगेंगे।"

"टोना... जादू..." सानिन ने दोहराया। "दुनिया में सब कुछ संभव है। पहले मैं विश्वास नहीं करता था—अब करता हूं। मैं खुद को पहचान नहीं पा रहा हूं।"

मारीया निकोलायेवना ने कुछ सोचा और चौतरफ़ा निगाह दौड़ाते हुए बोली: "लगता है कि यह जगह जानी-पहचानी सी है। देखिये तो, सानिन, उस चौड़े बलूत के पीछे लकड़ी का एक लाल सलीब दिख रहा है? है न?"

सानिन ने एक ओर कुछ कदम बढ़कर देखा।

"है तो।"

मारीया निकोलायेवना मुस्करा दी।

"अच्छी बात है! मैं जानती हूं कि हम कहां हैं। अभी रास्ता नहीं भूले हैं। यह कौन ठक-ठक कर रहा है? लकड़हारा?"

सानिन ने जंगल की ओर देखा।

"हां... वहां कोई आदमी सूखी डालें काट रहा है।"

"बालों को ठीक कर लेना चाहिये," मारीया निकोलायेवना ने कहा। "नहीं तो देख लेगा, न जाने क्या सोच बैठे।" उसने हैट उतार लिया और अपनी लंबी चोटी गूंथने लगी, मौन, बड़प्पन के साथ। सानिन उसके सामने खड़ा रहा... उसके सुडौल अंग वस्त्र की काली सलवटों के नीचे से स्पष्ट झलक रहे थे, जिस पर कहीं-कहीं काई लग गई थी।

सानिन के पीछे खड़े एक घोड़े ने अचानक अपनी गर्दन झकझोर दी। वह अनचाहे ही सिर से पैर तक कांप उठा। उसके

मस्तिष्क में सब उलझ चुका था, स्नायु तारों की तरह तन गये थे। उसने यूं ही नहीं कहा था कि खुद अपने आपको पहचान नहीं पा रहा है, वह सचमुच किसी टोने से सम्मोहित था। उसके हृदय में सिर्फ़ एक ही आकांक्षा थी... एक ही विचार, एक ही अभिलाषा थी। मारीया निकोलायेवना ने उसे एक चुभती नज़र से देखा।

"चलिये, अब सब कुछ ठीक हो गया," मारीया निकोलायेवना ने हैट पहनते हुए कहा। "क्या आप बैठेंगे नहीं? आइये, यहां! नहीं, रुकिये... बैठिये नहीं! यह क्या है?"

पेड़ों की फुनगियों के पार से जंगल में भारी गड़गड़ाहट गूंज उठी।

"क्या यह बिजली है?"

"लगता है कि बिजली ही है," सानिन ने जवाब दिया।

"अरे, यह तो जश्न हो गया! बिल्कुल जश्न! बस, इसी की तो कमी थी!" तीव्र गड़गड़ाहट फिर गूंज उठी और आकाश से बल खाती सी बिजली गिरी। "शाबाश! Bis! याद है कल शाम मैंने आपसे 'एनेइद' के बारे में बताया था? उनका भी तो जंगल में बिजली से सामना हुआ था। लेकिन अब यहां से भागना चाहिए।" वह झट से उठ खड़ी हुई। "मेरी घोड़ी लाइये... अपना हाथ दीजिये। इस तरह। मैं भारी नहीं हूं।"

वह चिड़िया की तरह फुदकी और ज़ीन पर सवार हो गई। सानिन भी अपने घोड़े पर बैठ गया।

"आप घर चलीं?" उसने असमंजस से पूछा।

"घर!!" उसने स्पष्ट स्वर में जवाब दिया और लगाम संभाल ली। "मेरे पीछे-पीछे आइये," उसने प्रायः रुखाई से आदेश दिया।

वह बाहर कच्चे रास्ते पर पहुंची और लाल सलीब के पास से गुज़रकर ढलवां घाटी में उतरने लगी, एक चौराहे तक आई, दायें मुड़ी, फिर एक चट्टान पर घोड़ा दौड़ाने लगी... उसे शायद अच्छी तरह पता था कि किधर जा रही है। यह रास्ता उन्हें और भी घने जंगल में ले जा रहा था। वह मौन थी, न पीछे मुड़कर देखती ही थी; सिर्फ़ हुक्माने अंदाज़ में आगे बढ़ी जा रही

थी – और वह विनम्रता से उसका अनुसरण करता जा रहा था: उसके सम्मोहित हृदय में इच्छा शक्ति की एक चिनगारी भी अब शेष नहीं थी। वह अपने घोड़े की रफ़्तार तेज़ करती जा रही थी – उसी रफ़्तार से वह भी घोड़ा दौड़ाये जा रहा था। अंत में नन्हे फ़र-वृक्षों की गहन हरीतिमा के पार, भूरी चट्टान के पास एक टूटी-फूटी झोंपड़ी उन्हें दिखाई दी, जिसका नीचा दरवाज़ा टट्टर की दीवार में छिपा हुआ था। मारीया निकोलायेवना घोड़े को झाड़ियों के बीच से दौड़ाकर उससे कूद पड़ी और अचानक झोंपड़ी के दरवाज़े के पास आकर सानिन की ओर मुड़कर फुसफुसायी: "एनेइ!"

चार घंटे बाद मारीया निकोलायेवना और सानिन घोड़े पर ऊंघते सईस के साथ विस्बाडेन होटल लौटे। पोलोज़ोव मैनेजर के नाम पत्र हाथ में लिये हुए अपनी पत्नी से मिला। गौर से उसे देखने के बाद आखिर उसने अपने चेहरे पर असंतोष व्यक्त कर ही दिया, यहां तक कि बड़बड़ाया भी:

"क्या सचमुच मैं बाज़ी हार गया?"

मारीया निकोलायेवना ने सिर्फ़ कंधे उचका दिये।

और उसी दिन कोई दो घंटे बाद सानिन अपने कमरे में उसके सामने खड़ा था – खोया हुआ, मरणासन्न सा...

"तुम कहां जाओगे?" उसने सानिन से पूछा। "पेरिस या फ़्रैंकफ़र्ट?"

"मैं वहीं जाऊंगा, जहां तुम जाओगी – मैं तुम्हारे साथ रहूंगा, जब तक कि तुम मुझे भगा नहीं दोगी," उसने मायूसी से जवाब दिया और अपनी महारानी के सामने घुटने टेककर बैठ गया, और उसके हाथों पर अपने होंठों को सटा लिया। उसने हाथों को मुक्त किया और उन्हें उसके सिर पर रख दिया – उसकी दसों उंगलियां

उसके बालों से खेलने लगीं। वह इन मौन केशों को सहलाती, ऐंठती, मरोड़ती रही, खुद तनकर खड़ी थी, होंठों पर विजयी नागिन फुफकार रही थी—और विस्फारित तथा पूर्ण आलोकित आंखें बेरहम कुंदता के साथ-साथ विजय की तृप्ति व्यक्त कर रही थीं। अपने पंजों में नन्ही सी चिड़िया को दबोच लेनेवाले बाज़ की ऐसी ही आंखें होती हैं।

43

बस, यही कहानी द्मीत्री सानिन को याद हो आई थी, जब उसे एकांत कमरे में पुराने कागजों को सहेजते वक्त उनके बीच गार्नेट का क्रॉस मिला था। हमने जिन घटनाओं का ब्योरा दिया है, वे स्पष्ट और सिलसिलेवार उसकी कल्पना दृष्टि के सामने नाच उठीं... लेकिन उस क्षण तक पहुंचते-पहुंचते, जब वह हिकारत भरी गिड़गिड़ाहट के साथ मैडम पोलोज़ोवा से विनती कर रहा था, जब वह उसके पैरों पर घुटने टेक रहा था, जब से उसकी गुलामी शुरू हुई थी—उसने बाद के बिंबों से मुंह मोड़ लिया; वह आगे कुछ याद करना नहीं चाहता था। ऐसी बात नहीं कि वह भूल गया था—नहीं! उसे पता था, बहुत अच्छी तरह पता था कि उस क्षण के बाद क्या-क्या हुआ था, लेकिन वह शर्म से घुटने लगा था—अब भी, इतने साल बीत जाने पर भी; वह खुद के प्रति एक अदमनीय हीन भाव से भय खाने लगता था, जो उसे पूरा विश्वास था, उस पर अवश्य उफन आयेगा और एक तीव्र लहर की तरह सभी अन्य अनुभूतियों को डुबो देगा, यदि वह अपनी स्मृतियों को मौन हो जाने के लिये बाध्य नहीं करेगा। लेकिन उमड़ती स्मृतियों से वह कितना ही मुंह मोड़ता, उनका पूरी तरह दमन नहीं कर पाया। उसे उस विपन्न, आंसुओं से भरे झूठे, दयनीय पत्र की याद आई, जिसे उसने जेम्मा को भेजा, लेकिन जिसका कोई जवाब नहीं आया... क्या उसके सामने जाय, उसके पास लौटे—ऐसे झूठ के बाद, ऐसे फ़रेब के बाद—नहीं! नहीं! इतनी शर्म और ईमानदारी तो बची ही थी उसमें।

इसके अतिरिक्त उसके मन में ख़ुद के प्रति कोई विश्वास, कोई सम्मान नहीं रह गया था: अब वह किसी बात का दावा नहीं कर सकता था। सानिन को यह भी याद आया कि कैसे बाद में—ओह, शर्म! शर्म!—उसने पोलोज़ोव के नौकर को अपना सामान लाने के लिए फ़्रैंकफ़र्ट भेजा, कैसे पीठ दिखा गया, कैसे उसके मन में सिर्फ़ एक ही बात घूमती थी: जल्द से जल्द पेरिस भागे, पेरिस; कैसे वह मारीया निकोलायेवना के आदेश पर इप्पोलीत सिदोरिच के मन माफ़िक बनने का स्वांग कर रहा था, ड्योनगोफ़ के साथ नेह लगा रहा था, जिसकी उंगली पर उसने ठीक वैसी ही अंगूठी देखी, जैसी मारीया निकोलायेवना ने उसे दी थी!!! इसके बाद की स्मृतियां और भी बुरी थीं, और भी शर्मनाक थीं... वेटर उसे एक विज़िटिंग कार्ड देता है—और उस पर नाम है पंतालिओने चिप्पाटोला, महामहिम प्रिंस मोडेना के दरबारी गायक का! वह बूढ़े से छिपता है, लेकिन गलियारे में भेंट हो ही गई—उसके सामने सफ़ेद बालों के नीचे खीजा हुआ चेहरा तन जाता है; बूढ़ी आंखें जलते कोयले की भांति दहक रही हैं—बुरी तरह फटकारने और कोसने की आवाज़ें सुनाई देती हैं: "Maledizione!"* और इससे भी कठोर शब्द गूंजते हैं: "Codardo! Infame traditore!"** सानिन आंखें मीच लेता है, सिर झटकता है, बार-बार मुंह मोड़ता है—फिर भी स्वयं को सफ़री बग्घी की अगली संकरी सीट पर बैठा हुआ देखता है... पीछे की आरामदेह सीटों पर मारीया निकोलायेवना और इप्पोलीत सिदोरिच बैठे हैं—चार घोड़े विस्बाडेन की सड़क पर उन्हें सरपट खींचे लिये जा रहे हैं—पेरिस! पेरिस! इप्पोलीत सिदोरिच नाशपाती खा रहा है, जिसे उसने, सानिन ने, उसके लिये छीला है, और मारीया निकोलायेवना उसे घूर रही है और उस पर, गुलामी की ज़ंजीर में जकड़े आदमी पर उपहास से वैसी ही परिचित हंसी हंसती है, जैसी मालिक की, अधिपति की हंसी होती है...

* लानत है!

** कायर! नीच गद्दार!

लेकिन हे भगवान! वहां सड़क के कोने पर, शहर से बाहर कुछ दूर–कहीं फिर पंतालिओने तो नहीं खड़ा है–और उसके साथ कौन है? क्या एमीलियो है? हां, यह वही एमीलियो है, वही उत्साही और विश्वस्त किशोर! हाल ही में उसका किशोर हृदय अपने नायक को, अपने आदर्श को देखकर निहाल हुआ करता था, और अब उसका विवर्ण खूबसूरत चेहरा–इतना खूबसूरत कि मारीया निकोलायेवना का भी ध्यान उस ओर चला गया और वह खिड़की से झांकने लगी–यह दयालु चेहरा क्रोध और हिकारत बरसा रहा था; आंखें,–कितनी मिलती-जुलती हैं उन आंखों से!–सानिन को बेधती हुई देखती हैं, और होंठ भिंच जाते हैं... और अचानक अपमान से खुल जाते हैं...

और पंतालिओने हाथ बढ़ाकर सानिन की ओर दिखाता है–किसको? पास ही खड़े तर्तालिया को, और तर्तालिया सानिन पर भूंकता है–और वफ़ादार कुत्ते के भूंकने की आवाज़ असह्य अपमानजनक लगती है... वीभत्स!

और उसके बाद पेरिस का जीवन–गुलाम की सारी अपमानजनक घृणित पीड़ा, ऐसे गुलाम की, जिसे ईर्ष्या की भी अनुमति नहीं थी, न ही गिले-शिकवे की, और जिसे अंत में पुराने वस्त्र की तरह उतार फेंकते हैं...

फिर स्वदेश वापसी, ज़हर भरा रीता जीवन, छोटी-छोटी चिंताएं, छोटी-मोटी परेशानियां, कटु और निष्फल पश्चाताप और वही कटु और निष्फल उपेक्षा–सज़ा सीधी नहीं है, लेकिन पल-पल की, हमेशा, हमेशा की, वैसी ही हल्की सी लेकिन लाइलाज पीड़ा जैसे ऋण की दमड़ी-दमड़ी में वापसी, जिसकी गणना नहीं है...

अब दुख का प्याला लबालब हो चुका है–बस!

सानिन के पास जेम्मा का दिया हुआ क्रॉस बचा कैसे रह गया, उसने उसे लौटाया क्यों नहीं, यह कैसे हुआ कि इससे पहले एक बार भी वह दिखा नहीं? वह देर तक बैठा सोचता

रहा और जीवन के तमाम अनुभव के बावजूद वह समझ नहीं पा रहा था कि वह जेम्मा को छोड़ कैसे सका, जिसे वह इतनी आत्मीयता से, इतनी तन्मयता से प्यार करता था – और वह भी एक ऐसी औरत के लिए, जिसे वह बिल्कुल ही प्यार नहीं करता था... अगले दिन उसने अपने मित्रों और परिचितों को अचंभे में डाल दिया: बताया कि विदेश जा रहा है।

लोगों को कुछ समझ नहीं आ रहा था – सर्दियों में अभी-अभी पीटर्सबर्ग में किराये पर लिये फ़र्नीचर से सजे-सजाए घर को छोड़कर सानिन जा रहा था; यहीं नहीं, उसने इतालवी ओपेरा के खरीदे हुए सीज़न-टिकटों की भी परवाह न की, जिसमें खुद मैडम पाट्टी अभिनय कर रही थी, खुद मैडम पाट्टी! मित्र और परिचित कुछ समझ नहीं पा रहे थे, लेकिन लोगों का यह स्वभाव ही है कि पराये आदमी के बारे में अधिक समय तक ध्यान नहीं दे पाते। सानिन जब विदेश जा रहा था, रेलवे स्टेशन पर अकेला एक फ़्रांसीसी दर्ज़ी ही उसे छोड़ने आया था, वह भी इस आशा में कि पुराना हिसाब चुकता हो जाय – "pour un saute-en-barque en velours noir, tout à fait chic"*।

44

सानिन ने मित्रों से बताया कि विदेश जा रहा है, लेकिन कहां, यह नहीं। पाठक सरलता से समझ गये होंगे कि वह सीधा फ़्रैंकफ़र्ट रवाना हुआ था। सर्वत्र रेलवे लाइन बिछ जाने के कारण पीटर्सबर्ग से निकलने के चौथे दिन ही वह वहां पहुंच गया। वह 1840 के बाद से वहां एक बार भी नहीं आया था। होटल 'श्वेत हंस' अपनी जगह पर मौजूद था और समृद्ध हो रहा था, हां, अब वह प्रथम श्रेणी का होटल नहीं माना जाता था; फ़्रैंकफ़र्ट की मुख्य सड़क ट्सैल में कोई खास तबदीली नहीं आई थी, लेकिन वह घर तो क्या पूरी गली का अब नामोनिशान नहीं बचा था,

---

* काले मखमल के बने सबसे फ़ैशनेबुल जैकेट के लिए।

जहां मैडम रोज़ेली कभी रहती थी और जहां कनफ़ेक्शनरी हुआ करती थी। सानिन चकराया हुआ उन स्थलों पर घूमता रहा जो कभी उसके इतने परिचित थे, लेकिन अब कुछ भी पहचान नहीं पा रहा था: पुरानी इमारतें गायब हो चुकी थीं, उनकी जगह नई सड़कें आबाद थीं, जिनमें कतारबद्ध बड़े-बड़े भवन थे, खूबसूरत बंगले भी थे; यहां तक कि वह सार्वजनिक बाग भी, जहां जेम्मा से उसकी अंतिम बार मुलाकात हुई थी, इतना बदल चुका था कि सानिन खुद से पूछने लगा: क्या यह वही बाग है? अब वह क्या करे? कहां पूछताछ करे? तीस वर्ष बीत चुके थे... पता लगाना कोई आसान काम नहीं है! किसी से भी वह पूछता, मैडम रोज़ेली का किसी ने नाम भी नहीं सुना था; होटल मालिक ने सलाह दी कि वह सार्वजनिक पुस्तकालय में जाकर पता करे: वहां पुराने अखबार सुरक्षित रहते हैं, शायद उनसे कोई सुराग मिल सके! लेकिन इससे लाभ ही क्या होता, यह मालिक नहीं बता पाया। सानिन ने निराश होकर क्लूबेर महाशय के बारे में पूछा। इस नाम से मालिक परिचित था, लेकिन यहां भी असफलता ही हाथ लगी। वह नफ़ीस व्यापारी फलता-फूलता एक बड़ा पूंजीपति बन गया था, नाम भी खूब कमाया, लेकिन अंत में दिवाला पिट गया और जेल में उसकी मृत्यु हो गई... वैसे, इस खबर से सानिन को थोड़ा सा भी अफ़सोस नहीं हुआ। अब उसे लग रहा था कि उसने यात्रा सोच-समझकर शुरू नहीं की थी... लेकिन एक दिन फ़्रैंकफ़र्ट की ऐड्रेस डायरेक्टरी पलटते वक्त अचानक उसकी नज़र एक नाम पर पड़ी – फ़ोन ड्योनगोफ़, रिटायर्ड मेजर (Major a. D.)। उसने तुरंत बग्गी ली और उसके यहां चल दिया – यद्यपि सोचा जाय, तो यह वही ड्योनगोफ़ क्योंकर हो और अगर हो भी तो उसके पास रोज़ेली परिवार का अता-पता ही क्योंकर हो? कोई फ़र्क तो नहीं पड़ता था: डूबते को तिनके का सहारा काफ़ी होता है।

सानिन को रिटायर्ड मेजर फ़ोन ड्योनगोफ़ घर पर ही मिल गया और स्वागत करनेवाले श्वेतकेशी बुजुर्ग को देखते ही सानिन ने अपने पुराने प्रतिद्वंद्वी को पहचान लिया। उसने भी सानिन को पहचान लिया और उसके आने से खुश ही हुआ: सानिन ने उसे

यौवन की, यौवन की शरारतों की याद दिला दी थी। सानिन को उससे पता चला कि रोज़ेली का परिवार मुद्दतों पहले अमरीका में न्यूयार्क जा बसा था; जेम्मा ने एक दलाल से शादी कर ली थी; वैसे ड्योनगोफ़ का भी एक परिचित दलाल है, जिसके पास शायद उसके पति का पता हो, क्योंकि अमरीका के साथ भी उसका काफ़ी कारोबार है। सानिन ने ड्योनगोफ़ को उस परिचित दलाल के यहां जाने को मना लिया—और हुई भी कितनी खुशी की बात! ड्योनगोफ़ उसके लिए जेम्मा के पति मिस्टर जेरेमी स्लोकम का पता लेता आया—Mr. I. Slocum, New York, Broadway, № 501. लेकिन यह पता 1863 का था।

"अब आशा करें," ड्योनगोफ़ ने खुशी-खुशी कहा, "कि हमारी फ़्रैंकफ़र्ट की रूपसी अभी भी जीवित है और न्यूयार्क छोड़कर कहीं नहीं गई है! खैर," उसने आवाज़ थोड़ी धीमी करते हुए कहा, "और वह रूसी महिला, आपको याद हैं, जो उस समय विस्बाडेन में कुछ समय के लिए आई थी—मैडम फ़ोन पो... फ़ोन पोलोज़ोव—अभी जिन्दा है?"

"नहीं," सानिन ने जवाब दिया, "वह कब की मर चुकी है।"

ड्योनगोफ़ ने नज़रें उठाईं, लेकिन यह देखकर कि सानिन ने नाक-भौं सिकोड़ ली हैं, उसने आगे एक भी शब्द नहीं कहा और चला गया।

उसी दिन सानिन ने मैडम जेम्मा स्लोकम को एक पत्र भेजा। इस पत्र में उसने लिखा कि वह फ़्रैंकफ़र्ट से पत्र भेज रहा है, जहां वह सिर्फ़ इसलिए आया है कि उसका पता-ठिकाना मालूम हो; वह अच्छी तरह महसूस कर रहा है कि लेशमात्र भी इसका अधिकारी है कि जेम्मा उसे कोई जवाब दे; कि वह क्षमा का पात्र बिल्कुल नहीं है और उसे सिर्फ़ यही आशा है कि जिन खुशहाल परिस्थितियों में वह जी रही है, उनमें उसके, सानिन

के अस्तित्व को वह कब की भूल चुकी होगी। उसने यह भी लिखा कि अपनी याद दिलाने का निर्णय उसने एक सांयोगिक घटना के वश लिया है, जिसने अतीत की स्मृतियों को अचानक इतना जीवन्त कर दिया है; उसने अपने एकाकी, परिवारहीन, नीरस जीवन के बारे में लिखा; उसने इस समय उसकी ओर उन्मुख होने का कारण समझने की मिन्नत की और यह कि अपराध बोध को लिये हुए कब्र में न चला जाय, जिसके लिए उसने इतनी पीड़ा सही है, लेकिन माफ़ी नहीं मिली है: वह एक नन्ही सी खबर से ही खुश हो लेगा कि उस नई दुनिया में वह कैसे जी रही है, जहां वह जा बसी है। "सिर्फ़ एक शब्द लिखकर," सानिन ने पत्र इस तरह समाप्त किया था, "आप बहुत बड़ा उपकार करेंगी, जो आपके उदार हृदय की महानता के माफ़िक होगा, और मैं अंतिम सांस तक आपका ऋणी रहूंगा। मैं यहां 'श्वेत हंस' होटल में ठहरा हूं (नाम को उसने रेखांकित कर दिया) और यहां वसंत तक आपके उत्तर की प्रतीक्षा करूंगा।"

उसने पत्र भेज दिया और प्रतीक्षा करने लगा। पूरे छह सप्ताह तक वह इसी होटल में रहा, कमरे से प्रायः निकलता नहीं था और किसी से मिलता-जुलता नहीं था। रूस से ही नहीं, कहीं से भी कोई उसे कुछ नहीं लिख सकता था; यह स्थिति उसके मन के अनुकूल थी; यदि उसके नाम कोई पत्र आयेगा, तो वह तुरंत समझ लेगा कि यह वही है, जिसकी उसे पल-पल प्रतीक्षा थी। वह सुबह से शाम तक सिर्फ़ पढ़ता रहता था—पत्रिकाएं नहीं, गंभीर पुस्तकें, ऐतिहासिक कृतियां। यह दिन-रात का पढ़ना, यह खामोशी, यह घोंघे जैसा छिपा जीवन—सब उसकी मनोदशा के बिल्कुल अनुकूल था: इतने के लिए भी जेम्मा का कृतज्ञ होना चाहिए! क्या वह जीवित है? उत्तर देगी क्या?

आखिरकार पत्र मिला, अमरीकी डाक-टिकट लगा हुआ, न्यूयार्क से—उसके नाम। लिफ़ाफ़े पर अंग्रेज़ी में पता लिखा हुआ था... उसने उसे पहचाना नहीं, हृदय ऐंठकर रह गया। एकबारगी वह उसे खोलने का साहस भी न कर पाया। उसने हस्ताक्षर देखे: जेम्मा! आंखों में प्रेमसिक्त आंसू उमड़ आये: सिर्फ़ इतनी ही बात

कि उसने बिना कुलनाम के, सिर्फ़ अपने नाम से ही हस्ताक्षर किये थे, मैत्री और क्षमा की आशा दिला रही थी! उसने नीले पन्ने का तह खोला—कोई फ़ोटो फिसलकर गिर पड़ा। उसने जल्दी से उठाया और ठगा सा रह गया: जेम्मा, जीती-जागती जेम्मा, वैसी ही युवा, जैसी वह तीस वर्ष पूर्व थी! वैसी ही आंखें, वैसे ही होंठ, वैसा ही चेहरा! फ़ोटो के पीछे लिखा था: "मेरी बेटी, मरिअन्ना।" पूरा पत्र बहुत स्नेहिल और सरल था। जेम्मा ने सानिन को धन्यवाद दिया कि उसने उसे पत्र लिखने में संकोच नहीं किया, उसका विश्वास किया; उसने यह छिपाया नहीं कि उसके पलायन के ठीक बाद उसने कितने दुखद क्षण काटे थे, लेकिन तुरंत यह भी जोड़ दिया कि वह अब भी यही मानती है—और हमेशा मानती रही है—कि सानिन से मिलना उसके लिए सौभाग्य था, क्योंकि यह मुलाक़ात ही मिस्टर क्लूबेर की पत्नी बनने में बाधक हुई थी—और इस तरह अप्रत्यक्ष रूप से ही सही, वर्तमान पति के साथ उसकी शादी का कारण बनी, जिसके साथ अभी वह कोई अट्ठाईस वर्ष से बिल्कुल खुशहाल जीवन जी रही है—संतोष और समृद्धि में: उनका घर न्यूयार्क में सभी जानते हैं। जेम्मा ने सानिन को लिखा कि उसके पांच बच्चे हैं—चार बेटे और एक अठारह वर्ष की बेटी, अब मंगेतर है, उसी का फ़ोटो उसने भेजा था, क्योंकि सभी कहते हैं कि वह बिल्कुल मां की तरह है। दुखद समाचार जेम्मा ने अंत में लिखे थे। फ़्राऊ लेनोरे का न्यूयार्क में निधन हो गया, जहां वह बेटी-दामाद के साथ रहने आई थी, लेकिन उसे अपने बच्चों को खुशहाल देखने का, नाती-नातिन को गोद खिलाने का सौभाग्य मिल गया; पंतालिओने ने भी अमरीका आने की तैयारी की थी, लेकिन आने के ठीक पहले फ़्रैंकफ़र्ट में ही चल बसा। "और एमीलियो, हमारा प्यारा, अनोखा एमीलियो—सिसली में स्वदेश के लिए वीरगति को प्राप्त हुआ, जहां वह उन "हज़ारों" युवकों के साथ महान गारीबाल्दी के नेतृत्व में गया था; हम सबने अपने अनमोल भाई के लिए बहुत शोक मनाया—लेकिन आंसू बहाने के साथ-साथ हम उस पर गर्व भी कर रहे थे और चिरकाल तक करते रहेंगे, उसकी स्मृति को संजोये रहेंगे! उसकी उदात्त, निस्स्वार्थ आत्मा पूजनीय है!" फिर

जेम्मा ने अफ़सोस प्रगट किया था कि सानिन का जीवन शायद नहीं बन पाया, उसके लिए शान्ति की कामना की, और लिखा कि उससे मिलकर उसे बहुत खुशी होगी, यद्यपि महसूस कर रही है कि ऐसी मुलाकात की कितनी कम संभावना है...

पत्र पढ़ते वक्त सानिन की जो मनोदशा थी, उसका बयान मुमकिन नहीं। ऐसी मनोदशा को व्यक्त करने के लिए कोई संतोषप्रद शब्द नहीं होते: वह किसी भी शब्द से अधिक गंभीर, शक्तिशाली और अनिश्चित होती है। सिर्फ़ संगीत ही उन्हें व्यक्त कर सकता है।

सानिन ने उसी समय उत्तर दे दिया—और मंगेतर के लिए उपहार भी भेज दिया: "मरिअन्ना स्लोकम को एक अज्ञात मित्र की ओर से"—यह था गार्नेट का क्रॉस, अनमोल मोतियों की माला में जड़ा हुआ। यह उपहार यद्यपि बहुत कीमती था, फिर भी इससे वह गरीब नहीं हो गया। फ़्रैंकफ़र्ट में प्रथम आगमन के बाद तीस वर्षों में उसने काफ़ी जायदाद बढ़ा ली थी। मई के आरंभ में वह पीटर्सबर्ग लौट आया—लेकिन अधिक समय के लिए नहीं। बस, यही सुनने में आया है कि वह अपनी सारी जायदाद बेचकर अमरीका जाने की तैयारी कर रहा है।